ओ३म्

गणतंत्र दिवस अंक

जनवरी 2003

पौष–माघ २०५९

समृद्ध,
सजग,
सबल
भारत के
गठन का
संकल्प लें।

अरविन्द मोहन

जनज्ञान

हिन्दी मासिक

आप हमारी सहायता इस प्रकार भी कर सकते हैं

१ परमात्मा की अमरवाणी "चारों वेदों का हिन्दीभाष्य" मूल्य १८०० रु. अभी १२०० रु. में। आदेश के साथ सम्पूर्ण धन १२००रु. भेजकर ३०० रु. का साहित्य उपहार में प्राप्त करें। आज ही वेद भाष्य अपने तथा अधिक से अधिक अपने मित्र परिवारों में लायें। डाक से मंगाने पर १५० रुपये अधिक लगेंगे।

२. वढ़िया पेपर पर छपा चारों वेदों का हिन्दी भाष्य मूल्य ३२०० रु. अभी २२५० रु. में प्राप्त करें। साथ ही ४०० रु. का उत्तम साहित्य भी उपहार में दिया जा रहा है। डाक से मंगाने पर १७० रु. अधिक लगेंगे।

३. विगत पैंतीस वर्षों से लगातार वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न मासिक "जनज्ञान" के सदस्य बनें और अपने मित्रों को बनायें। वार्षिक शुल्क १०० रुपये है। ८०१ रुपये में आजीवन सदस्य बनकर ३००/- रु. का श्रेष्ठ साहित्य भी उपहार में प्राप्त करें।

४. प्रतिमास "जनज्ञान" की कम से कम दस प्रतियां प्रचारार्थ ५०/- रुपये में मंगाकर बांटें तथा "जनज्ञान" मासिक में विज्ञापन देकर हमारे "राष्ट्र जागृति अभियान" में सहयोग प्रदान करें।

५. संस्थान ने बीस से अधिक ट्रैक्ट वेदप्रचार तथा हिन्दू जागरण अभियान को गतिमान बनाने हेतु प्रकाशित किए हैं, जिनकी सूची "जनज्ञान मासिक" में प्रकाशित होती रहती है। अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर बांटें तथा नये संस्करण छापने में सहयोग देकर इस धर्मप्रचार कार्य में हमारे सहयोगी बनें।

६. चारों वेद हिन्दी भाष्य तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थ वैदिक विचारधारा के प्रसार हेतु छापने में अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग प्रदान करें।

७. वेद मन्दिर गौशाला में गौ दान करें तथा गउओं के लिए चारा आदि की व्यवस्था हेतु मुक्तहस्त से दान देकर गौरक्षा अभियान में सहयोगी बनें।

८. महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, वेदमंदिर, इब्राहीमपुर, दिल्ली-३६ में ८ जून २००२ से धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय का शुभारम्भ किया गया है। दयानंद संस्थान के इस जन कल्याणकारी अभियान में मुक्त हस्त से योगदान कृपालु सहयोगियों से अपेक्षित है।

९. वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम दिल्ली-३६ में अपनी ओर से अथवा अपने किसी प्रियजन की स्मृति में कुटिया बनवा सकते हैं। विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें :—

अध्यक्ष-दयानन्द संस्थान

२२८६, आर्य समाज मार्ग, करोलबाग, नई दिल्ली-११०००५ दूरभाष : ५७२४७४१, ५८१५४५७

॥ ओ३म् ॥

जनज्ञान

वेद
ऋक् यजु साम अथर्व

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

हिन्दू राष्ट्र स्थापना हेतु संघर्ष करो

कार्यालय
2286 आर्यसमाज मार्ग, करोलबाग,
नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 5724741, 5815457

प्रधान कार्यालय
वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम
लेखरामनगर (इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर
दिल्ली-36, दूरभाष : 7202249

संस्थापक : स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु:

सम्पादक : पंडिता राकेश रानी
सह-सम्पादक : दिव्या आर्य
वार्षिक शुल्क - 100 रु० आजीवन-801 रु०
एक प्रति - 10 रुपये
विदेश में वार्षिक शुल्क 350 रु.
आजीवन 8001 रु.
जनवरी 2003 वर्ष 37 अंक 9

सम्पादकीय

गणतन्त्र दिवस : आकलन व संकल्प पर्व

२६ जनवरी स्वतन्त्र हिन्दुस्थान के इतिहास की अविस्मरणीय व गौरवमयी तिथि है। स्वतन्त्रता के स्वर्ण विहान के उपरान्त स्वदेश ने अपना संविधान इसी प्रेरक तिथि पर अंगीकार किया था। स्वातन्त्र्य महायज्ञ के ज्ञात-अज्ञात सेनानियों का, अपने देश में अपना संविधान अपनी शासन व्यवस्था का सद् स्वप्न इसी दिन साकार हुआ था। गत वर्ष की घटनाओं का सिंहावलोकन करते हुए हम स्वदेश में विद्यमान स्थितियों का, २००३ की संभावनाओं का आकलन करें तो हमारे समक्ष यह परिदृश्य उभर कर सामने आएगा कि देश को जहां आतंकवाद सरीखी जटिल समस्या से और भी अधिक संकल्प सहित जूझना पड़ेगा, वहीं राष्ट्र के समक्ष सर्वाधिक विवादाग्पद विषय यह बन रहा है कि क्या हमारी राजनीतिक व्यवस्था कोई सर्वसम्मत लक्ष्य या आदर्श है। हालांकि वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में देश की अर्थव्यवस्था और आर्थिक स्थिति को लेकर शंका-कुशंकाओं के सघन, घन और अधिक घनीभूत होने की आशंकाएं भी प्रबल हैं। आर्थिक वैषम्य का दंश स्वदेश झेल रहा है—इस तथ्य से भी हम सभी अवगत हैं कि नौ पंचवर्षीय योजनाओं का 'उपहार' स्वदेश पाकर दसवीं योजना का पा रहा है। परन्तु आर्थिक दृष्टि से सबल और समर्थ भारत के जो सपने इन योजनाओं के विपुल कलेवर में संजोए जाते रहे हैं उनके प्रसंग में 'मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की' उक्ति ही चरितार्थ हो रहा है।

आकलन की इस वेला में इस तथ्य की अनदेखी नहीं की जा सकती कि यह प्रश्न ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण बनकर उभर रहा है कि क्या स्वतन्त्र भारत की राजनीतिक व्यवस्था का कोई सर्वसम्मत लक्ष्य अथवा आदर्श है? इस विवाद के प्रसंग में प्राय: भारतीय संविधान के मूल उद्देश्यों को उद्धृत किया जाता रहा है, जिन्हें संविधान के अनुच्छेदों से पूर्व प्राक्कथन के रूप में स्वराष्ट्र के संविधान निर्माताओं द्वारा

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक व सम्पादक : श्रीमती राकेश रानी 2286 आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-110005 से प्रकाशित एवं डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स 308/4 शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित।

प्रतिष्ठित किया गया था और जिन्हें 'उद्देशिका' की संज्ञा दी गयी है। इस विचारक्रम में यह तथ्य भी स्मरणीय है कि सन् १९५० में संविधान सभा द्वारा स्वीकृत मूल उद्देशिका में 'भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व संपन्न लोकतांत्रिक गणराज्य' का रूप देने का उल्लेख हुआ था। २६ वर्ष पश्चात् अर्थात सन् १९७६ में संविधान में ४२वें संशोधन द्वारा इस उद्देश्य का विस्तार आपातकाल के उस दौर में इस प्रकार कर दिया गया था : 'सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी पंथ निरपेक्ष (सेक्युलर) लोकतंत्रात्मक गणराज्य'। जिन मनीषियों और विचारकों की यह मान्यता रही है कि यह देश सहस्रों वर्षों से हिन्दू राष्ट्र है, उनका यह मत है कि मूल उद्देश्यों में किया गया यह संशोधन राष्ट्र मानस व चिंतन के अनुरूप नहीं है।

इस चिंतन के पक्षधरों के अनुसार गुजरात विधान सभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को मिली प्रचंड विजय से भी यही सोच मुखर हुई है। उनका यह भी मत है कि इस विजय का मुख्य कारण 'हिन्दू राष्ट्र' की कल्पना को साकार करने की आकांक्षा है। इस तथ्य को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता कि विश्व हिन्दू परिषद के प्रमुख नेता श्री प्रवीण तोगड़िया का भी श्री नरेन्द्र मोदी के सक्रिय नेतृत्व में भाजपा को मिली बहुचर्चित सफलता में प्रमुख योगदान रहा है। उन्होंने 'हिन्दुत्व' को ही अपने चुनाव प्रचार का आधार बनाया था।

चुनाव परिणाम आने के उपरांत जब श्री नरेन्द्र मोदी ने मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण की तो भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री वेंकैया नायडू की इस घोषणा को राजनीतिक क्षेत्रों में पर्याप्त महत्व मिला कि गुजरात का प्रयोग २००३ में आयोजित होने वाले विधानसभा चुनावों में भी दोहराया जाएगा। उनकी इस घोषणा से तथाकथित सेक्युलर शिविर में उद्विग्नता का संचार हुआ और उन्होंने श्री नायडू की घोषणा की इस रूप में व्याख्या की कि गुजरात में सांप्रदायिक विभाजन से भारतीय जनता पार्टी को जो राजनीतिक लाभ हुआ है, उसे अब और आगे बढ़ाया जाएगा। तदुपरान्त २००४ में होने वाले लोकसभा निर्वाचन में भी भाजपा की यही रणनीति रहेगी।

भाजपा अध्यक्ष श्री वेंकैया नायडू ने यह भी उद्घोषित किया है कि लोकसभा चुनाव में पार्टी को अपने ही बलबूते पर ३०० स्थान प्राप्त होने की संभावना है। निश्चय ही उनके इस कथन का तात्पर्य यह भी है कि ५४३ निर्वाचित सदस्यों की लोकसभा में भाजपा को अपने भरोसे ही सदन में पूर्ण बहुमत की प्रतीक्षा है। यदि भाजपा अध्यक्ष का यह सपना साकार हो जाता है तो उसे अन्य दलों के साथ गठबंधन करने की आवश्यकता नहीं रहेगी और न ही उसे समक्ष सत्ता के आसन पर पहुँचने में अटकने की स्थिति झेलने तथा अपने एजेन्डा से भटकने की उलझन आएगी। सुस्पष्ट है कि उस स्थिति में भारतीय राजनीति में भाजपा का वर्चस्व भी संसदीय राजनीति में उसी तरह व्याप्त हो जाएगा, जैसे कि एक डेढ़ दशक पूर्व कांग्रेस का था।

किंतु स्थिति का एक अन्य पक्ष निश्चय ही ध्यान देने योग्य है। वह यह कि भारतीय जनता पार्टी का नेतृत्व 'हिन्दुत्व' और 'हिन्दू राष्ट्र' का अंतर स्पष्ट करने की कसरत में उलझ रहा है। इसी कसरत का एक उदाहरण प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी का भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में व्यक्त किया गया यह मत है कि 'हिन्दुत्व चुनाव का मुद्दा नहीं बन सकता।' साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि 'हिन्दुत्व जीवन शैली है, यह हिन्दू बहुल देश है और इस दृष्टि से यह हजारों साल से हिन्दू राष्ट्र है। उन्हें समझ नहीं आता कि इसे हिन्दू राष्ट्र बनाने की बात क्यों की जा रही है?'

अब भारतीय जनता पार्टी की ओर से 'हिन्दुत्व' के स्थान पर 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' का उद्घोष किया जा रहा है। भाजपा के इस उद्घोष को अनेक राजनीतिक समीक्षक केन्द्रीय मन्त्रिमंडल में शामिल गैर-भाजपा सदस्यों को शासन के दायित्वों में पार्टी की सहायता जारी रखने के लिए सहारा देना मान रहे हैं। इन शाब्दिक व्याख्याओं से भाजपा के चिंतन में असमंजस की झलक ही मिल रही है।

जबकि विद्यमान राजनीतिक परिदृश्य से यह सुस्पष्ट है कि अब यह देश विचारधाराओं के आधार पर प्रतिद्वन्द्विता की ओर बढ़ रहा है। इस प्रतिद्वन्द्विता में कौन बाजी मारता है, उसका एक प्रमाण मेघालय, हिमाचल प्रदेश, नगालैंड, त्रिपुरा, मिजोरम, दिल्ली, राजस्थान और मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में होने वाले चुनावों के परिणामों से समक्ष आ पाएगा। इनमें से अंतिम तीन राज्यों की विधानसभाओं का कार्यकाल नियमानुसार २००४ में समाप्त होना है, परन्तु यह अटकलें भी सर्वथा निराधार नहीं कि

इस अंक में पढ़ें

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो।)

सम्पादकीय	१	स्वतंत्रता प्राप्ति में आर्यसमाज का योगदान - *आर्य श्यामनारायण लाल*	२५
सामयिक-विचार—नफरत की हार	४	भारतीय गणराज्य के रोग : भोग रहे... - *डॉ. देवर्षि शर्मा*	२८
महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी	५	विदेशी कितने देश के हित में? -*डॉ. हेमेन्द्रकुमार*	३०
आपके पत्र	६	हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय-चिंतन -*डॉ. श्यामसिंह शशि (पद्मश्री)*	३४
वैदिक-दर्शन—ज्ञान एवं विज्ञान से ..... - *स्वामी रामस्वरूप (योगाचार्य)*	८	मैं ईश्वरवादी और आशावादी हूं - *अटलबिहारी वाजपेयी*	३६
सञ्जीवनी सूक्त -*ब्र. सुमेधा आर्य*	१०	हिन्दुत्व प्राण है तो हिन्दुसमाज .... - *देवेन्द्र स्वरूप*	३७
वैदिक-चिन्तन—वैदिक संस्कृति का महत्त्व (५) -*आर्य धर्मादित्य*	११	कहानी-शल्य चिकित्सा -*शरण*	४३
भारतीय नववर्ष बनाम-विदेशी..... -*राजेश बरनवाल*	१४	पुस्तक-समीक्षा—मिट्टी से जुड़ी भावनाओं... -*डॉ. हरीसिंहपाल*	४६
क्रांतिवीर सुभाषचन्द्र बोस -*रामबिहारी विश्वकर्मा*	१५	गौमूत्र के चमत्कार -*वैद्य हरिमोहन शर्मा (रा.प.)*	४७
महान क्रांतिकारी : रासबिहारी बोस - *उदयनारायण सिंह*	१७	इस्लामी आतंकवाद का मूल कहाँ? -*वी.पी. भाटिया*	४८
भारत गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति .... -*ओ.प्र. पण्डित*	२०	महिला-जगत—परिवार की आय बढ़ाइए -*अशोक मूलवानी*	५०
भारत गणराज्य के वर्तमान राष्ट्रपति.... -*डा. इन्द्र सँगर*	२२	समाचार—दर्शन....	५४

वहां भी अन्य प्रदेशों के साथ ही चुनाव कराए जा सकते हैं। इनमें केन्द्रीय सिंहासन की दृष्टि से जो राज्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण है वे हैं : राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ तथा दिल्ली और हिमाचल प्रदेश। इन सभी राज्यों में मुख्य टकराव भाजपा और कांग्रेस के बीच ही होना है।

काल चक्र के प्रवाह ने 'हिन्दुत्व' को राजनीतिक मंच पर शिखर पर ला दिया है। उसे राष्ट्र के समुज्ज्वल भविष्य के अरुणोदय की दिशा में प्रथम किरण माना जा सकता है। हिन्दुत्व एक जीवन शैली है तो सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को एक आध्यात्मिक अवधारणा तथा भारतीयता के वैशिष्ट्य की संज्ञा भी दी जा सकती है। वैदिक चिंतन अथवा हिन्दुत्व के पक्षधरों को सामान्य जन को इस सत्य से अवगत कराने के लिए प्राण प्रण सहित जुटना होगा कि हिन्दुत्व ही इस राष्ट्र की संजीवनी शक्ति है और उस राष्ट्रभाव की प्राण वायु है जिसमें विग्रह और अशांति के लिए कोई स्थान नहीं है।

हिन्दुत्व के व्याख्याकार स्वातन्त्र्य वीर सावरकर ने विस्तार सहित इसे अभिव्यक्त किया था। इस तथ्य को भी सुस्पष्ट करना होगा कि विग्रह और अशांति के मार्ग कदापि सर्वकल्याणकारी चिंतन को जन्म एवं समर्थन नहीं दे पाते। भारतीय मनीषा जिस विशुद्ध राष्ट्रवाद के प्रति आस्थावान रही है, उसका लक्ष्य है सर्वहित, सर्वकल्याण और सर्वे भवन्तु सुखिनः। जबकि सभी सुखी हों की चर्चा है तो अन्य संस्कृतियों में भी। ईसाइयत और इस्लाम भी यही कहते हैं किंतु ये पंथ अथवा मजहब समाज के उसी अंश के सुख की बात करते हैं, जिनकी इन पंथों व मजहबों में आस्था है। जबकि वैदिक चिंतन, हिन्दुत्व अथवा भारतीयता में सर्व कल्याण का जो भाव है वह जड़ चेतन सब पर समान रूप से लागू होता है और किन्हीं विशेष आस्थावानों तक यह सीमित तो है ही नहीं मानव मात्र तक भी सीमित नहीं है।

भारतीय मनीषा का उद्घोष है—पर्वत भी सुखी हों, सरिताएं भी सुखी हों, वृक्ष व लतिकाएं भी सुखी हों, हर वनस्पति शांति को प्राप्त करें — जलचर और थलचर सभी सुख तथा शांति प्राप्त करें। सृष्टि की सारी व्यवस्था कुछ ऐसी ही होनी चाहिए। इस सर्वकल्याणी संस्कृति के प्रति श्रद्धा भाव को ही राष्ट्रभाव की संज्ञा मिली है। इस संस्कृति के प्रति समर्पण का भाव ही हिन्दुत्व का पर्याय है। इस चिंतन के प्रति भाजपा के नेतृत्व में आस्था जगाने के लिए भी वैदिक चिंतन के अनुरक्त जन को सशक्त अभियान चलाना होगा।

इस दर्शन के सार तत्व का अग-जग को दर्शन कराने का सद् संकल्प हम गणराज्य के पावन पर्व पर ग्रहण कर कर्मक्षेत्र में अवतरित हों। उसी से राष्ट्र के जन-गण में 'इदन्न मम' का भाव प्रबल होगा—जिससे समाज वैषम्य, असमानता आदि से मुक्त होकर विश्व की विभ्रान्त मानवता का पथ प्रदर्शन करने में समर्थ सिद्ध हो सकेगा। ०००

सामयिक–विचार

नफरत की हार

गुजरात चुनाव परिणाम का एक संदेश साफ है कि जनता ने नफरतवादियों को धूल चटाई। गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी के विरुद्ध व्यक्तिगत रुप से और हिन्दुत्वनिष्ठ संगठनों एवं उनके समर्थकों के प्रति व्यापक रुप से विभिन्न छद्म सेकुलर शक्ति केन्द्रों ने नफरत की आग भड़काने की कोशिश की थी। उसे मुंह की खानी पड़ी। गुजरात में नफरत हारी और राष्ट्रप्रेम जीता।

यही समय है जब नफरत के व्यापारियों को बेनकाब किया जाए। कोई साफ नीयत से किसी विचार या संगठन की आलोचना करे तो उसका स्वागत ही किया जाना चाहिए। मगर यदि आलोचना का स्वर तेजाबी निंदा का बन जाए और उसके पीछे उद्देश्य किन्हीं वास्तविक गलतियों की ओर इंगित करना न हो बल्कि वैचारिक पूर्वाग्रह से जन्मी कुटिलता से और सोच-समझ कर योजनाबद्ध तरीके से सत्य को छिपाते हुए केवल प्रहार करने का हो और इसी उद्देश्य से नफरत अभियान छेड़ा जाए तो जिनके विरुद्ध यह नफरत फैलाई जाती है उन्हें उसका प्रतिकार करने का भी अधिकार है। जो लोग कभी इस्लामी जिहादियों के हाथों बर्बरतापूर्वक मारे जाने वाले हिन्दुओं के दुख पर कोई 'बचाव समिति' नहीं बनाते, जो लोग कभी भारत की रक्षा हेतु अपने कर्तव्य का निर्वाह करने वाले सुरक्षाकर्मियों के बलिदान पर दो पंक्तियां नहीं लिखते और न ही उनके परिजनों के दुख में शामिल होते हैं, वे लोग अचानक उन आतंकवादी गिरोहों की रक्षा में खड़े हो जाते हैं जिन्हें इस देश के न्यायतंत्र के अन्तर्गत अपराधी ठहराया जाता है। ये लोग खुद को जांचकर्ता भी मानते हैं और न्यायाधीश सब गलत साबित हो जाते हैं यदि फैसला वह न हो जो इन्होंने पहले से ही अपने मन में निर्धारित किया होता है। ये लोग दिल्ली में बैठकर गोधरा की भी जांच कर लेते हैं और संसद पर हमले में जिलानी का हाथ नहीं था-इसकी भी पुष्टि कर लेते हैं। कभी आपने सुना है कि इ. दानवाधिकारवादियों ने कभी अक्षरधाम और रघुनाथ मंदिर पर हुए हमले की निंदा की हो? यही कारण है कि ये लोग भारत की अपेक्षा पाकिस्तान में ज्यादा लोकप्रिय होते हैं और आतंकवादी संगठन इन्हें अपना सगा मानते हैं। गुजरात के चुनाव ने इन्हीं लोगों को हराया है। बाकी देश भी इन्हें हराएगा।

वित्तीय घाटे से आगे की सोचें

आमदनी अठन्नी खर्चा रुपैया! और खर्चा तो करना ही पड़ेगा, तब रुपया कहां से आएगा? नोट छाप लेंगे और जितने नोट छापेंगे उतना ही वित्तीय घाटा बढ़ेगा। इस समय हमारा वित्तीय घाटा १,३४,५२४ करोड़ रुपए है। क्या इसे आर्थिक संकट माना जाए? चिंता की रेखा उभर आती है। लेकिन हमें वित्तीय घाटे के आंकड़े से घबराने की बजाय ध्यान इस बात पर देना चाहिए कि वित्तीय घाटा क्यों दिखाया जाता है। यदि उत्पादक खर्चों को बढ़ाने के लिए सरकार नोट छापे तो इसमें कोई बुराई नहीं, लेकिन ध्यान इस पर देना होगा कि इन छापे गए नोटों को किस मद पर खर्च किया जा रहा है। यदि वह इस राशि को बांध, सड़क, दूरसंचार या अन्य ढांचागत विकास के मदों में खर्च किया जाए तो वित्तीय घाटे से देश को नुकसान नहीं होगा।

९० के दशक में वित्तीय घाटे का आंकड़ा वर्तमान की भांति ही था लेकिन उस दौर में निजी निवेश बहुत तेजी से हुआ। पिछले दस साल में वित्तीय घाटे का आंकड़ा ५.५ से ७ प्रतिशत के बीच रहा है। अब वित्तीय घाटे होने के बावजूद निजी निवेश में गिरावट आना चिंता की बात है। यदि हम वित्तीय घाटे को सरकारी कर्मचारियों का वेतन देने, ब्याज चुकाने आदि में खर्च करेंगे तो देश को वास्तव में घाटा होगा। वैसे वित्तीय घाटे को नियंत्रित करना जादू की छड़ी घुमाने जैसा नहीं है। अनेक देशों के उदाहरण हमारे सामने हैं कि जब उन्होंने वित्तीय घाटा कम किया, तो उसके साथ निजी निवेश में गिरावट आयी और नुकसान हुआ। हमें निजी निवेश पर ध्यान देना चाहिए, भले ही वित्तीय घाटा बढ़े। निवेशक को हमें बुनियादी ढांचागत सुविधाएं देनी चाहिएं।

वित्तीय घाटे की चिंता करने की बजाय सरकार को उस मूल खतरे को, उस दबाव को पहचानना होगा जो पश्चिम से हमारे सामने आ रहा है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष आदि पश्चिमी संस्थाओं की पूरी कोशिश है कि भारत को वित्तीय घाटे का मंत्र पढ़ाकर हमारी सरकार के उत्पादक खर्चों को कम कर दिया जाए। ये संस्थाएं चाहती हैं कि विकासशील देश अपने धन से विकास न करें, इसलिए उनका दबाव रहता है कि ये देश अपना वित्तीय घाटा नियंत्रित करें, उनका अपना निवेश कम हो और उनकी अर्थव्यवस्था में हस्तक्षेप का मौका मिले, वे दूसरों पर निर्भर हो जाएं और विदेशी निवेशकों के पीछे भागें। हमें इस दुष्चक्र की काट करनी होगी।

(पांचजन्य २९ दिसम्बर, २००२ से साभार)

महात्मा वेदभिक्षुः की अमर वाणी

हिमालय से टकराने को मन करता है

सच में यह है कि असत्य का तूफान और अधर्म की आंधी हिमालय सी शक्ति धारण कर अभिमान से सिर उठाए खड़ी है। समय के प्रवाह ने बड़ों-बड़ों को पागल बना दिया है। सारी परिभाषाएं बदलती जा रही हैं। युग की मान्यताओं में परिवर्तन आते जा रहे हैं। अधर्म धर्म के नाम पर फैलता जा रहा है। कभी-कभी तो अनुभव होता है कि कहीं वह समय न आ जाए कि हम असत्य को ही सत्य और सत्य को असत्य समझने लग जाएं।

अधर्म की शक्ति देखकर बड़े-बड़ों ने घुटने टेक दिए हैं। सभी हार मानकर युग के साथ बहने की तैयारी कर रहे हैं। किन्तु यह सब कुछ देखकर भी हम पीछे हटने को तैयार नहीं, हमारा तो हिमालय से टकराने को ही मन करता है।

मन करता है कि हम इस अधर्म के हिमालय की हस्ती मिटा दें। मस्ती से झूमते हुए सत्य का संबल लेकर बढ़ें और पापों के तूफान को चकनाचूर कर दें। बदलती हुई दुनियां के साथ बदलने को हमारा मन नहीं करता, हम तो अपने को मिटा कर भी दुनियां को अपनी दुनियां बनाना चाहते हैं।

रिश्वत, सिफारिश, झूठ, धोखे और जालसाजी के वातावरण में भी हमारा सिर झुका नहीं, किसी प्रभु के पुत्र का सिर झुक भी नहीं सकता। इसलिए हम प्रभु पुत्रों को आवाज लगाकर कहते हैं। कि वे जहां भी हों इकट्ठे हो जाएं और आर्य सेना सजाकर शैतान को मिटाने के लिए युद्ध का बिगुल बजाएं।

जीवन की बहार आएगी और जाएगी, जिन्दगी गीत गाएगी और मुस्कराएगी पर अगर पाप की आग जलती रही तो हर घर शमशान बन जाएगा। दुल्हन का सुहाग बसने से पहले ही उजड़ा नजर आएगा। मरघट को ढूंढने कहीं भी जाने की आवश्यकता कोई अनुभव नहीं करेगा..... हर द्वार पर मरघट नजर आएगा यदि पाप इसी तरह फैलता रहा और धर्म उजड़ता रहा।

हमारी नजर में तो शहादत का जाम पीने का वक्त आज आ गया है और वे नौजवान जिनकी रगों में पानी नहीं खून बहता हो और जिन्होंने अपनी मां के दूध का मोल चुकाने के बारे में कभी सोचा हो वे आज कमर कसकर सर पर कफन बांध तैयार हो जायें और अधर्म-पाप अज्ञान पर इतने जोरों से हमला करें कि दुनिया के किसी भी कोने में उन्हें शरण भी न मिल सके।

अकेले चलना और अकेले लड़ना बहुत मुश्किल काम होता है, पर अभी तो हम लड़ रहे हैं। और जिन्दगी की आखरी सांस तक लड़ते रहेंगे, पर एक इच्छा है कि एक सेना खड़ी हो जाए जो कम से कम भारत की पवित्र भूमि को तो पवित्र बना दे।

इन पंक्तियों को पढ़ने वालों में से कौन तैयार है हमारा साथ देने को और हिमालय से टकराने को॥

(भारतेन्द्रनाथ) महात्मा वेदभिक्षुः

(नवम्बर १९७३ जनज्ञान मासिक से)

संगठन-सूक्त

संगठन ही शक्ति है, विघटन मृत्यु है, इसलिए आओ, सारे विवाद, स्वार्थ जलाकर सब एकता की डोर में बंध जाएं।

हमारा लक्ष्य एक हो, हमारा कर्म एक हो, मंजिल एक हो, मार्ग एक हो, तो फिर धरती पर कौन हमारे समक्ष होगा।

स्वार्थ हम सभी का है, ऋषि दयानन्द का काम, इस स्वार्थ के लिए हमारा संघर्ष हो, विजय हमारी वन्दना करेगी।

ग्रामों तक पहुंचो, घरों में पहुंचो और जला दो वह सब कुछ, जो हानिप्रद है, अधर्म है, पाप है।

आत्मा को ज्योतिर्मय बनाओ, प्राणों को दीप्त करो संध्या से, प्रभु मिलन से शक्ति प्राप्त कर नयी परंपराएं स्थापित करो। ०००

आपके-पत्र

स्वदेशी का प्रथम उद्घोषक कौन?

माननीया, पराधीन भारत में स्वदेशी का आन्दोलन किसने प्रारम्भ किया था, इस सम्बन्ध में कोई एक सर्वमान्य धारणा हमारे देश में नहीं है। देश में इस विषय में चार तरह की धारणायें व्याप्त हैं :—कतिपय लोग इसका श्रेय महात्मा गांधी को देते हैं तो दूसरे लोगों का मानना है कि सन् १९०५ ई. में तत्कालीन बंगाल के विभाजन के फलस्वरूप अंग्रेजों के खिलाफ स्वदेश में स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। तो तीसरे मत के हिन्दी प्रेमी लोग आधुनिक हिन्दी गद्य के उन्नायक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को इसका श्रेय देते हैं तो चौथे मत के लोग ऐसा मानते हैं कि आर्यसमाज के संस्थापक और नवजागरण के पुरोधा स्वामी दयानन्द ने ही सर्वप्रथम स्वदेशी का उद्घोष किया था। तर्क की कसौटी पर सत्यान्वेषण करें कि उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर सच क्या है?

भारतीय राजनीति में महात्मा गांधी का प्रवेश सन् १९१५ ई. के बाद हुआ जब वे अफ्रीका से भारत में आये, इसके पूर्व सन् १९०५ में वंग भंग आन्दोलन के फलस्वरूप स्वदेशी का आन्दोलन भारत में जोर पकड़ चुका था। जहां हिन्दी गद्य को नयी दिशा प्रदान करने वाले भारतेन्दु जी ने २३ मार्च १८७४ ई. को कवि वचन सुधा में स्वदेशी वस्त्र का उपयोग करने का आह्वान किया था। वहाँ सन् १८७४ ई. में ही स्वामी दयानंद ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण में स्वदेशी और स्वराज्य विषयक अपने विचारों का खुलकर प्रतिपादन किया है। ऐसी स्थिति में प्रश्न यह उठता है कि स्वदेशी का प्रथम उद्घोषक कौन था?

मेरे विचार से इस विषय पर हमें बहुत अधिक कुतर्कों के जाल में नहीं फंसना चाहिये। वस्तुतः स्वामी दयानंद (१८२४-१८८३) और भारतेन्दु जी (१८५०-१८८५) दोनों ही समकालीन महापुरुष थे। इसमें भी कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि उक्त दोनों समकालीन महापुरुषों का स्वदेशी के विषय में विचार भी एक ही तरह का था। तथ्यों के आलोक में स्वामी दयानंद और भारतेन्दु जी दोनों को ही स्वदेशी के प्रथम उद्घोषकों में हमें मानना चाहिए और स्वदेशी आन्दोलन की चर्चा करते समय विद्वानों और लेखकों को चाहिये कि वे सभी महापुरुषों को यथेष्ठ सम्मान देते हुए अन्य लोगों को पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर स्वस्थ दृष्टि का परिचय देते हुए वस्तुस्थिति से परिचित करायें।

दयाराम पाहार, आर्यप्रतिनिधि सभा, राँची

हिन्दुत्व का विजय अभियान शुरू

महोदया, गुजरात विधानसभा चुनावों में सभी सर्वेक्षणों, पूर्वानुमानों को धता बताकर जिस तरह से भारतीय जनता पार्टी ने दो तिहाई से ज्यादा बहुमत प्राप्त किया है वह मात्र भाजपा की जीत नहीं वरन यह हिन्दुत्व की विजय है। गोधरा के अमानुषिक कृत्य के बाद प्रतिकार का जिस तरह से छद्म धर्मनिरपेक्ष दलों व नेताओं ने विरोध किया, एवं अल्पसंख्यक तुष्टिकरण किया उस कदम को गुजरात की हिन्दू जनता ने करारा जवाब दिया है। हिन्दुत्व के विषय को श्री नरेन्द्र मोदी ने उठाकर इस चुनाव को राष्ट्रवाद बनाम, छद्म धर्मनिरपेक्षता का मुकाबला बताया वह वर्तमान की आवश्यकता है। हिन्दुत्व की विचारधारा एवं हिन्दुओं के अग्रणी संगठनों का अंश विरोध करने वाले एवं मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति अपनाने वाले नेताओं को अब यह समझ लेना चाहिये कि इस राष्ट्र को नई दिशा हिन्दुत्व ही प्रदान कर सकता है। आनेवाला समय उन्हीं का होगा जो हिन्दुत्व एवं राष्ट्र की बात करेगा।

नरेश कुमार जे. नन्दवाना नाडोल, पाली (राज.)

जम्मू-कश्मीर राज्य विभाजन की मांग

माननीया, जब से जम्मू कश्मीर राज्य को ३ भागों में विभक्त कर कश्मीर घाटी, जम्मू डिवीजन तथा लद्दाख को अलग-अलग राज्य बनाने की मांग बढ़ी है, डॉ. फारुख अब्दुल्ला आदि इसे सांप्रदायिक मांग कहकर जम्मू कश्मीर की एकता की दुहाई देते रहे हैं। ऐसा प्रचार किया जा रहा है कि जम्मू एवं लद्दाख को कश्मीर से अलग करने की मांग साम्प्रदायिकता से प्रेरित है। किन्तु वास्तविकता ठीक इसके विपरीत है। जम्मू कश्मीर को मुस्लिम तुष्टीकरण के कारण ही संविधान में धारा ३७० द्वारा विशेष दर्जा दिया गया। यदि जम्मू कश्मीर में मुस्लिम अल्पमत में होते और शेख अब्दुल्ला की बजाए पं. प्रेमनाथ डोगरा अथवा कोई अन्य हिन्दू मुख्यमंत्री बनता तो धारा ३७० लागू न की जाती। मुस्लिम तुष्टीकरण के कारण ही जम्मू कश्मीर राज्य को अत्यधिक धन आवंटित किया जाता रहा। पिछले ५० वर्षों में ९५ हजार करोड़ रुपये से अधिक जो धन जम्मू कश्मीर को दिया गया उससे वहां आतंकवाद ही पनपा। अलगाववाद की विष बेल को भारतीय धन से सींचा जा रहा। जिहादी उन्माद इतना अधिक बढ़ाया गया कि लाखों कश्मीरी निजामे मुस्तफा (मुस्लिम राज्य) स्थापित करने के नारे लगाते हुए शताब्दियों के साथ रहने

वाले कश्मीरी हिन्दुओं पर आक्रमण करने लगे। सामूहिक बलात्कार तथा घिनौने अत्याचार करने लगे। जिससे कश्मीरी हिन्दू अपने जान माल तथा बहू बेटियों की इज्जत बचाने के लिये अपने घर-बार दुकानें जायदाद छोड़ पलायन करने पर विवश हो गये।

कश्मीर को हिन्दू रहित करने के उपरान्त जम्मू डिवीजन और लद्दाख को मुस्लिम बहुल बनाने की योजनाएं चल रही हैं ताकि समूचे प्रदेश में इस्लामी आतंकवाद पूर्ण रूप से छा जाये। लद्दाख के लामा भिक्षुओं को मारा गया, बौद्ध लड़कियों से कश्मीरी मुस्लिमों की शादियां कराई गयीं जिससे लद्दाख के बौद्ध समाज का अस्तित्व खतरे में पड़ता जा रहा है। इसी प्रकार जम्मू में अनेक नरसंहारों द्वारा हिन्दुओं को पलायन पर विवश किया जा रहा है। और अनेक स्थानों पर मुस्लिम बस्तियां बनाई जा रही हैं। कश्मीरी आतंकवादी जम्मू के क्षेत्रों में घुस कर हिन्दुओं का शिकार करते हैं और सैनिकों पर आक्रमण करते हैं।

कश्मीर में कट्टरपंथी इस्लामी सांप्रदायिकता का नंगा नाच चल रहा है। इस भारत विरोधी सांप्रदायिकता के सशस्त्र आक्रमणों की मार से भारत भक्त जम्मू तथा लद्दाख की रक्षा बहुत आवश्यक हो गयी है। यदि तुरन्त आवश्यक पग नहीं उठाये जाते तो समय हाथ से निकल जायेगा। कश्मीरी उग्रवाद का यह अजगर जम्मू और लद्दाख को भी निगल जायेगा। —डॉ. कैलाश चन्द्र, जम्मू

लद्दाख बचाओ मोर्चा, ३३१, सुनहरी बाग अपार्टमेंट, रोहिणी, सैक्ट-१३, दिल्ली- ८५

सत्य प्रचारक मंच

मान्यवर, सत्य प्रचारक मंच के तत्त्वावधान में डॉ. कृष्ण लाल, पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में उच्च कोटि के संस्कृत विद्वानों की एक गोष्ठी हुई जिसमें निम्न विषयों पर विचार हुआ।

१. वेदों में गोमांस भक्षण का पाया जाना। २. यज्ञों में पशुबलि एवं आदिकाल में आर्यों की पूजा विधि। ३. वेदों की उत्पत्ति तथा आर्यों का आदिकाल आदि-आदि।

जनज्ञान के माध्यम द्वारा आर्य विचारकों से हमारी प्रार्थना है कि कृपया बताएं निम्न किस प्रकार की सूचियों में उनका नाम अंकित किया जाए।

१. समाचार पत्रों में लिखने (अंग्रेजी/हिन्दी/अन्य भाषाएं) २. विभिन्न सामग्री लिखित रूप से भेजने। ३. रेडियो/दूरदर्शन पर परिचर्चा करने (अंग्रेजी/हिन्दी/अन्यभाषाएं) ४. शास्त्रार्थ में भाग लेना। निम्न पते पर जानकारी दें। —अरुण प्रकाश वर्मा, संयोजक,

सत्य प्रचार मंच, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

जनज्ञान मासिक विज्ञापन दरें

जनज्ञान में विज्ञापन दें सहयोग का हाथ बढ़ाएं।
देश-विदेश में अपने प्रतिष्ठान का नाम गुंजाएं॥

अंतिम कवर पृष्ठ	५००० रुपए
कवर पृष्ठ दो व तीन	४००० रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ	२५०० रुपए
आधा पृष्ठ	१५०० रुपए
चौथाई पृष्ठ	७५० रुपए

बैंक ड्राफ्ट तथा मनीऑर्डर 'जनज्ञान' नई दिल्ली के नाम भिजवाएं। दिल्ली के किसी भी बैंक का चैक भी भेज सकते हैं।

संपर्क सूत्र

विज्ञापन व्यवस्थापक

जनज्ञान मासिक

२२८६ आर्यसमाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-५ दूरभाष : ५७२४७४१, ५८१५४५७

वैदिक-दर्शन

ज्ञान एवं विज्ञान से ओत-प्रोत हैं चारों वेद

—स्वामी रामस्वरूप (योगाचार्य)

वर्तमान में प्रायः वेदों की भाषा को कठिन कहा जाने लगा है। इस विषय में जर्मन के विद्वान जो वेदों के ज्ञाता हुए हैं उन्होंने भी यही लिखा है कि वेदों की भाषा भारतीयों के लिए भी उतनी ही कठिन है जितनी विदेशियों के लिए।" कोई विदेशी ऐसा कहे तो आश्चर्य की कोई बात नहीं क्योंकि उसने अपने देश की भाषा के साथ संस्कृत भाषा एवं वेद-विद्या का अध्ययन किया।

वेदों में कहा है कि तत्त्व ज्ञान सृष्टि रचना से लगा कर आज तक वैज्ञानिकों ने जो-जो खोज की सदा उनके अनुरूप रहा है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक फ्रिथ जोफ कोर्पे ने अपनी 'ताओ आव् फिजिक्स' नामक पुस्तक (१९७९) में इसी बात को पूर्ण रूप से स्वीकार किया है कि वैदिक तत्त्व ज्ञान बीसवीं सदी के विज्ञान के अनुकूल है। ऋग्वेद में ज्ञान कांड अर्थात् विस्तृत पदार्थ विद्या, यजुर्वेद में कर्मकांड अर्थात् शुभ-अशुभ, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, कर्मों का संपूर्ण वर्णन, समावेद में ईश्वर उपासना तथा अथर्ववेद में तीनों वेदों की सिद्धि, औषधि वर्णन एवं अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। वस्तुतः चारों वेदों में थोड़े-थोड़े सभी विषय हैं, परंतु प्रत्येक वेद ऊपर कहे अपने विशेष विषयों सहित तृण से लेकर ब्रह्म तक का ज्ञान एवं विज्ञान मानव कल्याणार्थ प्रदान करता है। संसार के सभी ग्रंथों में भी जो-जो सत्य ज्ञान है वह सब प्रथम ही वेदों में सुलभ है परंतु भौतिक एवं आध्यात्मिकवाद सहित वैज्ञानिक स्तर के ज्ञान की जो-जो जानकारी वेदों में है उसकी खोज करना अभी भी शेष है।

हमें याद रखना चाहिए कि संसार की प्रत्येक भाषा एवं शिक्षा कठिन हो सकती है परंतु मां की भाषा एवं शिक्षा जैसी सरलतम एवं ज्ञान व प्रेम के रस से भरी हुई अन्य कोई विद्या नहीं हो सकती। संस्कृत हमारी मातृभाषा है, इसे कठिन कहना स्वयं की संस्कृति पर कुठाराघात होगा। विदेशियों के वेद के प्रति अध्ययन एवं प्रेम को देख कर यास्क मुनि कृत शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ में कही कश्यप ऋषि की सत्य कथा अनायास ही स्मरण हो आती है। यह भी दुःख की बात है कि आज प्रायः ऋषि शब्द का वास्तविक अर्थ समझना दुर्लभ-सा हो गया है। निरुक्त ग्रंथ ७/३ में कहा कि ऋषि लोग गूढ़ और अल्प अभिप्राय युक्त मंत्रों के अर्थ को यथावत जानने वाले, घोर तप, योगाभ्यास तथा स्वाध्यायशील होने के कारण उनकी मंत्रों में दृष्टि होती थी, ऐसे ही महान कश्यप ऋषि जब वेदाध्ययन करते हुए सौ वर्ष की आयु को प्राप्त हुए तब अचानक उन्हें अपनी मृत्यु का बोध हुआ। मातृभाषा में कहे वेद-ज्ञान के आनंद में डूब ऋषि अभी अध्ययन से तृप्त नहीं हुए वे वह अपने अंतःकरण में बहते परमानंद देने वाली विद्या केइस समुद्र में और अधिक डूबना चाहते थे। अतः उन्होंने योग समाधि में लीन होकर परमात्मा से प्रार्थना की कि हे प्रभु! मैं अभी वेदाध्ययन से तृप्त नहीं हुआ हूँ, मुझे कृपया सौ वर्ष की और आयु प्रदान करें।

इस प्रार्थना पर ऋषि की आयु सौ वर्ष से अधिक होकर दो सौ वर्ष की हो गई। ऋषि पुनः दुगुने उत्साह से वेदाध्ययन मेंलिप्त हो दिन-प्रतिदिन गहन आनंद में डूबते गए। सहसा उन्हें बोध हुआ कि उनकी आयु केदो सौ वर्ष बीत चुके हैं। मृत्यु से पहले ही ऋषि ने पुनः ईश्वर से याचना की कि उन्हें सौ वर्ष की आयु और दान की जाए, क्योंकि वह अभी भी पूर्णतः वेदाध्ययन से तृप्त नहीं हुए हैं। इस प्रार्थना पर उनकी आयु सौ वर्ष अधिक होकर तीन सौ वर्ष की हो गई। अब कश्यप ऋषि तिगुने उत्साह से दिन-रात वेदाध्ययन में पूर्णत लीन हो गए। ज्ञान-विज्ञान एवं आनंद में डूबे अध्ययन में लीन रहे और देखते ही देखते सौ वर्ष की अवधि पुनः बीत गई। मृत्यु का बोध होते ही ऋषि जागृत हुए। अध्ययन टूटा, परतु अत्यंत आश्चर्यचकित होकर परमेश्वर से प्रार्थनापूर्वक कहने लगे कि हे प्रभु! मैंने तीन सौ वर्ष तक वेदों का घोर अध्ययन किया, अर्थ, धर्म, काम एवं मोक्ष की सिद्धि प्राप्त की परंतु मैं अभी तक न तो तृप्त हुआ और न ही पूर्णतः इनका भेद जान पाया और अनन्ताः वै वेदाः अर्थात् वेद अनंत हैं ऐसा कह कर उन्होंने शरीर छोड़ दिया। (टिप्पणी—यजुर्वेद अ. तीन मं. ६२ में चार सौ वर्ष तक की आयु का विधान है। इससे अधिक नहीं)

अतः ऋषे ऐसी-ऐसी जीवन में घटने वाली घटनाओं से ही हमें यह संदेश दे गए हैं कि ईश्वरीय वाणी वेद ईश्वर की तरह ही अनंत महिमा वाले हैं।

चारों वेद ज्ञान व विज्ञान से ओत-प्रोत हैं। यजुर्वेद

अ. १८ मंत्र २४ एवं २५ में अंक तथा बीज गणित की शिक्षा है। पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर घूमना एवं सूर्य का भी विंदु के चारों ओर घूमना सामवेद मं. ६२९ से ६३१ में सिद्ध है। इनमें यह भी कहा है कि सूर्य पृथ्वी से वड़ा है।

यजुर्वेद मंत्र ३/६ में भूमि को सूर्य के चारों ओर घूमते हुए तथा सव लोकों को अपनी-अपनी परिधि में अंतरिक्ष के वीच सदा घूमते हुए कहा हे। यजुर्वेद में ज्ञान मिलता है कि इस अंतरिक्ष में पृथ्वी, पृथ्वी के समीप चंद्रमा, एक-दूसरे के समीप नक्षत्र और सव के वीच में सूर्य लोक हैं। ऋग्वेद मंडल ८ सूक्त ७७ के चौथे मंत्र में वड़ी सूक्ष्म विज्ञान युक्त बात कही है कि सूर्य अपनी एक ही किरण से जल के तीसियों सरोवरों को एक साथ पी जाता है अर्थात खाली कर देता है।

यही खाली हुआ जल समय पर वर्षा द्वारा पृथ्वी पर वरसता है एवं मानव को जीवन देता है। यजुर्वेद अ. ५ मंत्र एक से नौ तक में ईश्वर ने विश्व में तीन प्रकार की अग्नियों का ज्ञान दिया है। १. अंतरिक्ष में विद्युत रूपी अग्नि, पृथ्वी पर अंगारे के रूप में स्थूल अग्नि एवं द्युलोक में सूर्यरूपी अग्नि, जिनका प्रयोग भिन्न-भिन्न प्रकार से मानव जीवन के हित में कहा है। यजुर्वेद मंत्र २/१७ में भी कहा कि ईश्वर ने प्रकाश, ताप और वेगादि गुण वाले जगत में मूर्तिमान पदार्थों को प्राप्त होने वाला अग्नि रचा है। ऋग्वेद मंत्र १/३२/१-२ में सूर्य द्वारा वर्षा होना सिद्ध किया है। सूर्य वादलों में स्थित पानी को अपनी तीक्ष्ण किरणों द्वारा वरसाता है और नदी तथा समुद्र को पानी से भरपूर कर देता है।

वेदों में कही ऊपर की विद्या से यह सिद्ध होता है कि पृथ्वी पर पदार्थों की स्वयं की कोई सत्ता नहीं है। अंतरिक्ष में स्थित सूर्य, जल, वायु एवं अनेक पदार्थों से उसका जीवन जुड़ा हुआ है यही आज का भौतिक विज्ञान भी कहता है कि पदार्थों की स्वयं की कोई सत्ता नहीं है, परंतु आकाश से कभी न अलग होने वाले अग्नि इत्यादि रूपों से पदार्थों की सत्ता जुड़ी हुई है।

वेदों के विज्ञान को आधुनिक विज्ञान से मिलाकर जरा और परखें। आज विज्ञान जगत में एन्ट्रोपी के नियमानुसार अपेक्षाकृत गर्म पिंडों से ठंडे पिंडों की ओर ताप लगातार प्रवाहित होता रहता है। इस प्रवाह को उलट कर स्वतः विरुद्ध दिशा में प्रवाहित नहीं किया जा सकता। अतः अवश्य ही कभी संसार की ऐसी स्थिति आएगी। जव एन्ट्रोपी के इस नियम के परिणामस्वरूप विश्व की शक्ति सूर्यादि समाप्त हो जाएंगे, क्योंकि इस दिशा में गर्म पिंड तथा ठंडे पिंड सबके तापमान एक समान हो जाएंगे। तव जीवन भी समाप्त हो जाएगा। यह एन्ट्रोपी का नियम, यजुर्वेद मंत्र २३/५४ तथा ऐसे ही अनेक चारों वेदों में कहे मंत्रों पर आधारित हैं। यजुर्वेद के इस मंत्र, अन्य मंत्रों एवं श्वेताश्वरोपनिषद् के अनुसार जव पृथ्वी का विनाश हो जाता है और समस्त ससार प्रलयावस्था में होता है तव परमेश्वर की स्वाभाविकज्ञान, वल एवं क्रिया रूपी शक्ति में स्वतः ही ईक्षण होता है कि संसार की रचना करूं। तव रज, तम, सत्त्व की साम्यावस्था वाली प्रकृति में जो प्रलयावस्था में अपने निष्क्रिय रूप में होती है तुरंत संसार रचने के लिए उन्मुख होती है। प्रकृति के उन्मुख होने का कारण मंत्र में कही "द्यौः पूर्वचित्तिः' अर्थात् प्रकृति में ईश्वर शक्ति द्वारा उत्पन्न प्रथम संचित वस्तु सूक्ष्म विद्युत है। प्रकृति द्वारा उत्पन्न दूसरा तत्त्व महत् है। महत् से अहंकार और अहंकार से पांच तन्मात्राएं अर्थात् पांच अव्यव (परमाणु) उत्पन्न होते है।

इन्हीं परमाणुओं से अणु एवं अणु से आकाश, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी जो दिखने वाले पदार्थ हैं, ये सव उत्पन्न होते हैं। यही बात सांख्य शास्त्र के रचयिता कपिल मुनि ने प्रथम अध्याय के २६ से ४२वें सूत्र तक प्रचुर मात्रा में कही है और ४२वें सूत्र में स्पष्ट कह दिया कि प्रकृति से जगत की उत्पत्ति वेदमंत्रों द्वारा प्रमाणित है। इन्हीं सूत्रों द्वारा तथा ऋग्वेद मंत्र १/१५४/४ में कहा कि प्रलयावस्था में यह जगत पाच महाभूतों में लीन होता हुआ क्रमशः वापस पांच तन्मात्राएं, अहंकार, महत् रूप धारण करता हुआ पुनः प्रकृति के रूप में लौट जाता है।

अतः स्वरूप से जगत का नाश नहीं होता, वस्तुतः वह अपेन कारण रूप प्रकृति में वापस लौट जाता है और ईश्वर व्यवस्थानुसार समय पर प्रकृति द्वारा फिर रच कर प्रकट कर दिया जाता है।

एन्ट्रोपी के नियमानुसार भी संसार एक दिन नष्ट हो जाएगा और ऊपर कहा वेदों का भी यही सिद्धांत है और यही बात कोर्पे नामक प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने अपनी पुस्तक में स्वीकार की है कि वेदों में कहा विज्ञान बीसवीं सदी के विज्ञान के अनुरूप है और इसके ज्ञान की झलक हमें विश्व के नियमानुसार ही 'अग्निषोमात्मक जगत और प्राणः प्रज्ञानामुदयत्येष सूर्यः' कह कर अग्नि रूपी ऊर्जा को खाने वाला और संसार की अन्य सामग्री, सोमलताएं

(शेष पृष्ठ १६ पर)

सञ्जीवनी सूक्त

❑ व्र. सुमेधा आर्य

१. प्रभु सेनापति हों और सैनिक (उपासक) हार जाए यह कभी हो नहीं सकता।

२. जैसे सैनिक शिविर पहुंचकर अपना कवच उतार देता है उसी प्रकार योगी मोक्ष प्राप्त होने पर अपना शरीर सरलता से छोड़ देता है।

३. यदि हम हर काल में प्रभु का स्मरण करते रहें तो पाप-अधर्म से बचे रहेंगे।

४. जो हम चाहते हैं वह होता नहीं। जो भाता है वह रहता नहीं। यही मनुष्य की विवशता है।

५. उस सुख का त्याग कर देना चाहिए जिससे किसी को दुःख हो।

६. जीवन का सत्य है परिवर्तन। परिवर्तन से मत डरो। हर संयोग वियोग में बदल रहा है और उत्पत्ति-विनाश में बदल रही है।

७. जो संयोग में वियोग का दर्शन करता है उसे कभी दुःख नहीं उठाना पड़ता।

८. मानव अपने कर्त्तव्य से अधिकार चाहता है क्या यह उचित है?

९. साधना युक्त जीवन ही उत्तम जीवन है अन्यथा साधना रहित जीवन तो पशु जीवन है जो भोगों में नष्ट हो जाता है। साधना से मानव दिव्य बनता है।

१०. दुर्जन जब सन्त होने का ढोंग करता है तब वह और भी बुरा हो जाता है।

११. अपने पर संकट आने पर हम दूसरों का सहारा लेते हैं। लेकिन दूसरों के संकट में हम कोई सहायता देने को तैयार नहीं होते ऐसा क्यों?

१२. दिमाग जन्मजात नहीं होते ढाले भी जा सकते हैं।

१३. वास्तविक सुख परिश्रम और सत्कर्म से ही प्राप्त होता है।

१४. योग्यता का अभाव चालाकी को पैदा करता है।

१५. दुर्बल चरित्र वाला व्यक्ति हवा के हर झोंके पर सरकंडे के समान झुक जाता है।

१६. जो कार्य शुद्ध हृदय और भावना से किया जाता है, देखने में वह छोटा भले ही हो परन्तु उसका फल महान होता है।

१७. एक महान सत्ता ही असंख्य लोक लोकान्तरों का बाहरी और भीतरी प्रबन्ध कर रही है। क्योंकि नियम बिना नियामक के। नियामक बिना ज्ञान के और ज्ञान बिना ज्ञानी के ठहर ही नहीं सकता। उसी को परमात्मा, खुदा और गॉड आदि कहते हैं।

१८. प्रभु की महान कृपा और दया का अन्त ही नहीं। प्रभु के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का तरीका है उसकी अनन्य भक्ति।

१९. प्रार्थना वे पंख जिससे आत्मा स्वर्ग की ओर उड़ती है और ध्यान वह आँख जिससे हम प्रभु का प्रत्यक्ष करते हैं।

२०. ईश्वर दया करते हैं हम उनकी भक्ति करें। जैसे वह दया द्वारा अपना प्रेम बरसाते हैं। वैसे हम श्रद्धा भक्ति द्वारा प्रेम प्रकट करें।

२१. योगी जब समाधि द्वारा ईश्वर साक्षात्कार कर लेता है उसके सारे भ्रम (संशय) नष्ट हो जाते हैं। फिर वह सांसारिक भोगों में नहीं फंसता।

२२. जीवात्मा जब ईश्वर से जुड़कर मन इन्द्रियों से कार्य लेता है यही आत्मानुशासन है।

२३. जहाँ हमारी कुतर्क शक्ति समाप्त हो जाती है वहीं से परमेश्वर की शक्तिमत्ता का आरम्भ हो जाता है।

२४. परमेश्वर दुःख विनाशक है, दुःख दाता नहीं हम भी वैसा ही बनने का प्रयत्न करें।

२५. जब उपासक परमेश्वर का वरण कर लेता है तो परमेश्वर भी उस उपासक को वर लेते हैं।

२६. भूत का प्रायश्चित और भविष्य का शुभ संकल्प ही पापों से मुक्त कर सकता है।

२७. ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना हमारे दैनिक जीवन का स्वाभाविक अंग बन जाना चाहिए।

२८. ईश्वर प्रत्यक्ष वाणी से बताया तो जा सकता है लेकिन केवल वाणी से प्रत्यक्ष अनुभूति कराई नहीं जा सकती।

२९. प्रार्थना वे पंख हैं जिनसे आत्मा स्वर्ग सुख की ओर उड़ता है अर्थात् अग्रसर होता है।

३०. मानव दुःख से पीड़ित हो सुख की कामना करता है। लेकिन ईश्वर रुपी यह सुखदायक पदार्थ कहाँ से मिल सकता है इसके लिए पदार्थों के गुण जानने की आवश्यकता है। यह संसार जड़ चेतन का खेल है। जड़ में जड़ता का ज्ञान और चेतन में चेतनता का ज्ञान होना चाहिए।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

वैदिक संस्कृति का महत्त्व (५)

आर्य धर्मादित्य

इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की, इस सम्पूर्ण विश्व की महाशक्ति केवल ईश्वर है। विश्व की कोई भी शक्ति ईश्वर से बढ़कर नहीं है तथा ईश्वर की सृष्टि का यह नियम है कि अन्याय और असत्य का आश्रय लेकर शक्ति के अहंकार और अभिमान में मानवता का विध्वंस करने वाले सत्ता केन्द्रों का नाम लेवा भी इतिहास में शेष नहीं रहता। वैदिक संस्कृति रक्षा अभियान की यह सर्वथा स्पष्ट धारणा है कि मानवता, सत्य तथा न्याय के साथ चलने वाली शक्ति ही महाशक्ति हो सकती है।

शस्त्र शक्ति और सैन्य बल के आधार पर दूसरे देशों पर वर्चस्व स्थापित करने की भावना, दूसरे राष्ट्रों केस्वाभिमान, उनकी संस्कृति और स्वतंत्र जीवन पद्धति में व्यवधान उत्पन्न करने के प्रयास से न तो कभी विश्व में शान्ति आ सकती है न आतंकवाद को समाप्त किया जा सकता है। आतंकवाद को पनपाने की कूटनीति को अपनाकर, आतंकवाद फैलाने वाले लोगों की प्रशंसा करके दुनिया से आतंकवाद को समाप्त करने की घोषणायें, दुनियां का सबसे बड़ा पाखण्ड है। इस तरह के छद्म भाषणों से जिस देश के लोग प्रभावित और उत्साहित होकर तालियां बजाकर प्रसन्न होते हैं, वे वास्तव में भारतवर्ष के शान्त प्रदेशों में आतंकवादियों के रक्तरंजित कारनामों, पर हजारों निर्दोष लोगों की लाशों पर जश्न मनाने वाले लोग हैं। यदि विश्व में मानवता और नैतिकता नाम की कोई चीज है तो आतंकवादियों ने जो इन्सानियत का क्रूर वध भारतवर्ष में किया है, हजारों निर्दोष लोगों को अकारण मारकर जो रक्त की नदियां बहाई हैं, उसका जिम्मेदार कौन है, इसका जवाब विश्व को देना होगा।

अमेरिका आज विश्व की महाशक्ति है और महाशक्ति बनना कोई पाप नहीं है। किन्तु यदि महाशक्ति होने से अहंकार में अमेरिका ने एक महान् लोकतांत्रिक, संस्कृति सम्पन्न, व मानवता की शरणस्थली भारतदेश के सत्य को नहीं समझा तो निश्चित रूप से वह दिग्भ्रमित है और उसकी नीतियों में बहुत बड़ी कमियां हैं।

अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को पूर्ण संरक्षण, धन और शस्त्रों द्वारा उसकी बेहिसाब सहायता, अतिरंजन भावना से उसका समर्थन और प्रशंसा, कभी विश्व से आतंकवाद को खतम नहीं कर सकती। पाकिस्तान को दी गई प्रत्येक प्रकार की अमेरिकी सहायता आतंकवाद को मजबूत करने वाली सिद्ध होगी और जब भी अवसर मिलेगा तब-तब पाकिस्तान इस अमेरिकी मदद का दुरुपयोग भारतवर्ष में निर्दोष लोगों के खून की नदियां बहाने में करेगा। उसका यह आतंकवाद भारतवर्ष की प्रभुसत्ता को चुनौती देनेवाला तो होगा ही, अमेरिका स्वयं भी इसकी मार से बचेगा नहीं। अपनी अपार क्षमताओं के बावजूद अमेरिका यह नहीं समझ रहा है कि पाकिस्तान इस्लामी कट्टरवाद का केन्द्र और विस्तारक रहा है और इस साम्प्रदायिक कट्टरवाद ने दो बातें जेहादियों के खून में घोलने की कोशिश की है, एक तो यह कि अमेरिका शैतान का प्रतिनिधि है तथा दूसरा हिन्दुस्तान में उत्पात मचाने, यहां के निर्दोष लोगों के खून से होली खेलने से बढ़कर पवित्र कार्य दुनियां में और कोई नहीं है। पाकिस्तान एक सही राष्ट्र का रूप ले सके इसकी संभावनाएं हैं ही नहीं। यह अवश्य है कि एक कठपुतली केरूप में इस देश का उपयोग अपने कल्पित हितों को पाने के लिये अमेरिका करता रहे। किन्तु इस कृत्रिम और अप्राकृतिक देश को दी गई प्रत्येक प्रकार की सहायता आतंकवाद को नये रूप में तथा अधिक खतरनाक रूप में विश्व में फैलाने में ही काम आयेगी।

उपरोक्त कथन पाकिस्तान विरोधी भावना के कारण नहीं वरन पाकिस्तान की मूल प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर कहा गया है। अमेरिका पाकिस्तान की मदद एवं प्रशंसा करके शायद अपने यहाँ हुए आतंकवाद का बदला तो ले ले, किन्तु वह ऐसा करके भारतवर्ष को एक चालाकी भरे आतंकवाद का तोहफा ही दे रहा है।

अमेरिका यदि पाकिस्तान को सही रास्ते पर नहीं ला सकता तथा मात्र एक औजार के रूप में केवल अपने हितों के लिये इस देश का उपयोग करता है तो अमेरिका का यह कदम स्वयं उसके लिये ही खतरनाक सिद्ध होगा।

पाकिस्तान मनोवृत्ति का पोषण करना केवल तालिबानों और बिन लादेनों का निर्माण करना है। महाशक्ति होने का एवं अपराजेयता का अहंकार मनुष्यों को एवं राष्ट्रों को सत्य को समझने के मार्ग से दूर ले जाता है। क्या अमेरिकी नागरिक इस बात को समझ सकेंगे।

यदि अमेरिका सत्य को समझना चाहता है तो वह सत्य यह है कि, विश्वशान्ति के लिये, मानवीय मूल्यों की रक्षा केलिये भारत-अमेरिका की समान स्तर पर सुदृढ़ मैत्री आवश्यक है। पाकिस्तान को अति महत्व देकर यह कार्य कभी संभव नहीं हो सकता। किन्तु अमेरिका, पाकिस्तान को अपना पिछलग्गू व सर्वाधिक प्रिय देश केरूप में ही देखना

चाहेगा। लोकतांत्रिक परम्पराओं वाले, मानवता के रक्षक, उच्च सांस्कृतिक परम्पराओं के संदेशवाहक भारत को कम महत्व देना यह ही अमेरिका की नीति रही है तथा इस असत्य से परे कुछ देखना, समझना अमेरिका को स्वीकार ही नहीं है। भारतवर्ष अपने राष्ट्रीय स्वाभिमान और राष्ट्रीय हितों को नष्ट करके यदि किसी महाशक्ति से टटपूंजियां (अलाभकारी) मैत्री करने के मार्ग का अनुसरण करेगा तो भारतवर्ष की जनता को सावधान करना एवं राष्ट्रों की उचित मैत्री के मापदण्डों का खुलासा करना वैदिक संस्कृति रक्षा अभियान का अंग है।

अपने महाशक्ति होने के अहंकार में यदि अमेरिका दबाव डालकर, सरकारों को सही आवाज उठाने से रोक सकता है, विरोधी स्वरों को दबाने के लिये व्यक्तियों को मरवा सकता है किन्तु क्या वह सत्य को असत्य में बदलने की क्षमता रखता है। सत्य तो सत्य ही रहेगा।

जिस व्यक्ति के हाथ भारतवर्ष के सैकड़ों निर्दोष नागरिकों व सैनिकों के खून से रंगे हुए हों उसे आतंकवाद समाप्त करने वाला मसीहा मानना भारतवर्ष का उपहास उड़ाना है।

कश्मीर को विवादग्रस्त क्षेत्र मानना, कश्मीर को भारत से अलग मानना, दुनियां का सबसे बड़ा असत्य है। पूरे विश्व को यह अच्छी तरह समझ लेना होगा कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है।

क्या अमेरिका जोर जबरदस्ती से धर्म परिवर्तन कराकर, किसी राष्ट्र के विभाजन या उस देश की भूमि को दूसरे देश के साथ जोड़ने का समर्थक है। क्या कोई देश यदि दूसरे देश की भूमि को अपनी कहने लगे तो वह विवादास्पद क्षेत्र हो जाता है। पाकिस्तान ने कश्मीर हड़पने के लिये भारतवर्ष पर हमला क्यों किया, क्या इसका जवाब महाशक्ति के पास है। एक हमलावर व आतंकवादी देश को, आतंकवाद की समाप्ति के लिये अमेरिका अपना अत्यन्त निकटस्थ सहयोगी मान रहा है। यह इस युग का विचित्रतम विरोधाभास है। पाकिस्तान प्रेरित आतंकवाद को भारतवर्ष १० दिनों में ठीक कर सकता है और पाकिस्तान को शान्तिपूर्वक रहने का पाठ आसानी से पढ़ाया जा सकता है। किन्तु अमेरिका के समर्थन और मित्रता के अभिमान में पाकिस्तान भारतवर्ष के निर्दोष लोगों का खून बहाता रहा है। इन निर्दोष लोगों के क्रूर व अमानवीय तरीके से वध के लिये अमेरिका को अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करनी होगी। अन्यथा यहां की सरकार को चाहिये कि आतंकवादियों द्वारा मारे गये निर्दोष लोगों की लाशों को अमेरिकी दूतावास के सामने रखे तथा मारे गये लोगों की सूची अमेरिकी दूतावास को सौंपता रहे।

क्या कोई राष्ट्र अपनी सीमाओं पर लगातार घुसपैठ, सीमातिक्रमण, आतंकवादी कार्यवाहियां अपने निर्दोष नागरिकों की क्रूरतम व जघन्य हत्यायें, अकारण गोलाबारी, अपने निवासियों को विदेशी हस्तक या चमचे (समर्थक) बनते देख सकता है। पाकिस्तान की ये गतिविधियां भारतवर्ष को कब तक सहना चाहियें। भारतवर्ष को कितना संयम रखना चाहिये, इसका स्पष्ट उत्तर, भारतवर्ष की सरकार नहीं, भारतवर्ष की जनता जानना चाहती है। इसका उत्तर अमेरिका को देना होगा। क्योंकि पाकिस्तान को शान्तिपूर्वक रहने का पाठ, भारतवर्ष बहुत आसानी से सिखा सकता है। किन्तु अमेरिकी वरदहस्त के कारण तथा जानबूझ कर बड़े भोलेपन से अमेरिका द्वारा दिये गये आशीर्वाद के कारण, पाकिस्तान द्वारा प्रोत्साहित आतंकवाद द्वारा अनेक भारतीयों के घर उजड़ गये हैं, हजारों भारतीयों का वध कर दिया गया है। इस अति भयानक अपराध का गुनहगार कौन है।

भारतवर्ष अमेरिका को एक अत्यन्त सम्मानित राष्ट्र, एक महाशक्ति तथा विश्व के राष्ट्रों का महानायक मानने के लिये तैयार है, यदि वह इन भयानक अपराधियों को, इन क्रूरतम गुनहगारों को उचित सजा देने का संकल्प करे।

भारतवर्ष की जनता को अमेरिका बरगला नहीं सकता। क्योंकि उसने खुलेआम इन अपराधियों को अपना मित्र बनाया है और इन गुनहगारों को गले लगाकार वह विश्व से आतंकवाद को मिटाने की घोषणायें कर रहा है।

यदि अमेरिका, मानवता और संस्कृति की रक्षा के लिये भारतवर्ष का साथ दे, तो भारतवर्ष, अमेरिका का सबसे बड़ा मित्र है। आज जब विश्व के अनेकों भागों में, अमेरिका को नुकसान पहुंचाने की घातक योजनायें बनाई जा रही हों, तब केवल भारतवर्ष ही वह देश है, जो बिना किसी छल-कपट व चालबाजी के, निष्कपट भाव से, अमेरिका को इन छद्म घातक प्रहारों से बचाने में सही मददगार सिद्ध हो सकता है। किन्तु अमेरिका को भारतवर्ष की पीड़ा समझनी होगी। हमारे देश के लाखों निर्दोष लोगों के क्रूर वध एवं देश की सीमा पर सतत् दुष्टतापूर्ण प्रहारों से उत्पन्न, इस देश के नागरिकों की अन्तरतम की गहरी वेदना को समझना होगा। केवल शब्दों के जाल और ऊपरी लीपा-पोती से यह पीड़ा कभी समाप्त नहीं होगी। पिछले कटु इतिहास के काले अध्यायों को समाप्त करके एक नये, उजले इतिहास की आधारशिला रखनी होगी। दो महान लोकतांत्रिक देश मिलकर विश्व में एक नयी सुबह लाने का प्रयत्न करें, जिससे एक सुख, शान्ति, समृद्धि और मानवता के विकास के रास्ते पर

चलने वाले विश्व की कल्पना साकार रूप ले सके।

भारतवर्ष की धरती से कभी ऐसा काम करना किसी के लिये संभव नही है, जो अमेरिका को नुकसान पहुँचाने वाला हो। यहां की जनशक्ति, यहां की ज्ञान और विवेक की प्रखरता तथा यहां के उत्कृष्ट मस्तिष्क, अमेरिका को एक श्रेष्ठ महाशक्ति बनाने में पूर्ण सहयोगी सिद्ध होंगे, यदि अमेरिका भारतदेश की वास्तविक, शाश्वत, महासत्ता और यहां की सिद्धियों को समझ सके। भारतवर्ष का सच्चा मित्र वही देश हो सकता है और महाशक्ति के रूप में वही देश खड़ा रह सकता है जो भारत की पीड़ा को समझ सके तथा पाकिस्तान जैसे देश द्वारा जिसे अमेरिका अपने कठपुतली मित्र राष्ट्र सम्मानित दर्जा दिये हुए है, लगातार भारतवर्ष के आस्तित्व को चुनौती देते रहने की निकृष्ट व अन्तर्राष्ट्रीय सौजन्य की दृष्टि से अत्यन्त घटिया प्रवृत्ति को ठीक करने में पूर्ण सहयोग प्रदान करे।

भारतवर्ष मानवीय संस्कृति के विकास का आदि उद्गम स्थल है। भारतवर्ष अनेकता एवं विविधताओं का सम्मान करते हुए, सत्य को समझने के आग्रह के साथ सबको अपना समझने वाला, सबको साथ लेकर चलने वाला देश है इस देश को कमजोर बनाने के प्रयत्न मानवता के लिये विनाशक ही सिद्ध होंगे। भारतवर्ष मानवता का रक्षक है। सत्य, न्याय और मानवता की रक्षा के प्रयासों में वैदिक संस्कृति से सम्पन्न भारत ही विश्व का नेतृत्व कर सकता है।

वैदिक संस्कृति रक्षा अभियान, संस्कृति के साथ राष्ट्र की रक्षा का अभियान है। राष्ट्र के लोगों जागो। भारतवर्ष पर आने वाली विपत्तियों को समझो। साम्राज्यवाद, पूंजीवाद और हिंसक सम्प्रदायवाद के राक्षसी पंजे भारतवर्ष का रक्त चूसने के लिये आगे बढ़ रहे हैं। भारतवर्ष को शिकंजे में कसने के लिये जाल फेंका जा रहा है। भारतराष्ट्र के लोग अपनी शक्ति को क्यों भूल रहे हैं। जिस दिन सारे भारतवर्ष के लोग एक स्वर में अपनी राष्ट्रीय सनातन सत्ता की महाशक्ति का प्रकटीकरण करेंगे, ये सारे शिकंजे चूर-चूर हो जावेंगे।

राष्ट्र को वैदिक संस्कृति रक्षा अभियान के इस सांस्कृतिक वैचारिक आन्दोलन के साथ एक मत से आकर खड़ हो जाना चाहिये। विश्व की कोई भी शक्ति एक संगठित राष्ट्र का, एक संस्कृति सम्पन्न राष्ट्र का कुछ भी नही बिगाड़ सकती। राष्ट्रीयता एक सर्वोपरि सत्य है। वैदिकसंस्कृति रक्षा अभियान राष्ट्रीयता और संस्कृति के प्रचार का अभियान है। सारे भेद-भाव, मतवैभिन्नयों को हटा कर सारा देश एकमंच पर आकर खड़ा हो, यही इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है। राष्ट्रीयता के सशक्त होने पर ही भारतवर्ष के लोग सुखी, सम्पन्न, समृद्ध और स्वाभिमान से युक्त जीवन जी सकेंगे। हमारी राष्ट्रीयता का आधार मानव संस्कृति है। मानव जाति का हित, सुख सम्पन्नता, संस्कृति में ही निहित है। वह राष्ट्र नहीं है जहां कुसंस्कृति की शिक्षा दी जाती हो। जहां संस्कृति नहीं है वह मात्र ऐसे लोगों का हुजूम है जो अपने सुख के लिये कुछ भी कर सकते हैं। लूटपाट, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, संस्कृति विहीनता के लक्षण हैं।

विश्व में फैले हुए वैचारिक अन्धकार को दूर कर, एक नया प्रभात लाने के लिये, श्रेष्ट विचारों का प्रकाश फैलाने के लिये दुनियां के श्रेष्ठ मनुष्यों को निमन्त्रण है कि वे अपनी निद्रा और तन्द्रा को छोड़कर जागृत हों एवं वैदिक संस्कृति रक्षा अभियान को सशक्त बनावें।

भगवा रंग हमारी संस्कृति का आदर्श है। ओमांकित भगवा ध्वज सांस्कृतिक रक्षा का सर्वोपरि प्रेरणा स्रोत है। इस ध्वज को लेकर चलने वाले परिव्राजक वैदिक संस्कृति के अजस्र प्रवाह को प्रवाहमान करते हुए चलते रहें-चलते रहें। भारतवर्ष का प्रत्येक नागरिक, सारे मत-पन्थ-सम्प्रदाय-मजहब, प्रत्येक घर-परिवार, प्रत्येक संन्यासी-फकीर, राष्ट्र व संस्कृति की रक्षा के लिए ओमांकित भगवा ध्वज व ओम के श्रेष्ठ मन्त्र को धारण करें। ओ३म् ही हमारी महाशक्ति है, दिव्य शक्ति है। — २०४, पुराना कटरा चोराहा, प्रयाग

(पृष्ठ १० का शेष)

३१. जो जड़ नहीं और जिसमें अज्ञानता लेशमात्र नहीं वह परमेश्वर है।

३२. जहां अज्ञान नहीं वहां दुःख भी नहीं। सर्वज्ञ (पूर्णज्ञानी) होने के कारण परमेश्वर आनन्दधन हैं और नित्य सुख देते हैं।

३३. ईश्वर से सम्बन्ध बनाने का साधन उसकी स्तुति प्रार्थना तथा उपासना है।

३४. शरीर मिट्टी का पिंजरा है, न जाने कब टूट फूट जाए समय रहते ईश्वर की उपासना कर लें।

३५. जिस मानव का भगवान से प्रेम नहीं वह ऐसे जी रहा है जैसे लोहार की धौंकनी। सांस तो वह भी मनुष्य की तरह लेती है।

३६. भक्ति विहीन और दयाहीन शरीर प्राण रहित देह के समान है।

३७. मनुष्य शरीर पाकर भी यदि प्रभु का साक्षात्कार नहीं किया तो वैसा ही होगा जैसे प्यासा व्यक्ति मीठे जल के स्रोत से बिना जल पिए, लौट जाए।

—वेद मंदिर, महात्मा वेदभिक्षु सेवाश्रम, इब्राहीमपुर, दिल्ली-३६

भारतीय नववर्ष बनाम-विदेशी नववर्ष

राजेश वरनवाल

प्रथम जनवरी २००३.... ईसवी सन्.... ईसा मसीह से प्रारम्भ ईसा संवत.... अंग्रेजी वर्ष का प्रथम दिन... हमेशा की तरह इसबार भी लगभग सम्पूर्ण विश्व संगीत के कर्ण-विस्फोट तान पर थिरकते हुए आंग्लो-वर्ष का एक और सोपान तय हो गया। अंग्रेजी नववर्ष के नाम पर हम भारतवासी भी अपनी गुरुता एवं आध्यात्म को भूल कर उच्छृंखलता एवं फूहड़ता के साथ यह दिवस मनाते हैं। ३१ जनवरी रात्रि १२ बजे तक लोग हंगामा (हुल्लड़) करते हैं और फिर १२ बजते ही लोगों का तांता लग जाता है अंग्रेजी नववर्ष की बधाई देने के लिए। हम हिन्दू (आर्य) भी प्रथम जनवरी को पिकनिक मनाने निकल पड़ते हैं। अनेक लोग शराब एवं अश्लील व्यवहारों के साथ नववर्ष मनाते हैं। मद्यपान के कारण कई प्रकार की दुर्घटनाएं होती हैं। जबकि हमारी संस्कृति पौष माह के जाड़े के दिनों में वनभोज मनाने की रही है जिसमें मद्य के स्थान पर प्रेम की धारा बहती थी, अपनी संस्कृति झलकती थी।

अंग्रेजों का ईसा-संवत् सौर्य वर्ष पर आधारित है। अर्थात् सूर्य के आधार पर तिथि बदलती है। परन्तु हमारे वैदिक संवत चन्द्र की गति एवं उसके घटने-बढ़ने के आधार तथा नक्षत्रों की स्थिति के आधार पर तिथि-क्रम बदलते हैं। ईसा-सम्वत् सरल परन्तु अवैज्ञानिक है और हिन्दू-संवत् क्लिष्ट होते हुए भी वैज्ञानिक है। हमारी गणना श्रेष्ठ और सटीक है। परन्तु हम उस ईसा-सम्वत को लेकर चल रहे हैं जो मात्र दो हजार वर्ष पुराना है और इसे ईसामसीह के जन्म के काल से प्रारम्भ माना जाता है। भारत में ईसा-संवत् अंग्रेजों के काल से चल रहा है।

स्वयं यूरोप में प्रारम्भ के ९०० वर्ष तक इसका प्रचलन नहीं था। सन् ८१६ ई. में चेलसी नगर में पादरियों का एक सम्मेलन हुआ और उसमें निर्णय लिया गया कि सब पादरियों को ईसा-संवत् का प्रारम्भ करना चाहिए। इस निर्णय के उपरान्त भी यूरोप के जन-साधारण में यह प्रचलित नहीं हो सका। इसे जर्मनी के एक राजा चार्ल्स तृतीय ने ८७९ ई. में प्रयोग में लाना प्रारम्भ किया। तब धीरे-धीरे यह यूरोप में प्रचलित हुआ। ईसा के जनम का आधार मानते हुए काल को दो भागों में बांट दिया गया है—ईस्वी सन् स्वयं ईसा पूर्व। अंग्रेजी औपनिवेशवाद से प्रभावित आप अपना सम्बन्ध सनातन एवं आदि संस्कृति से विच्छेद कर भारतीयों ने मात्र दो हजार वर्ष पूर्व हुए ईसामसीह से जोड़ लिया। मानो हमारी महान एवं सनातन् हिन्दू संस्कृति में अपना कोई संवत् तथा नववर्ष है ही नहीं।

वास्तव में हमारी वैदिक संस्कृति इतनी सनातन रहा है कि हमारे यहां एक नहीं अनेक संवत्-स्वयं नववर्ष का छिटपुट प्रयोग होने लगा है। सृष्टि-संवत् की गणना करोड़ों में मानी जाती है अर्थात् इसका प्रारम्भ सृष्टि अर्थात् सूर्य, पृथ्वी आदि ग्रहों की उत्पत्ति से माना जाता है। कलि संवत् की गणना कलियुग के प्रारम्भ से मानी गयी है। इसे युगाब्द भी कहा जाता है। हिन्दुओं के ज्योतिष-शास्त्र की गणना में कलियुग का प्रारम्भ ईसा के जन्म के ३१०२ वर्ष पूर्व से माना गया है। अर्थात् अभी ३१०२+२००२ ई=५१०४ कलि संवत् चल रहा है।

इसी प्रकार युधिष्ठिर-संवत् की गणना महाभारत युद्ध के पश्चात् युधिष्ठिर का राज्याभिषेक होने से माना गया है। कलियुग प्रारम्भ होने के लगभग ३६ वर्ष पूर्व युधिष्ठिर का राज्याभिषेक हुआ था। अर्थात् अभी विक्रम संवत् ५१०४+३६ वर्ष=५१४० युधिष्ठिर संवत चल रहा है। जब जैनमत यौवनावस्था में था तो कहीं-कहीं संवत्-वर्द्धमान विजयराज का प्रचलन दिखाई पड़ा परन्तु शीघ्र ही प्रचलन से बाहर हो गया।

ईसा से लगभग ५४ वर्ष पूर्व उज्जैन के पवारवंश के राजा गंधर्वसेन के पुत्र विक्रमादित्य द्वारा शकों को पूर्ण रूप से परास्त करने पर विक्रम-संवत् को चलाया गया। अर्थात् अभी ५६ वर्ष+२००२ ई.=२०५९ विक्रम-संवत् चल रहा है। इसी वंश में हुए राजा शालिवाहन ने शक गण आदि को हिन्दू धर्म में लेकर इस समस्या का पूर्णतः उन्मूलन ही कर दिया और उसी की स्मृति में विक्रम-संवत् के १३५ वर्ष पश्चात् शक-संवत् चलाया गया। अर्थात् अभी विक्रमी २०५९-१३५ वर्ष=१९२४ शक-संवत् चल रहा है।

इसके साथ-ही-साथ बंगला-संवत्, नानक-संवत्, दयानन्द-संवत् आदि जैसे कितने ही संवतों का प्रचलन प्रारम्भ हो गया। इसी प्रकार हम अपना नववर्ष चैत मास के शुक्ल पक्ष के प्रथमा के साथ-साथ दीवाली, होली, वैशाखी, पोंगल एवं बंगला नववर्ष के दिन अपनी-अपनी भावना एवं भाषा-पंथों के आधार पर मनाते हैं। इन्हीं विविधताओं तथा अंग्रेजी प्रशासन में पराधीनता के कारण ही हिन्दुओं के नववर्ष एवं संवत् पर प्रथम जनवरी एवं-ईसा-संवत् हावी हो गया है।

आज अंग्रेजी संस्कृति से प्रभावित हमारी "राखी" पर

(शेष पृष्ठ १९ पर)

२३ जनवरी जन्मदिवस पर विशेष !

क्रांतिवीर सुभाषचन्द्र बोस

□ रामविहारी विश्वकर्मा

नेताजी सुभाषचन्द्र वोस की रग-रग में वचपन से क्रांति की भावना मौजूद थी। जव वे विद्यार्थी थे तो पड़ोस के एक गांव में हैजा फैलने की घटना सुनते ही वे माँ-वाप को वताए वगैर ही जाकर पीड़ित लोगों की सेवा करने लगे। छात्र जीवन के ही दौरान जव एक अंग्रेज छात्र ने भारतीय छात्रों की आलोचना की थी तो उन्होंने उसे थप्पड़ जड़ दिया था। **सुभाषचन्द्र वोस वचपन से ही क्रांतिकारी विचारों के थे और वाद में उनको क्रांति की इसी भावना ने देश की आजादी का दिवाना वना दिया।** अपने एक भाषण के दौरान क्रांतिवीर सुभाषचन्द्र वोस ने ऐलान किया था कि **तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।**

सुभाषचन्द्र वोस वचपन से ही पढ़ाई में अग्रणी विद्यार्थियों में गिने जाते थे। मैट्रिक की परीक्षा में पूरे राज्य में उनका दूसरा स्थान था। उन्होंने सभी परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थीं। जव वे आईसीएस की परीक्षा देने विलायत गए थे तो उस परीक्षा में भी अग्रणी छात्रों की सूची में उनका नाम था। लेकिन उन्होंने पराधीन देश में रहते हुए उसमें हुकूमत की अनुकम्पा पाने से इन्कार कर दिया। जिस समय सुभाषचन्द्र वोस आईसीएस करकेस्वदेश पहुंचे तो उस समय समूचे देश में राजनीति वहुत गरम थी। एक ओर पंजाव में हाहाकार मचा हुआ था। दूसरे देश में असहयोग आंदोलन का जोर था। जव माहौल ऐसा हो तो सुभाष जैसा व्यक्ति आई सी एस की कुर्सी से भला कैसे चिपके रह सकता था। सुभाष ने अपनी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। त्यागपत्र देने के वाद सुभाष देशवंधु के स्वयंसेवकों में शामिल हो गए। कुछ ही दिनों के वाद कांग्रेस सेवादल में कप्तान वन गए। उन्हीं दिनों **प्रिंस आफ वेल्स का भारत आगमन हुआ और उनके स्वागत का वहिष्कार करने के आरोप में सुभाष वावू को छह महीने की सजा दी गई।** उसके वाद तो सुभाष देश की सेवा की ओर निरंतर अग्रसर होते गए। स्वराज्य पार्टी के दैनिक पत्र फारवर्ड के वे सम्पादक वने लेकिन दिनोंदिन उनका स्वास्थ्य विगड़ता जा रहा था। वे स्वास्थ्य लाभ के लिए स्विटजरलैण्ड जाना चाहते थे लेकिन देशसेवा छोड़कर कहीं भी अन्यत्र जा पाना उनके लिए संभव नहीं रह गया था। १९२८ में जव कलकत्ता कांग्रेस सम्मेलन हुआ तो उस समय सुभाषचन्द्र वोस की उसमें विशिष्ट भूमिका रही और उन्होंने पूर्ण स्वराज्य का समर्थन किया था। जव पूर्ण स्वराज्य के प्रस्ताव को लेकर १९२९ ई. में २६ जनवरी को स्वाधीनता दिवस मनाने का निश्चय किया गया तो उसके समर्थन में सुभाष वावू के नेतृत्त्व में कलकत्ता में जुलूस निकाला गया था। इसके वाद ब्रिटिश सरकार ने सुभाष वावू और उसके साथियों को जेल में डाल दिया और उन्हें कठोर यातनाएं दी गई। इसकी वजह से सुभाष वोस को पहले से ही टीवी का जो रोग चला आ रहा था और गम्भीर हो गया। उन्हें स्विट्जरलैण्ड जाने की सलाह दी गई और जेल से रिहा होने के वाद वे स्विटजरलैण्ड गए। लेकिन जिसके मन में क्रांति की ज्वाला धधक रही हो वो भला शांत कैसे बैठा रह सकता है। सुभाष वावू फ्रांस और लंदन की यात्रा पर गए और इसी वीच में मुसोलिनी से भी मिले। उसके वाद जव वे देश वापस लौटे तो उन्हें ब्रिटिश सरकार ने तुरंत गिरफ्तार कर लिया। कांग्रेस का रामगढ़ अधिवेशन हुआ और सुभाष वावू को कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया। लेकिन कांग्रेस के कुछ नेताओं को उनका वर्चस्व रास नहीं आया। जिसका परिणाम हुआ कि सुभाष वावू हमेशा के लिए कांग्रेस से अलग हो गए। ब्रिटिश सरकार की आंखों में वे लगातार खटकते रहे और उनके घर पर दिन रात पहरा लगा रहता था। लेकिन कुछ दिनों के अंदर वे एक पठान का वेश वनाकर भारत की सीमा पार करके काबुल पहुंच गए और वहां से जर्मनी पहुंच गए। जर्मनी में सुभाष वावू का जोरदार स्वागत किया गया। उनके भाषणों की हर जगह तारीफ होती थी। हिटलर ने उनको वहुत सम्मान दिया। वहां से सुभाष वावू टोकियो चले गए और टोकियो से सिंगापुर रवाना हो गए। रासविहारी वोस पहले से ही उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे और उन्होंने सुभाषचन्द्र वोस को आजाद हिन्द फौज का सेनापति घोषित कर दिया। सुभाष वावू की संगठन शक्ति का दुनिया भर के लोग लोहा मानने लगे। कोई भी यह सोच नहीं सकता था कि विना किसी प्रशिक्षण वाले लोगों को इकट्ठा करके उनके अंदर इतनी भावना भरकर और उन्हें देश की आजादी के लिए मर मिटने के लिए कोई इतने कम समय में

तैयार कर सकता था। सुभाष बाबू ने चार ब्रिगेड पुरुषों की और एक ब्रिगेड स्त्रियों की तैयार की। उन्होंने पुरुष ब्रिगेडों का नाम सुभाष ब्रिगेड, गांधी ब्रिगेड, नेहरु ब्रिगेड और आजाद ब्रिगेड रखा, जबकि महिलाओं की रेजीमेंट का नाम झांसी रानी रखा और उसकी देखरेख करने के लिए कैप्टन लक्ष्मी को नियुक्त किया। सुभाषचन्द्र बोस ने राजनयिक स्तर पर भी लगातार प्रयास जारी रखा और उनकी आजाद हिन्द सरकार को जापान, जर्मनी, इटली, चीन और मंचूरिया ने मान्यता भी दे दी थी। आजाद हिन्द सरकार पहले सिंगापुर में बनाई गई, उसके बाद रंगून में उसकी अस्थायी राजधानी बनायी गई। इसी बीच जब अण्डमान निकोबार द्वीप समूह अंग्रेजों के हाथ से मुक्त किया गया तो उसका नाम शहीद और स्वराज्य रखा गया और उसकी आर्थिक व्यवस्था को ठीक रखने के लिए उपहार में मिलने वाली वस्तुओं का उपयोग किया गया। सुभाष बाबू ने १८ मार्च, १९४४ को दिल्ली चलो का नारा लगाया और आजाद हिन्द के सिपाही मणिपुर और कोहिमा की लड़ाई में जी-जान से जुट गए, उन्होंने एक समय तो ब्रिटिश सेना को पीछे हटने को मजबूर कर दिया। लेकिन अंग्रेजों की सेना साधन सम्पन्न थी जबकि आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को खाने पीने तक की अच्छी सुविधा नहीं थी। भूखे पेट या पेड़ों की पत्तियां खाकर आजाद हिन्द के सिपाही सोलह-सोलह घंटे तक मोर्चा संभाले रहते थे और अंग्रेजों के हौसले पस्त कर देते थे। झांसी रानी रेजीमेंट के सैनिकों की तो बात और भी प्रशंसनीय थी। वे अपनी पीठ पर छोटे-छोटे बच्चों को बांधे हुए जमीन पर रेंग-रेंग कर लड़ाई करते-करते शहीद हुई लेकिन उन्होंने मोर्चा नहीं छोड़ा। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने १७ अगस्त १९४५ को हिन्दवासियों के नाम अपना भाषण दिया। उस भाषण में उन्होंने कहा था कि "**भारत की आजादी के लिए अनेक जवानों की कुर्बानी देकर और अपार धन पानी की तरह बहाकर आप लोगों ने आत्मबलिदान और देशभक्ति की एक जीतीजागती मिसाल पेश की है। जिस उत्साह के साथ आप लोगों ने समर्थन किया उसे मैं कभी नहीं भूलूंगा। आप लोगों ने आजाद हिन्द फौज और रानी झांसी की कैम्पों में सिपाही बनाने के लिए अपने बेटे-बेटियों की कभी न खत्म होने वाली कतार खड़ी कर दी। आपने वह सब कुछ किया जो भारत के एक सच्चे सपूत का फर्ज था..... इतिहास के इस अभूतपूर्व संकट की घड़ी में मैं सिर्फ एक ही बात कहूंगा कि इस अस्थायी असफलता से आप हतोत्साहित न हों, प्रसन्नचित रहें और अपने उत्साह को बनाए रखें। धरती पर ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो भारत को गुलाम बनाए रख सके। भारत आजाद होगा और जल्दी ही होगा जयहिन्द।**"

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का यह अंतिम भाषण था। इसके कुछ ही दिनों बाद यह खबर सुनने को मिली कि तोक्यों से उड़ान भरने के बाद १८ अगस्त को हवाई दुर्घटना में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस इस दुनिया से चल बसे। लेकिन सुभाषचन्द्र बोस की कीर्ति स्वतंत्रता के इतिहास में उन्हें हमेशा अमर रखेगी। नेताजी ने अपनी सेना के अभियान करने के लिए जो गीत दिया उसकी पंक्तियां आज भी हम सब के कानों में गूंजती रहती हैं।

कदम-कदम बढ़ाए जा, खुशी के गीत गाए जा।
कि जिंदगी है कौम की, तू कौम पर लुटाए जा॥

—बी-८३, पण्डारा रोड, नई दिल्ली-८३

(पृष्ठ ९ का शेष)

इत्यादि उसका अन्न कही गई हैं।

अतः जिस प्रकार आज का विज्ञान सूर्य एवं पृथ्वी की आयु निर्धारित करने में लगा है अर्थात यह सिद्ध कर रहा है कि इस विश्व की अवश्य ही कभी उत्पत्ति हुई थी एवं एंट्रोपी के नियम अनुसार इसका विनाश भी अवश्य होगा और अभी यह संसार और इसकी क्रियाएं बनी हुई हैं एवं चल रही हैं तो यही बात चारों वेद करीब दो अरब साल पहले ही से कह रहे हैं कि "यथा पूर्वम् अकल्पयत्" अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति पालना एवं विनाश करने वाला स्वयं परमेश्वर है। अतः यह विश्व बनता है और फिर नाश को प्राप्त हो जाता है।

विचारना यही है कि जब यह बनता है तथा अवश्य ही इसका बनाने वाला कोई न कोई तो है, नहीं तो इतनी सुंदर व्यवस्था में सूर्य, चाँद, तारे, पृथ्वी, जन्म-मृत्यु एवं वनस्पति इत्यादि का उत्पादन नाश एवं पुनः उत्पादन कदापि संभव नहीं, क्योंकि यह रचना किसी मनुष्य ने तो की ही नहीं है अतः अनुमान प्रमाण से यही सिद्ध होता है कि इस सृष्टि का रचयिता, पालनकर्ता, संहारकर्ता एवं पुनः जगत का रचने वाला केवल एक ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर है जो जन्म-मृत्यु संस्कारादि से सर्वदा रहित है।

भावार्थ यही है कि विश्व को ज्ञान व विज्ञान की देन ईश्वरीय वाणी चारों वेदों की ही देन है। अतः यदि वेदों का पिछले बीते तीनों युगों के समान गहन अध्ययन किया जाए तो विज्ञान व ब्रह्माण्ड के बारे में नवीन-नवीन तथा आश्चर्यजनक खोज संभव हो सकती है।

—टीका लहसर, योल बाजार, योल कैम्प (कांगड़ा) हि.प्र.

२८ जनवरी जिनकी निधन तिथि है

महान क्रान्तिकारी : रासबिहारी बोस

—उदयनारायण सिंह

'आइये, आज हम अपनी मातृभूमि की बेड़ियाँ काटने के लिए अपने सभी मत-मतांतर मिटाकर एक जोर का धक्का लगा दें और वर्षों की दासता के जुए को उतार फेंकें। आइये, आज हम एक धागे में बँधकर अपनी राष्ट्रीय स्वतंत्रता की प्राप्ति कर लें ताकिआने वाली पीढ़ी हमारी अकर्मण्यता पर दो आँसू बहाने का बहाना न खोज सके।' यह ऐतिहासिक संदेश रासबिहारी बोस ने थाई देश से १ अगस्त सन् १९४२ को भारतीय स्वातंत्र्य-संग्राम केसिलसिले में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन की पूर्व पीठिका के रूप में जनता को जाग्रत करते हुए प्रसारित किया था। इस समय आप एशिया में भारतीय स्वतंत्रता संघ की संग्राम-परिषद् के अध्यक्ष के रूप में भारत को शस्त्र-बल से मुक्त कराने की योजना में व्यस्त थे।

रासबिहारी बोस देश के उन थोड़े से दृढ़-प्रतिज्ञ क्रान्तिकारियों में थे, जिनका यह पूर्ण विश्वास था कि भारत शस्त्र-बल से स्वाधीन किया जा सकता है। सशस्त्र जनक्रान्ति द्वारा देश को स्वतंत्र करने के अपने स्वप्न को फलित देखने के लिए आपने न केवल देश में वरन् देश से बाहर जाकर तरह-तरह की योजनाएँ बनायीं और उन्हें मूर्तरूप भी दिया। आपने अपने अमूल्य जीवन का अधिकांश समय विदेश में जाकर वहाँ नाना प्रकार की कठिनाइयों को बर्दाश्त करते हुए इसी लक्ष्य की प्राप्ति में व्यतीत किया। किसी भी व्यक्ति में योजना बनाने तथा उसे व्यावहारिक रूप देने की प्रतिभा साथ-साथ प्रायः नहीं होती, लेकिन आपमें यह अद्भुत गुण विद्यमान था। योजनाओं को व्यावहारिक रूप देने के लिए आप न केवल चुप बैठे रह कर समय की प्रतीक्षा करते थे, वरन् उसके लिए उपयुक्त परिस्थितियाँ भी पैदा करते थे।

रासबिहारी बोस का जन्म २५ मई, १८८५ को बंगाल के चन्द्रनगर स्थान में हुआ। यह वह समय था, जबकि देश में सन् १८५७ की सशस्त्र-क्रांति के कुचल दिये जाने पर जनता में घोर निराशा की व्याप्त भावना को दूर करने केलिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई थी। छोटी आयु से ही आपका सम्बन्ध बंगाल के क्रांतिकारियों से हो गया था और हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने से पूर्व ही आपने बम बनाना सीख लिया। हाईस्कूल परीक्षा पास करने के बाद आपने देश को स्वाधीन करने का व्रत लिया और इसी कारण कालेज की शिक्षा प्राप्त करने से इनकार कर दिया। इसके लिए आपने सरकारी नौकरी कर ली, ताकि कोई इस बात का विश्वास न कर सके कि वे क्रांतिकारी कार्यों में संलग्न हैं। आप यद्यपि देहरादून में वन विभाग में नौकरी करते थे, लेकिन आपका सम्ब ध लाहौर, कलकत्ता, दिल्ली, पटना आदि देश के प्रमुख नगरों के क्रांतिकारियों से बना रहता था।

सन् १९१२ में जिस समय वाइसराय लार्ड हार्डिंग के सम्मान में दिल्ली में जुलूस तथा समारोह का आयोजन किया गया था, उसीसमय आपने चाँदनीचौक में वाइसराय पर स्वयं बम फेंका, लेकिन निशाना चूक जाने के कारण वे बाल-बाल बच गये। इसकेबाद आपने नौकरी छोड़कर देशव्यापी क्रांति की योजनाएँ तैयार कीं। सम्पूर्ण भारत में आपके क्रांतिकारी सहयोगियों ने इस दिशा में कार्य करना प्रारम्भ किया। क्रांति की तिथि भी २१ फरवरी सन् १९१५ निर्धारित कर दी गई थी; लेकिन इसका पता पहले ही ब्रिटिश सरकार को लग गया और उसने २० फरवरी को समस्त देश के भारतीय सैनिकों को निरस्त्र कर दिया। सम्पूर्ण देश में एक साथ क्रांति करने की इस योजना के असफल होने से रासबिहारी को गहरा धक्का लगा। खुफिया पुलिस अब आपके पीछे पड़ गयी, लेकिन लाख कोशिशों के बाद भी आप उसकी पकड़ में नहीं आ सके।

सशस्त्र क्रांति द्वारा देश को स्वतंत्र करने की योजना के असफल होने पर आपने विदेशी राष्ट्रों की सहायता से देश को मुक्त करने का निर्णय किया। आपने अपना नाम पी.एन. टैगोर रखा और अपने को गुरुदेव टैगोर का सचिव बताकर कलकत्ते के पुलिस कमिश्नर के पास स्वयं जाकर अपनी जापान-यात्रा का प्रबन्ध कर लिया। इसी समय टैगोर भी जापान-यात्रा करने वाले थे और आपने यह बहाना बनाया कि मैं उनसे पहले जापान जाकर उनके रहने की व्यवस्था करूँगा। पी.एन. टैगोर के नाम से ही आप जून सन् १९१५ में जापान पहुँचे। वहाँ पहुँचने के बाद ही आपने वहाँ के भारतीयों को संगठित

करना प्रारम्भ कर दिया। इस समय लाला लाजपतराय भी वहीं थे। आप लोगों ने वहाँ के भारतीयों की एक सभा बुलाई, जिसमें रासबिहारी बोस तथा लालाजी ने भाषण किये। इनके भाषणों में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध इतनी घृणा का प्रचार किया गया कि जापान स्थित ब्रिटिश राजदूत की बेचैनी का ठिकाना न रहा और उसने इन लोगों की गिरफ्तारी की जापान सरकार से माँग की। लालाजी चुपके से अमेरिका चले गये और रासबिहारी जापान में ही छिपकर रहने लगे। इसी समय ब्रिटिश सरकार को पता चल गया कि ये पी.एन. टैगोर स्वतः रासबिहारी बोस ही हैं।

इसी बीच प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ गया; जिसमें जापान तथा ब्रिटेन में मैत्री सम्बन्ध कायम रहा। **ब्रिटिश सरकार ने रासबिहारी बोस को जीवित अथवा मृत अवस्था में गिरफ्तारी का भरपूर प्रयत्न किया। इस समय टोकियो के एक जापानी परिवार ने आपकी पूरी सुरक्षा का प्रबन्ध अपने हाथ में ले रखा था।** तोयामा नाम के व्यक्ति ने आश्रय का आश्वासन दिया था और इसी ने जापानी परम्परा के प्रतिकूल सोमास नामक एक जापानी की बड़ी लड़की से आपके विवाह की व्यवस्था की। श्रीमती सोमास तथा पत्नी तोशिको ने सन् १८२३ तक आपकी पूरी देखभाल की, यद्यपि ब्रिटेन ने रासबिहारी को पकड़ने की भरपूर कोशिशें कीं। आपको इस बीच सत्रह बार अपना निवासस्थान बदलना पड़ा। **अन्त में आपने जापानी नागरिकता का अधिकार प्राप्त कर लिया।** इन अस्थिर परिस्थितियों में भी आपने भारतीयों का संगठन कार्य जारी रखा। आपने इसी उद्देश्य से टोकियो में एक होटल भी खोल रखा था, जहाँ सभी भारतीय समय-समय पर एकत्रित हुआ करते थे। इस होटल द्वारा जरूरतमन्द भारतीयों की सहायता भी की जाती थी। आपने पत्रकार के रूप में भी काम किया और 'न्यू एशिया' और 'एशियन रेव्यू' नामक दो पत्र प्रकाशित किये, जिसकी प्रतियाँ विदेश में रहने वाले भारतीय उत्सुकता के साथ पढ़ते थे। आपके उत्तेजनापूर्ण लेख न केवल भारतीयों के हृदय में, वरन् जापानियों के हृदय में भी ब्रिटिश शासन-व्यवस्था के प्रति घृणा का संचार कर रहे थे। आपने जापानी भाषा भी सीख ली और उसमें भारतीय स्वाधीनता संग्राम, भारतीय संस्कृति तथा रामायण के बारे में पुस्तकें लिखीं। कविगुरु टैगोर ने भी अपनी जापान-यात्रा के समय आपके साथ अपना कुछ समय व्यतीत किया था और आपके कार्यों के प्रति अपनी हार्दिक सहानुभूति व्यक्त की थी। टैगोर के हृदय में रासबिहारी के प्रति एक उच्च भावना थी। रासबिहारी प्रत्येकवर्ष जलियाँवाला बाग दिवस भी मनाया करते थे।

प्रथम महायुद्ध से लेकर द्वितीय महायुद्ध तक लगभग चौबीस वर्षों तक आप विदेश में भारतीय स्वाधीनता के लिए योजनाएँ बनाते रहे, लेकिन उपयुक्त समय के अभाव में आप इस दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठा सके। सन् १९३७ में आपने भारतीय स्वातंत्र्य-संघ नामक नयी संस्था स्थापित की, जिसने आगे चलकर देश की आजादी के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। सन् १९३९ में द्वितीय महासमर छिड़ गया, जिसमें जापान की मित्र-राष्ट्रों से शत्रुता थी। जापान ने भी ८ दिसम्बर १९४० को उनके विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। इस समय रासबिहारी बोस की प्रसन्नता का पारावार न रहा। आपने समझ लिया कि अब यही उपयुक्त समय हमारे लिये भारत की आजादी प्राप्त करने का है और इसी मौके पर हम जापानियों की सहायता से अंग्रेजों को भारत से बाहर भगा सकते हैं। आपने इसी बीच टोकियो में रहने वाले सभी भारतीयों की सभा बुलाई, जिसमें एक प्रस्ताव द्वारा भारत को स्वतंत्र राष्ट्र घोषित किया गया। जापानी युद्धकालीन मंत्रिमण्डल ने रासबिहारी बोस की योजना को स्वीकार कर भारतीय स्वातंत्र्य-संघ को मान्यता प्रदान की। आपने दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के भारतीयों को संगठित करने का कार्य प्रारम्भ किया। इस बीच जापानियों के प्रभुत्व में दक्षिण-पूर्व एशिया के प्रायः समस्त देश आ गये थे, जिस कारण उनके इस कार्य में अधिक सहायता मिली।

रासबिहारी बोस ने दक्षिण-पूर्व एशिया के लगभग साठ लाख भारतीयों को संगठित कर यह घोषणा की कि हम लोग भारत की स्वाधीनता के लिए जापान की सहायता करेंगे। अब उन्हें एक ऐसे नेता की आवश्यकता थी, जो उनके कार्य को तेजी से आगे बढ़ा सके। इस समय नेताजी सुभाष बोस जर्मनी में थे। रासबिहारी बोस ने उन्हें जर्मनी से बुलाया और उन्होंने जर्मनी से पनडुब्बी जहाज द्वारा एटलांटिक महासागर होते हुए अपनी ऐतिहासिक यात्रा की। आपके सिंगापुर पहुँचने पर रासबिहारी बोस ने भारतीय स्वातंत्र्य संघ के अध्यक्ष तथा आजाद हिन्द सेना के प्रधान सेनापति की हैसियत से नेताजी सुभाष बोस को सन् १९४३ के मध्य उत्तराधिकारी बनाने की घोषणा की थी वह अत्यधिक मार्मिक थी। आपने कहा था, 'साथियो!

आप मुझसे पूछेंगे कि मैं आपके लिए क्या लाया हूँ। ये हैं सुभाषचन्द्र बोस, जो अब हमें रास्ता दिखायेंगे और हमारे पवित्र आन्दोलन के नेता होंगे। आपकी उपस्थिति में मैं अपने पद से इस्तीफा देता हूँ और नेताजी सुभाष-बोस को भारतीय स्वातंत्र्य-संघ का अध्यक्ष मनोनीत करता हूँ। मैं अब वृद्ध हो गया हूँ और यह कार्य एक युवक के लिए उपयुक्त होगा।' 'रासबिहारी बोस के इस वक्तव्य से स्पष्ट है कि उन्हें किसी प्रकार की पद-लिप्सा नहीं थी और वे सच्चे हृदय से भारत की स्वाधीनता के उपासक थे।

इसके बाद का समय भारतीय इतिहास में काफी घटनापूर्ण रहा। इससे कुछ समय ही पूर्व भारतमें महात्मा गाँधी ने 'करो या मरो' तथा 'भारत छोड़ो' का आन्दोलन छेड़ दिया था। स्वदेश के अन्दर अशान्ति की लहर तो थी ही, उधर जापानियों की सहायता से नेताजी की फौजें चटगाँव, कोहिमा एवं इम्फाल की ओर अग्रसर हो रही थीं; लेकिन एकाएक युद्ध की परिस्थिति बदल गयी। धुरी-राष्ट्र हारने लगे। टोकियो पर भी बम के गोले गिरने लगे। रासबिहारी बोस इस समय बीमारी की अवस्था में टोकियो में ही थे। वे इसी शुभ-संवाद की प्रतीक्षा में थे कि आजाद हिन्द सेना भारत पहुँच सके; लेकिन यह कहाँ सम्भव था। अन्त में २१ जनवरी सन् १९४५ को आपने सर्वदा के लिए अपनी आँखें मूँद लीं और देश को अपने जीवन-काल में मुक्त देखने का आपका स्वप्न साकार न हो सका। जापान की जनता में आप अत्यधिक लोकप्रिय थे। जापानी आपको 'आचार्य' के रूप में सम्बोधित करते थे। जापान में रहते हुए भी आपका ममत्व देश के प्रति था और आपका लगाव भारत की मिट्टी से था। मरने के समय आपके हाथ में रुद्राक्ष की माला थी। देश के प्रति ममत्व होने के बावजूद आपका हृदय मानवतावादी था, जिसकी पूर्ण गरिमा के दर्शन आपके वसीयतनामे से प्रकट है। अपने वसीयतनामे में आपने लिखा था—' मेरी मृत्यु के बाद मेरा शव अनुसंधान-कार्य करने के लिए किसी विश्वविद्यालय को दे दिया जाय।' इससे स्पष्ट है कि आपका हृदय कितना उदारवादी एवं मानवतावादी था।—२/७०बी, रामानंदनगर, इलाहाबाद

(पृष्ठ १४ का शेष)

"वैलेन्टाइन डे" हावी होता जा रहा है। पिछली बार तो हद हो गई। किसी कार्ड कम्पनी ने करवाचौथ पर "हसबैंड डे" का कार्ड निकाल दिया। वाह रे ! संस्कृति सम्पन्न परन्तु बौद्धिक विपन्न हिन्दू। अपनी सम्पन्नता को स्थाई रखने हेतु हमें अपनी संस्कृति से जुड़ना होगा, अपनी संगठनात्मक शक्ति लगानी होगी। हमें भाषा-पंथ के भेदों को भूलकर एक संवत् तथा नववर्ष पर मतैक्य का परिचय देना होगा। नववर्ष मनाने से हिन्दू नववर्ष की गरिमा बढ़ेगी और हमारी एकता भी दिखेगी। वैदिक-पौराणिक, बौद्ध, जैन, सिख जैसे विभिन्न पंथों एवं भाषा प्रान्तों के अथाह सागर से हिन्दू समाज के लिए एक संवत् ही सर्वोत्तम होगा। इसी प्रकार नववर्ष के रुप में अन्य प्रान्तीय एवं पंथिक नववर्ष की अपेक्षा चैत मास के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि अर्थात् "वर्ष-प्रतिपदा" पर हमें एकमत होना चाहिए। कहते हैं कि ब्रह्मा ने सृष्टि-रचना इसी दिन से प्रारम्भ किया था। कलि-संवत्, विक्रम-संवत् तथा शक-संवत् का नववर्ष वर्ष-प्रतिपदा ही है। अपनी विशेष उपस्थिति हेतु हिन्दू समाज को अपना नववर्ष एक मत से वर्ष-प्रतिपदा का मनाना चाहिए। आवश्यकता है हिन्दू शक्तियों को अपनी शक्ति लगाने की। हमें अपनी काल-गणना में भी धीरे-धीरे ईसा-संवत् को त्यागने पर गौर करना चाहिए। नववर्ष आगामी वर्ष प्रतिपदा अपनी वैदिक संस्कृति के अनुसार मना कर अपनी एकता का परिचय देंगे। —हीरापुर, धनवाद, (झारखण्ड)

दयानन्द संस्थान, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
इब्राहीमपुर, दिल्ली-३६ का

भव्य वार्षिकोत्सव

१ मार्च सोमवार से १६ मार्च २००३ तक समारोह पूर्वक मनाया जाएगा।

१ मार्च से योगसधना शिविर आरम्भ होगा। इस शिविर में भाग लेने वाले अपना स्थान पहले से ही सुरक्षित कर लें। हम केवल २० व्यक्तियों को ही स्थान दे पाएँगे।

१४ मार्च को महात्मा वेदभिक्षुः का ७५वाँ जन्मदिवस मनाया जाएगा।

१६ मार्च रविवार को विशेष कार्यक्रम आयोजित होगा। जिसमें भाग लेने केलिए सुप्रसिद्ध वैदिकविद्वानों तथा प्रमुख विचारकों एवं राष्ट्रीय नेताओं को आमंत्रित किया गया है। आर्यसमाजों के मन्त्री और प्रधान अभी से निश्चय कर लें कि उन्हें समाजों से बस लेकर यहाँ पहुँचना है। विशेष जानकारी अगले अंकों में देखिए।

—स्वामी जगदीश्वरानन्द
आचार्य दयानन्द संस्थान

भारत गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति : भारतरत्न राष्ट्र-मूर्ति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद

संकलक : ओ.प्र. पण्डित

यदि मुझे सोने की कलम मिल जाए, जिसे मैं शहद की दवात में डुबो सकूँ, फिर भी उनके बारे में लिखने के लिए, काफी नहीं होगा। मेरे मन में ऐसी तस्वीर उभरती है जो किसी शस्त्रधारी योद्धा की-सी नहीं बल्कि वह तस्वीर एक फरिश्ते की है, जिसके हाथ में कलम है और उसने जनता के दिल को जीत लिया है। भारत-कोकिला सरोजिनी नायडू ने जिस राष्ट्र-मूर्ति के विषय में ये पंक्तियाँ कही हैं, ऐसे महापुरुष थे डा. राजेन्द्रप्रसाद। उनका जन्म बिहार प्रान्त के अन्तर्गत सारन जिले के जीरादेई गाँव में ३ दिसम्बर, १८८४ ई. को हुआ था। आपके पिता मुंशी महादेवराय जमींदार थे। राजेन्द्र बाबू उनकी सबसे छोटी संतान थे। आपके पिता साधु स्वभाव के व्यक्ति थे और माता धर्मपरायण महिला थीं। आप पर माता-पिता की अपेक्षा अपने बड़े भाई महेन्द्रप्रसाद का प्रभाव अधिक पड़ा। प्रारंभिक शिक्षा घर पर पूरी करने के बाद, ९ वर्ष की आयु में आपको छपरा के जिला स्कूल में प्रविष्ट किया गया था। १९०२ ई. में वहीं से कलकत्ता यूनिवर्सिटी में सर्वप्रथम रहकर मैट्रिक की परीक्षा पास की। १९०६ ई. में कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलिज से बी.ए. और १९०७ ई. में एम.ए. तथा १९१५ ई. में एम. एल. की परीक्षा उत्तीर्ण की। आप प्रारंभ से ही मेधावी छात्र रहे। मैट्रिक से लेकर एम.एल. तक की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उतीर्ण कीं। इस अवधि में आपको अनेक छात्रवृत्तियाँ और पदक मिले।

सन् १९०६ ई. में आपको राष्ट्र-प्रेम का गुरुमंत्र मिला, जब आप पंजाबकेसरी लाला लाजपतराय, क्रांतिकारी अरविन्दघोष, गोपालकृष्ण गोखले, बंगाल के प्रसिद्ध नेता सुरेन्द्रनाथ बनर्जी तथा पंडित मदनमोहन मालवीय—जैसी महान् विभूतियों के सम्पर्क में आए।

सन् १९११ ई. में आप कलकत्ता हाईकोर्ट में वकालत करने लगे थे। उनकी मशहूरी एक वकील के रूप में सारे शहर में फैल गई। मुख्य न्यायाधीश आशुतोष मुखर्जी भी उनकी प्रतिभा से बेहद प्रभावित हुए और उन्होंने राजेन्द्रबाबू को 'लॉ-कॉलिज' में अध्यापन कार्य के लिए आमंत्रित कर लिया। यहाँ पर आप १९१४ ई. तक कार्यरत रहे। इससे पहले भी आप मुजफ्फरपुर में अध्यापन का कार्य कर चुके थे। सन् १९१८ ई. में पटना हाईकोर्ट की स्थापना हुई। राजेन्द्रबाबू पटना चले आये। सन् १९२० ई. तक वहाँ वकालत की। आपने वहाँ भी अपनी योग्यता का झंडा गाड़ दिया। वकालत के पेशे से उनकी आमदनी लगभग तीन-चार हजार रुपये प्रतिमास थी परन्तु सारा धन गरीबों की सेवा में ही खर्च होता रहता था। जब उन्होंने वकालत छोड़ी, तो उनकी पासबुक में केवल १५ रु. थे।

उसी दौरान पटना विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। उसके विधेयक में कुछ कमियाँ थीं। आपने उनका विरोध किया और उ.में सुधार कराया। आप इस विश्वविद्यालय के सिनेट के सदस्य भी रहे। उन्हीं दिनों सम्पूर्ण देश में असहयोग आन्दोलन का बिगुल बज गया। चम्पारन में सत्याग्रह हुआ और इस सत्याग्रह ने राजेन्द्रबाबू को नये क्षेत्र में लाकर खड़ा कर दिया। आपने वकालत छोड़ दी। यह सन् १९२० ई. की बात है। आपके कुशल नेतृत्व में इस वर्ष का सत्याग्रह आन्दोलन इतने जोर-शोर से चला कि बिहार की जेलें सत्याग्रही कैदियों से भर गईं। इस आन्दोलन में विद्यार्थी भी पीछे नहीं रहे थे।

राजेन्द्रबाबू हिन्दी-प्रेम के लिए शुरू से ही मशहूर थे। उन्होंने सन् १९१८ ई. में बिहार के प्रसिद्ध अंग्रेजी पत्र 'सर्च लाइट' की स्थापना की थी और 'देश' नामक हिन्दी साप्ताहिक का भी प्रकाशन प्रारंभ किया था। इस हिन्दी-प्रेम के कारण ही अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने सन् १९३६ ई. में अपने नागपुर अधिवेशन में उन्हें सभापति बनाया था। इसके पूर्व सन् १९२६ ई. में बिहार प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन दरभंगा के तथा सन् १९२७ ई. में संयुक्त प्रान्त के हिन्दी साहित्य सम्मेलन के काँगड़ी अधिवेशन के सभापति बने। इतना ही नहीं, अंग्रेज सरकार द्वारा चलाये जाने वाले कॉलिजों और स्कूलों का बहिष्कार करने तथा इस आन्दोलन को साकार रूप देने के लिए आपने 'बिहार विद्यापीठ' नामक एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की भी स्थापना की, जिसमें आपने सबसे पहले अपने बेटों को दाखिल

कराया था।

६ अप्रैल, १९३० ई. को राजेन्द्र बाबू ने देशव्यापी सत्याग्रह में बिहार का नेतृत्व किया। लाखों की संख्या में स्वयंसेवक नमक बनाने के लिए जुलूस बनाकर निकले। जिला मजिस्ट्रेट की कठोर चेतावनी के बावजूद भी राजेन्द्रबाबू अपने नेतृत्व पर अडिग रहे, सत्याग्रह जून तक चला। यह सत्याग्रह सदा के लिए यादगार बनकर रह गया। १५ जनवरी सन् १९३४ ई. की बात है। उन दिनों राजेन्द्रबाबू जेल के अस्पताल में थे। अचानक उनकी चारपाई डोलने लगी। बिहार भयंकर भूकम्प की चपेट में आ गया। बिहार की दारुण दशा से सारे संसार का दिल काँप गया। राजेन्द्रबाबू का दिल पीड़ितों की आवाज से पिघल गया और वह तपस्वी उनकी सेवा के लिए दौड़ पड़ा। उन्होंने 'बिहार अर्थ क्वेक रिलीफ सोसाइटी' बनाकर पीड़ितों की जो सेवा और सहायता की, वह उनके सार्वजनिक जीवन की एक बेजोड़ कहानी बन गई। वे लोगों की श्रद्धा के पात्र बन गये।

सन् १९४२ ई. की महान् क्रान्ति का शंखनाद हुआ। 'भारत छोड़ो' का प्रस्ताव और 'करो या मरो' का जय-घोष हुआ। राजेन्द्रबाबू को सभी नेताओं के साथ गिरफ्तार कर लिया गया और अज्ञात स्थान पर जेल भेज दिया गया। वे १९४५ ई. तक जेल में ही रहे। इस प्रकार स्वतंत्रता-संग्राम के सिलसिले में आप अनेक बार जेल गए। राजनीतिक उथल-पुथल और अनेक परिवर्तनों के बाद २ सितम्बर, १९४६ ई. को भारत में अन्तरिम सरकार बनी और राजेन्द्रबाबू को इस अन्तरिम सरकार में कृषि और खाद्य मंत्री बनाया गया। आपने इन पदों पर कुशलता से काम किया। उसी वर्ष आप स्वतंत्र भारत का संविधान बनाने के लिए बनाई गई संविधान सभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। उस सभा का आपने निपुणता से संचालन किया।

२४ जनवरी, १९५० ई. को मंगलवार की मंगलमय बेला में स्वतंत्र भारत की विधानसभा ने एकमत होकर राजेन्द्रबाबू को अपने देश भारत के गणराज्य का प्रथम राष्ट्रपति चुना। २६ जनवरी को उन्होंने शपथ ली और गौरवशाली पद को धारण कर लिया। अपनी राष्ट्र-भक्ति, त्याग, सेवा और तपस्या के कारण ही वे पुनः सन् १९५७ में राष्ट्रपति-पद पर निर्वाचित हुए। उन्हीं दिनों की एक घटना है, जो सभी के दिल को छू जाती है। उनका एक पुराना परिचारक था, उसका नाम था तुलसी। वह स्वभाव से लापरवाह था। उसकी लापरवाही एक आदत बन गई थी। एक दिन उसने राजेन्द्रबाबू का हाथी-दाँत से बना हुआ प्रिय फाउण्टेनपेन तोड़ डाला और स्याही से कालीन भी गंदा कर दिया। राजेन्द्रबाबू जब दफ्तर आए तो वे यह दृश्य देखकर बड़े नाराज हुए। उन्होंने अपने सचिव से कहकर उसका दूसरी जगह स्थानान्तरण करवा दिया, परन्तु उनके दिल को ऐसा लगा कि उन्होंने तुलसी के साथ ठीक व्यवहार नहीं किया है। उन्होंने सचिव से कहकर तुलसी को बुलवाया। तुलसी बेचारा इतना डर गया था कि उसने सोचा न मालूम अब क्या विपत्ति आने वाली है। वह घबराया हुआ, राजेन्द्रबाबू के पास आकर खड़ा हो गया। इधर राजेन्द्रबाबू तुलसी के सामने दीन-भाव से हाथ जोड़ कर कहने लगे, 'तुलसी मुझे माफ कर दो।' तुलसी बेचारा और भी डर गया कि आज बाबूजी उससे इतने दीन-भाव से माफी क्यों माँग रहे हैं? किन्तु राजेन्द्रबाबू जब तक क्षमा-याचना करते रहे, जब तक कि तुलसी के भर्राये हुए कंठ से सांत्वना के दो शब्द नहीं निकल गये। यह थी उनकी महानता। १९६२ ई. में उन्होंने स्वेच्छा से इस पद से मुक्ति ले ली और पटना में स्थित सदाकत आश्रम में रहने लगे।

सन् १९६२ ई. में राजेन्द्रबाबू को उनकी प्रशंसनीय सेवाओं को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने सर्वोच्च अलंकार 'भारत-रत्न' से विभूषित किया था। अगले वर्ष ही २८ फरवरी, १९६३ ई. को सम्पूर्ण देश शोक-सागर में डूब गया। राजेन्द्रबाबू अनन्त में लीन हो गए। सदाकत आश्रम में उनकी समाधि बना दी गई।

—आई.एन.एस. भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली

जन-जन की भाषा है हिन्दी, भारत माता के मस्तक की बिन्दी

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। हिन्दी का प्रचार प्रसार करना हम सभी का दायित्व है। अतः आप अपने सभी लेखन कार्य, पत्र तथा निमन्त्रण पत्र, अपने हस्ताक्षर आदि देवनागरी लिपी में ही लिखने का निर्णय करें। —संपादक

भारत-गणराज्य के वर्तमान राष्ट्रपति

डॉ. अविल फकीर जलालुद्दीन अब्दुल कलाम

—डा. इन्द्र सैंगर

'मुझे भारतीय होने पर गर्व है। यह एक महान् देश है। मैं हमेशा इसकी सेवा करता रहूँगा। हमारा राष्ट्रीय नजरिया ही हमारा राष्ट्रीय ध्येय होना चाहिए। मैं खालिस देसी आदमी हूँ। इस देश की मिट्टी, पानी और हवा तक से मुझे वेपनाह मुहव्वत है। अगर पुनर्जन्म संभव हो, तो मैं इसी देश में दोवारा पैदा होना चाहूँगा।' ऐसी राष्ट्रीय विचारधारा के संपोपक एवं विज्ञान-जगत् के मनीपी वैज्ञानिक भारत के वर्तमान राष्ट्रपति डा. अविल फकीर जलालुद्दीन अव्दुल कलाम का जन्म १५ अक्टूवर सन् १९३१ ई. को तमिलनाडु के दक्षिण पश्चिमी तटीय क्षेत्र में स्थित धनुपकोटि रामेश्वरम नामक स्थान में हुआ था। यह स्थान वही स्थान है जहाँ भगवान राम ने क्रोध में आकर समुद्र को सुखा डालने के लिए अपना आग्नेयवाण निकाल लिया था क्योंकि समुद्र उनके सविनय निवेदन को सुन ही नहीं रहा था। वह वही जगह है जहाँ सन्त विवेकानन्द ने भारतीय युवकों को शक्तिशाली वनने का उपदेश दिया था। यह वह समय था जिन दिनों भारत में स्वतंत्रता-संग्राम की आँधी वड़े जोरों से चल रही थी। सूचना पाने और सूचना देने के लिए उन दिनों अखवार ही शक्तिशाली माध्यम थे। इतना वड़ा माध्यम कि उनकी विक्री से रोजी-रोटी का जरिया भी वनाया जा सकता था। इसलिए आपके पिता फकीर कलाम ने समुद्र में मछली पकड़ने के धन्धे को त्याग कर अखवार वेचने का धन्धा अपना लिया था। इसी अखवार वेचने वाले साधारण आदमी के घर विज्ञान-जगत् के सवसे वड़े प्रक्षेपास्त्र वैज्ञानिक अविल फकीर जलालुद्दीन अव्दुल कलाम का जन्म हुआ था। डॉ० कलाम के नाम के प्रारंभ में 'फकीर' और अन्त में आने वाले 'कलाम' शब्द उनके पिताजी के नाम के द्योतक हैं।

आपके पूर्वजों का संवंध रामेश्वरम मंदिर से वहुत निकटता का रहा है। किंवदन्ती है कि इस मंदिरकी प्रसिद्ध शिव प्रतिमा एक वार मंदिर के परिसर में स्थित सरोवर में गिर गई थी। तव कलाम साहव के एक पूर्वज द्वारा ही उसे डुवकी लगाकर वाहर निकाला गया था। तव से मकरसंक्रांति की शिव-पूजा के वाद जिन तेरह व्राह्मणों को शिव-प्रसाद सवसे पूर्व प्रदान किया जाता था, उनमें से एक गैर-व्राह्मण अर्थात् कलाम साहव के पूर्वज भी हुआ करते थे।

इस प्रकार के पारिवारिक वातावरण का प्रभाव डॉ. कलाम के व्यक्तित्व पर भी पड़ा। आपने सवसे पहली वार 'राकेट' की कल्पना रामलीला में इस्तेमाल किए जाने वाले प्रक्षेपक को देखकर ही की थी। यह उनके पारिवारिक परिवेश का ही प्रभाव है कि वे अपनी वातचीत में 'हिन्दू माइथालॉजी' का अत्यधिक प्रयोग करते हैं।

आपकी प्राथमिक शाला की पढ़ाई रामेश्वरम में ही हुई। आपने रामनाथपुरम में 'स्क्वार्ट्ज मिशनरी हाई स्कूल' से हायरसेकेंड्री की परीक्षा प्रथमश्रेणी में उत्तीर्ण की। आगे की पढ़ाई करा पाना एक गरीव अखवार विक्रेता के लिए हिमालय-जैसी दीवार लाँघने के समान था। अतः आपके पिता ने आपको एक स्कूल में अध्यापक वन जाने की सलाह दी, लेकिन आपके वावा आपको आगे पढ़ाने के पक्ष में थे। जहाँ चाह, वहाँ राह होती है। कलाम के वावा ने एक तरकीव तलाश ही ली। अपने एक वढ़ई मित्र की सहायता से घर में पड़े लकड़ी के कुछ तख्तों की एक नाव निर्मित करा ली और वह समुद्र में मछली पकड़ने वाले मछेरों को किराए पर दे दी। नाव से मिलने वाले किराए से कलाम की आगे की पढ़ाई के लिए एक सम्वल मिल गया।

अव्दुल कलाम आगे की पढ़ाई के लिए त्रिचुरापल्ली के सेंट जोसेफ कालिज में भरती हो गए। उन्हीं दिनों एक और घटना घटित हुई। अव्दुल कलाम जव छुट्टियों में घर आए तो पिताजी के साथ एक दिन वे अखवारों की छँटनी करा रहे थे, उसी वीच उनकी दृष्टि अखवार में 'स्पिटफायर' (मंत्रवाण) शीर्पक लेख पर पड़ी। इसका इस्तेमाल द्वितीय विश्वयुद्ध में एलायड फोर्सेस द्वारा किया गया था। यह वही अस्त्र था, जिसके द्वारा सेनाओं ने शत्रु-सेनाओं पर वमवारी की थी। वास्तव में यह आग्नेयास्त्र मिसाइल ही था। इसे पढ़कर कलाम के मानस में वचपन

में पैठा हुआ प्रक्षेपक का स्वप्न फिर चमकने लगा।

वी.एस-सी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के उपरान्त उनके सामने फिर अर्थ-संकट उत्पन्न हुआ, लेकिन इस वार उन्होंने स्वयं की साधना की नाव का सहारा लिया। उन्होंने 'हिन्दू' अखवार में विज्ञान पर कुछ फीचर लिखने प्रारंभ किए। वच्चों को ट्यूशन पढ़ाना भी शुरू कर दिया और कॉलिजों में लेक्चर देना भी शुरू कर दिया। इन विभिन्न अवलम्वनों से अपनी पढ़ाई को कायम रखते हुए आपने आगे की पढ़ाई के लिए 'मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग' में प्रवेश ले लिया, जहाँ से आपने प्रथम श्रेणी में 'एयरोनॉटीकल इंजीनियरिंग' की डिग्री प्राप्त की।

यद्यपि डॉ. कलाम ने पी-एच.डी. ही नहीं की है तथापि अनेक विश्वविद्यालयों ने उन्हें पी-एच.डी. की मानद उपाधि से विभूषित किया है। आपने जिन दिनों वैमानिकी में डिग्री प्राप्त की थी, उन दिनों भारत ही क्या पूरे यूरोप में इस क्षेत्र में इंजीनियरों का अभाव था। विदेशों में भी इस क्षेत्र में कैरियर वनाने के अनेक सुअवसर थे। लेकिन आपके मानस में देश-सेवा और वचपन का स्वप्न साकार करने का संकल्प जाग रहा था। अतः आपने तय किया कि कैरियर की परवाह के लिए देश-सेवा का अवसर नहीं गँवाऊँगा और आप १९५८ ई. में डिफेंस एण्ड डिवलपमेंट आर्गेनाइजेशन से जुड़ गए।

उपर्युक्त संस्थान के हैदरावाद केन्द्र में आप ५ साल तक महत्वपूर्ण अनुसंधान में संलग्न रहे। दुर्भाग्यवश १९६२ ई. में चीन ने भारत पर आक्रमण करके भारत को करारी पराजय दी। अतः युद्ध के वाद निर्मित एक कमेटी ने निर्णय किया कि देश की सामरिक शक्ति को यथासंभव वढ़ाया जाए। इसी दौरान कलाम ने कई महत्वाकांक्षी परियोजनाएँ वनाई, लेकिन १९६३ ई. में आपको स्थानांतरित करके त्रिवेन्द्रम में स्थित विक्रम साराभाई स्पेस रिसर्च सेंटर में भेज दिया गया। जो इसरो (इंडियन स्पेस रिसर्च आर्गेनाइजेशन) का एक सहयोगी संस्थान था। यहाँ उन्हें एस.एल.वी.पी. (सेटेलाइट लांच वेहीकल प्रोग्राम) का चार्ज सौंपा गया। आपने सन् १९८० ई. तक इस केन्द्र में कार्य किया। अपने इस लम्वे सेवाकाल में आपने भारत को एक महत्वपूर्ण मुकाम पर पहुँचाया। यह आपकी ही साधना का श्रेय है कि भारत कृत्रिम उपग्रहों के क्षेत्र में पहली पंक्ति के देशों में शामिल हो गया। आप एस.एल.वी-३ परियोजना के निदेशक थे।

आपके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए सी.आई.आई. (कनफेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री) के तकनीकी सलाहकार श्री वाई.एस. राजन का मत इस प्रकार है—'मुझे वे भारतीय मनीषियों की कोटि के व्यक्ति लगते हैं। उनका ऋषिवत् जीवन, भेदभाव रहित व्यवहार, उनका प्रेरणादायी साथ मेरे अतीत की अमूल्य धरोहर है।'

भारत के पास अपने उपग्रहों के प्रक्षेपण के लिए अपना राकेट नहीं था, इसलिए भारत ने 'आर्यभट्ट' के प्रक्षेपण के लिए रूसी राकेट की मदद ली थी। अरसे से स्वदेशी राकेटों की जरूरत महसूस की जा रही थी और अंततः भारत अपना राकेट वनाने में सफल रहा।

आर्यभट्ट के प्रक्षेपण से भी वड़ी सफलता उससमय मिली, जव भारत ने अपने राकेट 'एस.एल.वी.-३' (सेटेलाइट लांच वेहिकिल) से अपने उपग्रह 'रोहिणी' को सफलतापूर्वक उसकी कक्षा में स्थापित कर दिया। १७ अप्रैल, १९८३ को एस.एल.वी.-३ की चौथी और आखिरी उड़ान हुई। प्रक्षेपण के दस मिनट के अंदर ही इसने 'रोहिणी आर.एस.डी.-२' उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा में स्थापित कर दिया। चार खंडीय राकेट एस.एल.वी.-३ में ठोस ईंधन श्रेष्ठतम प्रणाली का प्रयोग किया गया था। २२ मीटर लंवे, १८ टन भारी इस राकेट का निर्माण विक्रम साराभाई केंद्र में किया गया था। राकेट 'एस.एल.वी.-३' परियोजना के भी निदेशक डॉ. कलाम ही थे। डॉ. कलाम ने प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम को भी वखूवी अंजाम दिया है। 'पृथ्वी' सीमित दूरी पर अचूक सीमित मारक क्षमता किंतु श्रेष्ठ तकनीक का पर्याय है। हमारा 'पृथ्वी' प्रक्षेपास्त्र धरती से धरती (सरफेस टू सरफेस-एस.एस.) पर मार करने वाला प्रक्षेपास्त्र है। २२ फरवरी, १९८८ को ४० से १५० किमी. की दूरी तक प्रहार कर सकने वाली 'पृथ्वी' का श्रीहरिकोटा राकेट परीक्षण केंद्र से सफल परीक्षण किया गया।

८.५ मीटर लंवे इस प्रक्षेपास्त्र की १,००० किग्रा. की विस्फोटक सामग्री में दुश्मन के अड्डों को तवाह करने की पर्याप्त क्षमता मौजूद है। पृथ्वी का सफल परीक्षण करके प्रक्षेपास्त्रों के क्षेत्र में भारत ने एक सीमा को तोड़ा था, लेकिन २२ मई, १९८९ को 'अग्नि' की सफलता से

भारत ने इस दिशा में एक लंबी छलाँग भरी।

दो चरणीय प्रक्षेपास्त्र 'अग्नि' का अभिकल्पन, निर्माण, कलपुर्जे और सभी प्रणालियाँ स्वदेशी हैं। हैदरावाद स्थित डी.आर.डी.ओ. में प्रायः १,००० कर्मिकों ने इसे अंजाम दिया है। जिसमें ४०० वैज्ञानिकों ने भारतीय प्रक्षेपास्त्रों के विकास पुरुष डॉ. अब्दुल कलाम और पुनर्प्रवेशयान विशेषज्ञ आर.एन. अग्रवाल के निर्देशन में अपने तकनीकी कौशल का परिचय दिया है और प्रक्षेपास्त्र प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत को ठोस आधारशिला प्रदान की है। २१ मीटर लंबी 'अग्नि' प्रणाली का कुल भार १६ टन है। कलाम का कहना है कि यह लंबी दूरी का प्रक्षेपास्त्र है। साधारण ईंधन भार के साथ यह २५०० किलोमीटर तक जा सकता है और भारी ईंधन भार के साथ यह ३५०० किलोमीटर तक प्रहार कर सकता है।

प्रक्षेपास्त्रों के निर्माण के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने जुलाई, १९८३ में एक परियोजना की आधारशिला रखी थी। जिसका नाम था—'समेकित निर्देशित प्रक्षेपास्त्र विकास कार्यक्रम' (इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम—आई.जी.एम.डी.पी.) और इस योजना की शुरुआत के लिए उन्होंने ३८० करोड़ रुपये की धनराशि स्वीकृत की। डॉ. कलाम को इस परियोजना का निदेशक बनाया गया। प्रायः छ वर्षों की लघु अवधि में ही भारत ने अपने पाँच प्रक्षेपास्त्रों का सफल परीक्षण कर लिया। **विज्ञान-ऋषि डॉ. कलाम ने इन सफलताओं का श्रेय स्वयं कभी नहीं लिया अपितु अपने सभी सहकर्मियों की मिली-जुली क्षमताओं को श्रेय दिया है।** वे कहते हैं, 'हमारी इस सफलता का राज है संयुक्त योजना तथा संयुक्त कार्यक्रम।'

जुलाई, १९९२ ई. से डॉ. कलाम डी.आर.डी.ओ. के महानिदेशक, रक्षामंत्रालय के वैज्ञानिक सलाहकार और 'रक्षाअनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव भी रहे।

डॉ. कलाम हैदरावाद में रहते समय अपने सरकारी आवास में मात्र एक कमरे में रहते थे। साधारण-सी कमीज, खाकी नेकर और मामूली चप्पलें पहने प्रयोगशाला परिसर में उन्हें पैदल आते-जाते देखकर किसी भी कर्मचारी को आश्चर्य नहीं होता था, क्योंकि सहजता उनमें रच-बस चुकी है। **उनका पुस्तक संग्रह भी विशाल है। जिसमें भारतीय दर्शन के ग्रंथ हैं तो बालमन को रिझाने वाली कथा-कहानियों की किताबें भी।** डॉ. कलाम को वीणावादन का शौक है। उनके पास एक छोटी-सी स्कूल नोटबुक है, जिसमें वह प्रायः रात को तमिल में कविताएँ लिखते रहे हैं। **उनके तीन शौक हैं—पढ़ना, संगीत सुनना और कविताएँ लिखना और वे किसी-न-किसी तरह अपने शौक पूरे करने के लिए वक्त निकाल ही लेते रहे हैं।**

डॉ. कलाम अपने रहन-सहन और दिनचर्या में ही नहीं, बल्कि सोच और समझ में भी पूरी तरह से भारतीय हैं। हालाँकि उनको अमरीका और यूरोप के तमाम आकादमिक संस्थानों ने अपने यहाँ आने के लिए बड़े लालच दिये हैं। लेकिन डॉ. कलाम ने एक बार भी इस तरह के प्रस्तावों के बारे में नहीं सोचा। एक बार जब वे १९६० के दशक में नासा (नेशनल एयरोनॉटिक्स एण्ड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन) के वैलोप्स आईलैण्ड रॉकेट सेंटर में ४ महीनों के अध्ययन के लिए गये थे, तो **अमरीकी विज्ञान अकादमियों ने उन्हें वहीं बने रहने के तमाम लालच दिये थे, जिन्हें डॉ. कलाम ने यह कहकर ठुकरा दिया था कि मेरे गरीब देश को मेरी ज्यादा जरूरत है।**

शुद्ध शाकाहारी डॉ. कलाम वैदिक और तमिल साहित्य के शौकीन हैं। डॉ. कलाम ने मिसाइल के अलावा अर्जुन टैंक के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सिर्फ हथियार ही नहीं, उन्होंने अपंगों के लिए भी 'डिफेंस तकनीक' को इस्तेमाल करने की पहल की है। उन्होंने डॉ. वी. सोमा राजू के साथ मिलकर शरीर के तमाम कृत्रिम अंगों को बनाने में उच्च रक्षा तकनीक का इस्तेमाल किया है। उन्होंने हैदरावाद की रक्षा प्रयोगशाला में सस्ते 'पेसमेकर' भी बनवाये हैं। **डॉ. कलाम महज एक विज्ञानी भर ही नहीं हैं, बल्कि सही अर्थों में वे समाज के शुभचिंतक और मनीषी हैं।** जैसा कि **वाई. एस. राजन ने कहा भी है कि वे भारत के ऋषि परंपरा के मनीषी हैं।**

आपको भारत सरकार द्वारा सन् १९८१ ई. में 'पद्मभूषण' से और सन् १९९० ई. में 'पद्मविभूषण' से सम्मानित किया गया। यह हार्दिक प्रसन्नता की बात है कि 'भारतीय मिसाइल अभियान' के इस पुरोधा को १९९७ ई. में राष्ट्र के सर्वोच्च नागरिक अलंकरण 'भारत-रत्न' से सम्मानित किया गया था। गत वर्ष से वह भारत के राष्ट्रपति पद पर आसीन हैं। ०००

भारतीय गणतन्त्र जिनकी कल्पना थी—सपना था

स्वतंत्रता प्राप्ति में आर्यसमाज का योगदान

❑ आर्य श्यामनारायण लाल एम.ए.

स्वराज्य एवं स्वतंत्रता का बीजमंत्र वस्तुतः अपौरुषेय वेद में ही है। आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती ईश्वर-वेद और उनकी आज्ञाओं को अपने प्राणों से अधिक प्रिय समझते थे।

डॉ. सम्पूर्णानन्द जो उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री तथा राजस्थान के राज्यपाल भी रहे थे, दिल्ली विश्वविद्यालय के दीक्षान्त भाषण में उन्होंने गौरवपूर्ण शब्दों में कहा था कि **'वेद रहेंगे तो बहुत सी गीता लिखी जा सकेंगी।'** उनका कथन वस्तुतः सत्य है।

सामवेद में मंत्र ४०९, ४१० एवं ४१२ में स्पष्ट रूप से स्वराज्य एवं गणराज्य स्थापना की प्रेरणा दी गई है।

"स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" के उद्घोषक लोकमान्य तिलक जब अभी कर्म क्षेत्र में भी नहीं आये थे और स्वराज्य प्राप्ति का अकेले श्रेय बटोरने वाली कांग्रेस का जन्म भी नहीं हुआ था, उससे बहुत पूर्व महर्षि दयानन्द ने 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग अपने अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में किया था। सत्यार्थ प्रकाश, अष्टम समुल्लास में ऋषिवर ने लिखा है :—

अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों में राज्य करने की कथा ही क्या कहना, किन्तु आर्यावर्त में आर्यों का अखण्ड, स्वतंत्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों से पादाक्रांत हो रहा है, कुछ थोड़े राजा स्वतंत्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार से दुःख भोगना पड़ता है। **कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतांतरों के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजापर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा पृथक-पृथक शिक्षा अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। विना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।** तत्कालीन वायसराय लार्ड नाथ ब्रुक से स्वामी जी ने स्पष्ट रूप से अपनी हार्दिक अभिलाषा व्यक्त करते हुए कहा कि **मेरे देशवासियों के विकास के लिए और संसार के राष्ट्रों में सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिये भारतवर्ष शीघ्र स्वाधीनता** प्राप्त करे। अपने कालजयीग्रंथ 'आर्याभिविनव' में महर्षि ने लिखा है **"अन्य देशवासी राजा, देश में कभी न हो तथा हमलोग पराधीन कभी न हों। हे कृपासिन्धु भगवान् हम पर सहायता करो जिससे सुनीतियुक्त हो के हमारा स्वराज्य अत्यन्त बढ़े।**

ऋजुनीति नो वरूणः इस ऋग्वेद मंत्र की व्याख्या में ऋषिवर ने लिखा है-आप वरूण सर्वोत्कृष्ट होने से वरूण हो। सो हमको वर राज्य, वरविधा, परनीति देओ।

ऋषिवर दयानन्द ने आर्यसमाज के दस नियम के तीसरा नियम में लिखा है—**वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना, और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम् धर्म है। मनु महाराज ने मनुस्मृति में कहा है-"वेद अखिलम् धर्ममूलम" तथा धर्मो रक्षित रक्षितः।** अर्थात वेद समस्त धर्म का मूल है तथा जो धर्म की रक्षा करता है, अवश्य रक्षित होता है। ईश्वर के नियम सत्य हैं, शाश्वत हैं, अटल हैं, एवं अपरिवर्तनशील हैं। ऋग्वेद (मंत्र १०/१९१/४) में संगठन सूक्त का मंत्र है जिसका भावार्थ है।

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरें हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख-सम्पदा।

यजुर्वेद (मंत्र४/अ ३६) में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि हे मानव धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की सिद्धी ईश्वराधीन है। अतः ईश्वर उपासक बन कर्मठ बनो।

सामवेद (मं. २९७) में जीवात्मा-मनुष्य की आयु भी ईश्वराधीन है।

अथर्ववेद (मंत्र १२/५/१) में ईश्वर की आज्ञा है, आदेश है नेक सलाह है **"श्रमेण तपसा सृष्टा"** हे मानव, ईश्वर ने सृष्टि संसार की रचना इसलिए की है कि मनुष्य श्रम, पुरुषार्थ कर सके और धर्म के मार्ग पर चल सके। ध्यान देने की बात है कि श्रमेन तपसा सृष्टा लिखा है। भाग्येन, प्रारब्धेन तपसा सृष्टा नहीं कहा गया है।

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के —"स्वमन्तव्यं मंतव्य प्रकाश" अध्याय में लिखा है कि **पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा इसलिए है कि जिससे संचित प्रारब्ध बनते, जिसके सुधरने से सब सुधरते और जिसके विगड़ने से सब विगड़ते हैं। इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है।"**

इसी अध्याय में उन्होंने कहा है कि "**अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे।** मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुख और हानि लाभ को समझे।

भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति में आर्यसमाज का योगदान सर्वोत्तम है, अतुलनीय है। आर्यसमाज ने जो पुरुषार्थ, त्याग, शौर्य, बलिदान किया है, वह स्वतंत्रता प्राप्ति में नींव का पत्थर है, प्रकाश स्तम्भ है।

ऋषिवर ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में **ईश्वर नाम के पर्यायवाची शब्द, जिनमें सौ नामों की व्याख्या की है, उसमें एक शब्द "भूमि" भी है। यहां भूमि का तात्पर्य मातृभूमि से लेना चाहिये। माताभूमि पुत्रोअहम्** (अथर्ववेद)। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के मुख से कहलाया है—**"जननी जन्मभूमिस्य स्वर्गादपि गरीयसी।"** अर्थात् जननी और जन्मभूमि का महत्त्व स्वर्ग से भी बढ़कर है।

आर्यसमाज के अनुयायियों ने अपने जीवन का मोह-छोड़कर स्वतंत्रता यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति देने में अपना अहोभाग्य, सौभाग्य समझा। स्वतंत्रता प्राप्ति पथ के शूल उन्हें फूल जैसे प्रतीत हुए। कालजयी महाकाव्य कामायनी के प्रणेता कविवर जयशंकर प्रसाद ने अपने नाटक "ध्रुवस्वामिनी" में ओजस्वी शब्दों में लिखा है—

पैरों के नीचे जलधर हों, बिजली से उनके खेल चलें
संकीर्ण कंगारों के नीचे शत-शत झरने वेमेल चलें।
सन्नाटे में हो विकल पवन, पादप निज पद हों चूम रहे
तो भी गिरिपथ का अथक पथिक, ऊपर ऊंचे सब झेल चलें॥

कविवर माखनलाल जी चतुर्वेदी "एक भारतीय आत्मा" ने पुष्प के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्ति पथ के पथिक के लिए कितनी उच्चकोटि केत्याग की भावना को, अभिलाषा को व्यक्त किया है—

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तू फेंक।
मातृभूमि हित शीश चढ़ाने, जिस पथ जायें वीर अनेक॥

उपन्यासकार सम्राट डॉ. वृन्दावनलाल वर्मा ने 'झांसी की रानी' उपन्यास की भूमिका में लिखा है—"हमारे दादा जी ने स्वतंत्रता संग्राम (१८५७) में अंग्रेजों की गोली खाई और हमारी लेखनी ने इस उपन्यास (झाँसी की रानी) लिखने में स्याही खायी है —इस अन्तर को विज्ञजन अवश्य समझेंगे। उन्होंने इसी उपन्यास के परिशिष्ट में एक बलिदानी पुरुष-पुंगव के त्याग का वर्णन किया है—

१८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के महान योद्धा वीरवर तांत्या टोपे को अंग्रेज सरकार गिरफ्तार करना चाहती थी। काफी रुपये का इनाम भी घोषित कर रक्खा था। संयोग से एक राजस्थानी बलिदानी पुरुष ने अपने को तांत्या टोपे घोषित किया और स्वयं को गिरफ्तार करवा दिया। अंग्रेज जज ने प्रश्न किया—ओ तात्या टोपे तुमने क्रांति में क्यों भाग लिया? तात्या टोपे बने बलिदानी ने उत्तर दिया—**"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।** हमने अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए और अपने राजा नाना साहब (जो महारानी लक्ष्मीबाई के सहकर्मी थे।) की आज्ञा से जो भी किया अच्छा किया, कुछ भी बुरा नहीं किया। उस बलिदानी पुरुष को फाँसी दे दी गयी, किन्तु बाद में गुप्तचरों से अंग्रेज शासक को अपनी भूल का पता चला कि गलत व्यक्ति को फाँसी दी गयी है। पुनश्च जब कोई क्रांतिकारी पकड़ा जाता तो अंग्रेज सरकार तात्या टोपे कहाँ हैं? यह प्रश्न अवश्य करती थी।

आर्यसमाज की स्थापना स्वामी दयानन्दने १८७५ में की। स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम १८५७ में हुआ था। अंग्रेजी राज इतना शक्तिशाली कैसे बना, इसे जानने के लिये इतिहास में अंग्रेजी राज्य और उसके शासकों की पृष्ठभूमि का अध्ययन प्रासंगिक होगा। **अंग्रेजी राज की चूंकी के चारों कोणों को दृढ़तर बनाने में चार व्यक्तियों का योगदान बड़ा महत्त्वपूर्ण दूरगामी परिणाम वाला सिद्ध हुआ—**

(१) **प्रथम लार्ड राबर्ट क्लाइव** — जिसने फ्रांसीसी डुप्ले को हराकर अंग्रेजी राज्य की स्थापना की।

(१) **लार्ड वैलेस्ली** — जिन्होंने यह फरमान निकाला कि भारतीय राजाओं, नवाबों को निजी सेना रखने, और कष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। अंग्रेज सरकार सुरक्षा की गारंटी देती है। राजाओं और नवाबों को मात्र सेना का खर्च देना है। इस बात को पहले हैदराबाद के निजाम ने स्वीकार किया। देखा-देखी और राजे-नवाब भी, जो इस षड़यंत्र को समझ नहीं सके, आराम तलबी और काहिल बन गये थे, लार्ड वेलेस्ली के षड़यंत्र का शिकार हो गये।

(३) **लार्ड डलहौजी**— ने यह फरमान निकाला कि जिस राजा के स्वपुत्र नहीं होंगे, उनके वारिस पुत्र को मान्यता नहीं दी जायेगी। उनका राज्य अंग्रेजी राज्य में मिला लिया जायेगा। इसे सुनकर झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई ने कहा था "मैं अपनी झाँसी नहीं दूंगी।"

(४) **लार्ड कार्नवालिस** —ने भारत का शोषण भारतीय एजेन्ट द्वारा हो, इस चालाकी से जमींदारी प्रथा प्रारम्भ की। संयोगवश इस प्रथा का प्रसार मात्र बंगाल (बंगाल, बिहार

और उड़ीसा तीनों एक ही प्रान्त था) तथा यू. पी. के पूर्वांचल के कुछ भागों में ही हो सका। कार्नवालिस की मौत के बाद अन्य जगहों में जमींदारी प्रथा विकसित नहीं हो सकी।

अंग्रेज यद्यपि बाघ की तरह बहादुर जाति है, लेकिन यह लोमड़ी की तरह मक्कार और धोखेबाज भी है। **अंग्रेज पहले अंग्रेज हैं, बाद में ईसाई और इसके बाद में मनुष्य हैं।** अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए वह नीचता की हद तक गिर सकता है। इसके हृदय में छल-कपट, स्वार्थ भरा है। यह कृतघ्न और पूर्णरूपेण अकृतज्ञ है। कवियित्री सुभद्राकुमारी चौहान ने "झाँसी की रानी" कविता में अंग्रेजों के विषय में सत्य ही लिखा है—**"व्यापारी बन दया चाहता था, जब वह भारत आया।"**

आर्यसमाज के संस्थापक ऋषिवर दयानन्द अंग्रेजों की चाल का रोम-रोम पहचानते थे। यह जानकर सुखद, आश्चर्य होता है कि १८५७ का स्वतंत्रता संग्राम यज्ञ में प्रेरणा प्रदान करने में उन्होंने अतुलनीय योगदान दिया था। स्वतंत्रता संग्राम के ५ वर्ष पहले और ५ वर्ष बाद का, स्वामी जी का कार्यकाल अब भी अज्ञात है। महर्षि इन १० वर्षों के गुप्तवास के इतिहास में मौन ही रहे।

गुरुवर स्वामी विरजानन्द ने गुरु दक्षिणा में मांगा—"दयानन्द देश में अज्ञान और अंधकार फैला है, इसे दूर करो और प्राचीन सभ्यता एवं आर्षग्रंथों का प्रचार करो।" इतिहास साक्षी है—ऋषिवर दयानन्द ने गुरु-आदेश को अक्षरसः पालन किया। **यह शाश्वत सत्य है कि स्वराज, स्वतंत्रता, आजादी किसी भी जाति, मुल्क अथवा मनुष्य को प्रिय होती है। स्वतंत्रता ही देश की अस्मिता, गौरवमयी परम्परा तथा उज्ज्वल भविष्य की मेरुदण्ड होती है।**

१९७५ में आर्यसमाज की स्थापना शताब्दी के उपलक्ष्य में दिल्ली में एक भव्य आयोजन हुआ था। इस शुभ अवसर पर अपने एक मात्र सुपुत्र संजय के साथ तथा गढ़हरा-बरौनी आर्यसमाज के सक्रिय सदस्य, कार्यकर्ता, नेता जैसे—श्री ईश्वरलाल आर्य, श्रीरामस्वरूप आर्य तथा आर्यसमाज के कतिपय गणमान्य व्यक्तियों के संग जाने का सुअवसर मुझे मिला।

आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह के सुभअवसर पर आर्यसमाज के प्रखर विज्ञान जस्टिस खन्ना साहब का भाषण चल रहा था। विषय था "भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति में आर्यसमाज का योगदान" अपने भाषण में जस्टिस खन्ना महान क्रांतिकारी आर्यसमाजी, शहीद रामप्रसाद "बिस्मिल" का संस्मरण सुना रहे थे "सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।" विशाल पण्डाल के वृहतमंच पर देश-विदेश के नर-नारी, विद्वान महात्मा, संन्यासी नेतागण-जैसे महात्मा श्री आनन्दस्वामी, पं. श्री भारतेन्द्र नाथ (महात्मा वेदभिक्षुः) पं. श्री प्रकाशवीर शास्त्री श्री जगजीवन राम एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती इन्द्राणी देवी, जर्मनी, मौरिशस आदि के आर्यसमाज के विद्वान विराजमान थे। अपार जनसमूह जस्टिस खन्ना साहब का ओजस्वी भाषण मंत्रमुग्ध होकर श्रवण करने में तल्लीन था। खन्ना साहब कह रहे थे फाँसी के चार दिन पहले शहीद आर्यसमाजी **रामप्रसाद बिस्मिल की माता, क्रांतिकारी शिववर्मा के अनुरोध पर उन्हें साथ लेकर, जेल में पुत्र से मिलने गयीं। माँ को देखकर बिस्मिल की आंखें अश्रुपूरित हो गयीं। माँ ने कहा रामप्रसाद तेरी आँखे सजल क्यों हैं? बेटा, मैं तो अपना हृदय वज्र जैसा बनाकर आयी हूं। अरे हमारा बेटा तो अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए उससे लड़ रहा है, जिसके राज में सुनती हूं, सूरज नहीं डूबता है"। बिस्मिल जी ने उत्तर दिया–"माँ आपका दर्शन बहुत दिनों बाद हुआ है, इसलिये आँख सजल हो गयीं।'** माता और पुत्र के मिलन दृश्य का वर्णन जस्टिस खन्ना ने ऐसे हृदयस्पर्शी, रोमांचकारी और स्नेहसिक्त शब्दों में किया कि उपस्थित अपार जनसमुदाय की आँखें अश्रुपूरित हो गयीं। महात्मा आनन्दस्वामी जी तौलिया से आँखें पोंछ रहे थे। जगजीवन बाबू की धर्मपत्नी श्रीमती इन्द्राणी देवी की आंखों के आँसू थमते नहीं थे। वे बार-बार आँचल से आंखें पोंछ रही थीं।

खन्ना साहब के भाषण के पश्चात् जर्मनी आर्यसमाज के भव्य व्यक्तित्व के एक विद्वान ने, जो बोन यूनिवर्सिटी में रीडर थे, अपना ओजस्वी भाषण अच्छी हिन्दी में दिया। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती की मित्रता और पत्राचार जर्मनी में वैदिक साहित्य के विद्वान मैक्समूलर महोदय के साथ इसका वर्णन करते हुए कहा कि -"**भारत के सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी श्यामजीकृष्ण वर्मा एवं वीरवर विनायक सावरकर** के प्रयास में जर्मनी और इंग्लैंड में आर्यसमाज की स्थापना और भारत की स्वतंत्रता के लिए जो कार्य हुआ है वह स्तुत्य है। जर्मनी विद्वान ने यह भी कहा कि स्वामी जी ने स्वतंत्रता के लिए जो शंखनाद किया इससे अंग्रेजों की नींद हवा हो गयी। स्वामी जी ने "गो करुणानिधि" पुस्तक को लिखा जिसकी कई प्रतियां कैम्ब्रिज और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी भेजी गयीं। साथ ही स्वामी जी का कई फोटो, जिसमें भाषण, प्रवचन देते हुए, समाधि लगाये हुए चित्र भी थे। उनके "गो करुणानिधि" पुस्तक

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

भारतीय गणराज्य के रोग : भोग रहे हम भारत के लोग

❑ डॉ. देवर्षि शर्मा

संविधान सभा ने देश को भारत का संविधान इन शब्दों में समर्पित किया था: "हम, भारत के लोग भारत को एक सम्पूर्ण गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को...न्याय....स्वतन्त्रता....समता प्राप्त करने के लिए तथा उन सबमें...बंधुता बढ़ाने के लिए दृसंकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में....एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अभिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।' इन शब्दों में बयालीसवां संशोधन ३ जनवरी, १९७७ सम्बद्ध है। विचारणीय यह है कि संविधान की इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उद्देशिका का देश की अब तक की सभी सरकारों ने कितना पालन किया है? उद्देशिका में वर्णित प्रथम वाक्यांश 'हम, भारत के लोग'..... तथा इस संविधान को...'आत्मार्पित करते हैं' महत्त्वपूर्ण हैं। संविधान, सभा द्वारा नहीं, भारत के लोगों के द्वारा देश को 'आत्मार्पित' किया गया था। देश के नागरिकों ने अपने आपको देश का संविधान समर्पित किया था। अतः, 'हम भारत के लोग' देश का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग हैं किन्तु आज देश की शासन प्रणाली में केन्द्र समेत प्रदेशों की सभी सरकारें 'हम भारत के लोगों' की सर्वाधिक उपेक्षा कर रहीहैं। देश के नागरिकों को न्याय, स्वतंत्रता, समता तथा बन्धुता सभी से वंचित कर रखा गया है तथा शासन व्यवस्था में 'हम भारत के लोगों' की भूमिका नगण्य बना दी गयी है। भूमिका है तो केवल इतनी भर कि कर्मकाण्डीय तरीके से, प्रत्येक पांच वर्षों में या जब कभी सरकारें अविश्वास के कारण या विश्वास मत न पाने के कारण गिर जाएं, चुनाव करा दिए जाते हैं और नई सरकारें विधिवत् शांति के साथ बागडोर संभाल लेती हैं।

इसके उपरान्त 'हम भारत के लोग' निरीह मूकदर्शक की भूमिका में आ जाते हैं। कुछ दिनों पूर्व एक संगोष्ठी में लोकसभा के एक पूर्व अध्यक्ष श्री रवि रे से चर्चा का अवसर मिला। चर्चा में मुख्य विषय था 'हम भारत के लोगों' की निरन्तर समाप्त होती भूमिका। संविधान द्वारा प्रदत्त महत्त्वपूर्ण भूमिका से 'हम भारत के लोगों' को प्रथम बार पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने पूर्णतः बाहर निकाल फेंका था। इमरजेंसी लगाकर श्रीमती गांधी ने लोकतंत्र की निर्मम हत्या कर दी थी, पूरे देश को कारागार में परिवर्तित कर दिया था, विरोध के सभी स्वरों को शांत कर दिया था तथा न्यायपालिका तक को 'प्रतिबद्ध न्यायपालिका' बना दिया था। तत्कालीन सुप्रीम कोर्ट के एक न्यायाधीश, जस्टिस चन्द्रचूड़, जो बाद के वर्षों में देश के मुख्य न्यायाधीश भी बने थे, ने स्वीकार भी किया था कि सर्वोच्च न्यायालय पर भारी दबाव थे। उन्होंने यह भी स्वीकारा था कि उनमें साहस का अभाव था कि इंदिरागांधी की मनमानी को रोक सकते। किसी समय डॉ. लोहिया ने देश में ऐसी तानाशाही की संभावना व्यक्त की थी, जो सच साबित हुई थी। बात आज भी वहीं की वहीं है। निःसंदेह गलत सूचनाओं और गलत आंकलन के आधार पर श्रीमती गांधी ने देश में चुनावों की घोषणा की और कांग्रेस का, विशेषरूप से उत्तर भारत में पतन हो गया था। आखिर, तानाशाह को सच्चाई बयां करे, तो करे कौन?

उद्देशिका में वर्णित न्याय को, स्वतंत्रता, व्यक्तिगत और संगठनीय को, समता और बन्धुता को, सब कुछ ध्वस्त कर दिया गया था। वह तो देश का सौभाग्य था कि जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में समग्र क्रांति के आह्वान के कारण देश का लोकतंत्र बहाल हो सका तथा देश की गाड़ी पुनः पटरी पर आ सकी। अब विचारणीय यह है कि आज की स्थिति पहले से कितनी बेहतर है? क्या आज 'हम भारत के लोगों' की कोई सुनवाई है? क्या नागरिकों को न्याय सहज तरीके से मिल रहा है? क्या आज ५५ वर्षों बाद भी 'आरक्षण' बनाए रखकर सभी नागरिकों को समृद्धि से समता का लाभ मिल रहा है?क्या आरक्षण अगले १०० वर्षों या उससे भी अधिक, यों ही चलता रहेगा? क्या बन्धुता वैसी, जैसी गोधरा में या गुजरात में देखी गयी, ऐसी बन्धुता का ही स्वप्न देखा था स्वतंत्रता सेनानियों ने? क्या समाज की आजादी छिन नहीं चुकी है अनेक अपराधी विधायकों और सांसदों के हाथों? क्या राजनीति में अवांछनीय और आपराधिक तत्त्वों का बोलबाला बढ़ता नहीं जा रहा है? क्या भ्रष्टाचार 'हम भारत के लोगों' को जीने दे रहा है? क्या छद्म सेक्युलरवादी पुनः इस्लामी कट्टरपंथ तथा तद्जनित इस्लामी आतंकवाद को हवा नहीं दे रहे हैं? क्या देश में एक क्या शासक वर्ग, कहा जा सकता है, काले अंग्रेजों का, जन्म नहीं ले चुका है? क्या शासन व्यवस्था में वंशानुगत राजनीतिक परिवारों ने भारी पकड़ नहीं बना ली है? आदि अनगिनत प्रश्न किये जा सकते हैं जिनके कारण 'हम भारत के लोग' देश

का आम नागरिक घुन की तरह अकारण पीसा जा रहा है, गरीब और गरीब होता जा रहा है, धन सम्पत्तिवान अपार सम्पदा बटोरता जा रहा है, युवा वर्ग बेरोजगारी के कारण भारी कुंठा से ग्रस्त है। शिक्षा, चिकित्सा, आवास, विकास, बिजली, पानी, सड़क, परिवहन; यातायात व्यवस्था तथा ट्रैफिक जाम आदि सभी क्षेत्रों में अव्यवस्थाओं एवं भारी अभाव के कारण हम भारत के अधिकांश लोग ठगा सा अनुभव करते हैं। पूर्व प्रधानमंत्री वी. पी. सिंह के कार्यकाल में उनके एक वरिष्ठ सचिव भूरेलाल ने एक सनसनीखेज समाचार का खुलासा किया था। समाचार था कि भारत के नेताओं का लगभग ११० विलियन डालर का कालाधन स्विट्जरलैंड के बैंकों में जमा है। अर्थात् ग्यारह हजार करोड़ डालर। अर्थात् पांच लाख पचास हजार करोड़ रुपये स्विस बैंकों में १५ वर्षों पहले जमा थे भारत के नेताओं के। तब से अब तक गंगा में कितना पानी प्रवाहित हो चुका है और कितना और धन इन १५ वर्षों में स्विस बैंकों में और पहुंच चुका होगा, इसकी सहज कल्पना की जा सकती है। कालेधन का निरन्तर प्रवाह नदियों की भांति बना रहता है और यह धन विदेशी बैंकों के महासागर में समाता जा रहा है। इसी धन के सहारे अनेक देशों की अर्थव्यवस्था योरोप में फल-फूल रही है और 'हम भारत के लोग', अधिकांश देशवासी कंगाली का जीवन जीने को बाध्य हो रहे हैं। आजादी के समय का जितना भारत था, आज उससे भी अधिक लोग गरीबी रेखा से नीचे का जीवन जीने का बाध्य हैं। रवि रे ने यहाँ तक बताया कि कुछ मुख्यमंत्रियों ने अपने-अपने कार्यकाल में ८ से १० हजार करोड़ रुपये तक की धन सम्पत्ति स्विस बैंकों में जमा कर रखी है। सहज ही समझा जा सकता है कि 'हम भारत के लोगों' का पैसा हमसे लूटकर विदेशों में नेता और नौकरशाह कैसे पहुंचाते रहते हैं। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि अपरमित धन का तो जमाकर्ता उपभोग तक नहीं कर पाते और दिवंगत हो जाते हैं।

विडम्बना इस बात की है कि अब कोई दल देश में ऐसा नहीं बचा है जिनकी सरकारें प्रदेशों में न रही हों या जो केन्द्र सरकार में शामिल रहे हों, भले ही यह समर्थन बाहर से ही क्यों न दिया गया हो, किन्तु किसी ने भी व्यवस्था परिवर्तन की चिंता नहीं की। निःसंदेह विपक्ष में रहते हुए भाषणों में रोना तो खूब रोया गया, किन्तु सत्तासीन होते ही सभी दलों ने सत्तासुख भोगा और दैत्याकार भ्रष्टाचार को नजरअंदाज किया। इसी के भयावह दुष्परिणाम देश के नागरिक आज भोगने को बाध्य हो रहे हैं। कांग्रेस ने तो बिसमिल्ला ही खराब कर दिया। ५५ वर्षों में ४५ वर्ष तो कांग्रेसी राज ही देश में रहा है, लेकिन १० वर्षों में राज करने वालों ने भी ४५ वर्ष राज करने वालों को पीछे छोड़ने में कोई कोर कसर छोड़ी नहीं। सभी 'दुग्ध स्नान' किए ढोंग करते परमहंस नजर आते हैं, किन्तु वास्तविकताएं पूर्णतः भिन्न हैं। कांग्रेस तो जो है सो है ही, तीसरे मोर्चे के वीर और पार्टी विद ए डिफरेंस' के योद्धा भी किसी से कम नहीं निकले। वर्तमान परिस्थितियों में समस्या इस बात की है कि कोई भी राजनीतिक दल सुधार नहीं चाहता जिसका पूरा-पूरा लाभ भ्रष्ट नौकरशाह, नेता और कुछ एक व्यापारिक घराने आज भी उठा रहे हैं। देश की खातिर आजादी के योद्धाओं ने घरबार, सुख सुविधायें छोड़कर संघर्ष किया था।

प्रथम पंक्ति के लोगों ने वर्चस्व त्यागकर यातनाएं भोगते हुए संघर्ष किया था, कालापानी तक 'हम भारत के लोगों' के लिए भोगा था, तब देश आजाद हुआ था। वे कैसे-कैसे महान लोग थे और आज ऐसे-वैसे, कैसे-कैसे स्थानों पर पदारुढ़ हो गये हैं? ऐसा जान पड़ता है कि गिरोहबन्द लोगों ने देश की राजनीति, शासन, प्रशासन सभी को अगवा कर लिया है और 'हम भारत के लोग' बेबस से बंधक बना लिए गए हैं। हम मुक्त हों तो कैसे? हमारी नियति कैदी बनकर रह गयी है क्योंकि राजनीतिक दलों की सफाई कर तो कौन? राजनेताओं ने देशवासियों को निराश और कुण्ठाग्रस्त कर दिया है। ४० करोड़ गरीबों का भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, चिकित्सा सब कुछ छीन लिया है। नवयुवकों की रोजी-रोटी छीनकर उन्हें अंधकार की ओर ढकेल दिया है। आजादी से पहले लोगों ने अपने घर-बार छोड़े थे, सुख-सुविधाओं को तिलांजलि दी थी और आज के राजनेता केवल अपना 'घरबार' बनाने में तथा अधिकाधिक सुख-सुविधायें बटोरने में जुटे हैं। प्रश्न यह है कि अव्यवस्था के बादल हों तो छंट जाए, यह तो अन्तहीन सघन वन जैसा या फिर अंतहीन अंधकार की सुरंग जैसी जान पड़ती है। प्रकाश मिले तो कहाँ से और कैसे? आज बात इसलिए और नहीं बनती नजर आती, क्योंकि सभी दलों में धृतराष्ट्र और दुर्योधन मौजूद हैं। जहाँ कहीं भीष्म पितामह हैं भी तो वे मजबूर हैं। वे साहस नहीं जुटा पा रहे हैं, जैसे को तैसा कहने का, राजनीति को स्वच्छ करने का। फिर भी, निराशा भारतीय दर्शन का अंग नहीं है। 'हम भारत के लोगों' को संघर्ष करना होगा।

(जागरण, ११ दिसम्बर से साभार)

भारत गणराज्य के समक्ष प्रश्नचिह्न

विदेशी कितने, देश के हित में?

डॉ. हेमेन्द्रकुमार

तमिलनाडु की मुख्यमंत्री सुश्री जयललिता ने श्रीमती सोनिया गांधी के विदेशी होने के विषय को उठाकर राजनीतिक हल्कों में फिर से इस विषय को गरमा दिया है। अब तो आर्य समाज में भी यह चिन्तन का विषय बन गया है। सोनिया गाँधी के विदेशी होने से और ईसाई मिशनरी से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होने के कारण एक सन्देह भी उत्पन्न होता जा रहा है। सोनिया गांधी मूलत: इटली देश की नागरिक और विवाह से पूर्व रोमन कैथोलिक चर्च की सदस्या रही हैं। रोमन वैटिकन सिटी केईसाई धर्मगुरु पोप की शिष्य रही सोनिया द्वारा राजीव गांधी को अपने प्रेम बन्धन में बांधकर देश की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की पुत्रवधू बनने केपीछे चर्च का निर्देशन भी अवश्य रहा होगा, ऐसी संभावनाएं बल पकड़ती जा रही हैं, ताकि इस देश में सरकार के संरक्षण में ईसाइयत का प्रचार प्रसार सुगम हो सके क्योंकि अंग्रेजी शासनकाल में ईसाइयत का प्रचार-प्रसार बहुत तेज गति से हुआ था। भारत के वनवासी जनजातियों को हिन्दू से ईसाइयत में धर्मपरिवर्तन कराने में सरकारी संरक्षण उन्हें प्राप्त था। भारत विभाजन से पूर्व मजबूरन धर्म परिवर्तन की उस समय से आज की तीसरी-चौथी पीढ़ियों ने भारत के सांस्कृतिक जीवन से अपने को अलग कर लिया है इसलिए पूर्वांचल के सम्मिलित राज्यों केएकईसाइलैंड बनाने की मांग लगातार बढ़ती रही है। इस प्रकार के भयानक परिणामों को दूरद्रष्टा के रूप में देखते हुए महात्मा गाँधी ने उस समय कहा था "यदि वे (ईसाई) पूरी तरह से मानवीय कार्यों तथा गरीबों की सेवा करने के बजाय डाक्टरी सहायता, शिक्षा आदि के द्वारा धर्म परिवर्तन करेंगे, तो मैं उन्हें निश्चय ही चले जाने को कहूंगा। प्रत्येक राष्ट्र का धर्म अन्य किसी राष्ट्र के धर्म के समान ही श्रेष्ठ है। निश्चय ही भारत का धर्म यहाँ केलोगों के लिए पर्याप्त है हमें धर्म परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं, (गांधी वाङ्मय, खण्ड ४५, पृष्ठ ३३९ से) फिर भी रोमन कैथोलिक चर्च ने भारत में ईसाईलैंड बनाने का जो स्वप्न संजोया हुआ है, उसकी पूर्ति के लिए सोनिया गांधी एक मील का पत्थर साबित हो सकती है, सोनिया अपने को आज तक हिन्दू धर्म के सांस्कृतिक जीवन में नहीं ढाल सकी और न ही अपने बच्चों को ढाला अपनी पुत्री प्रियंका की शादी भी ईसाई बढ़ेरा परिवार में ही कराई।"

नेहरु परिवारवाद की वंश बेल द्वारा भारत के सिंहासन को लपेटे रखने का भावी दृश्य वेटिकन सिटी के पोप देख और समझ चुके थे। जब कभी भी पोप और ईसाई देश के प्रमुख भारत आए तो सोनिया गांधी से एकांत में भेंट अवश्य करके गए वह किस बात का संकेत है?

विश्व के अन्य देशों में और विशेषकर मुस्लिम देशों में अन्य धर्मों का प्रचार प्रसार नहीं हो सकता, किन्तु भारत की लोकतंत्रात्मक पंथनिरपेक्षता की समाजवादी शासन पद्धति का पूरा लाभ ईसाई पादरी भारत में धर्म परिवर्तन करकेउठा रहे हैं। उन्हें सरकारी सर्वोच्च संरक्षण की हमेशा से आवश्यकता रही है और आगे भी रहेगी, इसलिए बहुत दूर का लक्ष्य ध्यान में रखकर सोनिया का भारत के लिए चुनाव किया गया था। भारत में बाहरी आक्रान्ता ग्रीक, यवन, शक, हूण, कुषाण आदि आए और भारत के सांस्कृतिक जीवन में अपने आपको आत्मसात करके रच बस गए और हिन्दू धर्म में समाहित हो गए, आज उनकी अपनी कोई अलग पहचान शेष नहीं रही किन्तु सोनिया गांधी व उसका परिवार भारत की राष्ट्रीयता के साथ अपने को आज तक नहीं जोड़ सका, क्यों? राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में भारतीय संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने भी उल्लेख किया है—"यह एक भयानक सत्य है कि ईसाई बनने से राष्ट्रांतरण तो होता ही है साथ ही यह भी सत्य है कि ईसाइयत, मतान्तरण के बाद भी जातिवाद नहीं मिटा सकती" (राइटिंग एण्ड स्पीचेज, वॉल्यूम ५, पृष्ठ ४५६)

पोप ने भारत में आकर यह घोषणा की थी कि २१ वीं शताब्दी में हम सम्पूर्ण एशिया को ईसाई बना लेंगे, भारत में आकर यह घोषणा करने का क्या अर्थ था? सोनिया गांधी के भारत आगमन से लेकर अब तक की क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं पर उसके आसपास जमा होने वालों का यदि विश्लेषण करें तो स्पष्ट हो जाएगा कि सोनिया का भारत की राजगद्दी पर बैठने के स्वप्न केपीछे का क्या रहस्य है? पहले राजनीति से संन्यास लेना अथवा स्व. श्री राजीव गांधी की मृत्यु के बाद कई वर्षों तक राजनीति से दूर रहने वाली और राजनीति को षड्यंत्रों का गोलचक्र मानने वाली सोनियां आखिर एकदम ब्रिटेन व अमेरिका केविदेश और सांस्कृतिक मन्त्रियों और पोप से एकान्त में मिलने के बाद राजनीति में कैसे कूद पड़ी? एकदम कहाँ से हिम्मत

जागृत हो गई? प्रियंका को भी ईसाइयत में पूर्णतः ढालकर भारत की राजनीति में उतारने का लक्ष्य क्या इंगित करता है? हम भारत के लोग क्यों भूल जाते हैं जब भी विदेशियों को हमने महत्त्वपूर्ण पदों पर बैठाया तब भारत को क्या मिला? और अपने कुछ महापुरुषों ने विदेशियों को राजनीति में व अन्यत्र महत्त्वपूर्ण पदों से दूर रखा तो क्यों रखा?

जब-जब ईसाई विदेशियों को सत्ता में भागीदारी दी गई तब-तब भारत को उसके दुष्परिणाम भोगने पड़े है, विश्व संवाद केन्द्र लखनऊ के सौजन्य से भी इसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं :—

★ ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कुछ अधिकारी बंगाल के नवाब को खुश करके राजदरबार के महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन हुए और धीरे-धीरे कम्पनी के हक अधिकार प्राप्त करते गए। एक समय ऐसा आया कि बंगाल की सारी राजनीति अंग्रेज अधिकारियों से प्रभावित होने लगी परिणामस्वरूप बंगाल का शासन ईस्ट इंडिया कम्पनी के हाथों में चला गया।

★ मीर कासिम ने अपनी सेना में २०० ईसाई सैनिक भर्ती किए हुए थे जिनकी ड्यूटी महत्त्वपूर्ण पदों पर तोपखाने में थी, ५ जुलाई १७६३ में जब अंग्रेजों से नवाब का युद्ध हुआ तब वे ईसाई सैनिक अंग्रेजों से जा मिले और मीर कासिम को पराजय का मुख देखना पड़ा।

★ ईस्ट इण्डिया कम्पनी की नौकरी छोड़कर एक ईसाई सैनिक नवाब की सेना में भर्ती हुआ। बाद में अवसर देखकर उसने ईसाई सैनिकों के साथ षड्यंत्र रचकर अंग्रेजी सेना को किले में बुला लिया। इस युद्ध में १५ हजार भारतीय सैनिक मारे गए और किले पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। इस सैनिक ने ईसाइयों के लिए ईश्वर जैसा काम किया। (हिस्ट्री ऑफ अंगाल आर्मी, (ब्रूमी) पृष्ठ १५७)

★ इंजील और सलीब धार्मिक पुस्तक हाथ में लेकर वफादारी की कसम खाने वाले कुछ फ्रांसीसी ईसाई मैसूर के हैदर अली ने अपनी सेना में अधिकारी नियुक्त किए थे सन् १७६८ में जब अंग्रेजों स्मिथ और कर्नल बुड की संयुक्त सेनाओं से हैदर अली का युद्ध हुआ तब उन फ्रांसीसी अधिकारियों ने पादरियों के फतवे के अनुसार अंग्रेजों की मदद की थी। (ले. सुन्दरलाल—भारत में अंग्रेजी राज, पृष्ठ २१-२७३)।

★ ग्वालियर के राजा दौलतराव सिंधिया ने अपनी सेना में यूरोपीय अफसर नियुक्त किए थे जो युद्ध के समय पादरी के कहने से अंग्रेजों के साथ जा मिले थे और सिंधिया के साथ विश्वासघात हुआ। (जनरल लेक का वेलेजली का व्यक्तिगत पत्र—आगरा, २२ सित. सन, १८०४)

★ लार्ड विलियम बैंटिंक ने ऐबेदुबाय नामक फ्रांसीसी पादरी को आठ हजार रुपए नकद देकर भारतीयों के सामाजिक और धार्मिक रीतिरिवाजों पर एक झूठ से भरी पुस्तक लिखवाई जिसमें भारतीयों को जंगली बताकर उनके उद्धार के लिए अंग्रेजी राज्य आवश्यक बताया है। (इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका, ११ वां संस्करण वाल्यूम ८, पृष्ठ ६२४)

★ स्व. श्री राजीव गांधी के प्रधानमंत्रित्वकाल में सन् १९८९ में मिजोरम में हुए विधानसभा चुनावों में कांग्रेस के घोषणा पत्र में (सोनिया गांधी के प्रभाव के कारण कहा गया था कि मिजोरम में बाइबिल के अनुसार शासन व्यवस्था होगी) ('अधीश कुमार—ईसाइयत का विश्वव्यापी षड्यंत्र', पृष्ठ २९)

१९९८ में उड़ीसा के क्योंझर जिले के मनोहरपुर ग्राम में आस्ट्रेलियाई पादरी ग्राहम स्टेन्स और उसके दो किशोर पुत्रों को जलाकर की गई हत्या की जाँच न्यायमूर्ति वाधवा आयोग ने की, २१ जून १९९९ को प्रकाशित उस रिपोर्ट में यह भी कहा गया है—"मयूरभंज और क्योंझर जिलों में हुए ग्राम प्रधान के चुनावों में स्थानीय चर्च ने अपना प्रत्याशी खड़ा करके ईसाइयों को उसे वोट देने को कहा, स्थानीय राजनीति में चर्च की दखलन्दाजी से ईसाई गैर ईसाई विवाद बढ़ा।" आगे रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि "उड़ीसा में चर्च और उसके पादरी संवैधानिक कानून भंग कर रहे हैं" इस एक ही उदाहरण से अन्दाजा लगाया जा सका है कि जब चर्च स्थानीय राजनीति में इतनी दखलन्दाजी कर सकता है तो सोनिया गांधी के महत्त्वपूर्ण पद पर आने से देश की राष्ट्रीय राजनीति में चर्च दखल क्यों नहीं करेगा।

★ सिकन्दर के आक्रमण के बाद उसके सेनापति सेल्यूकस ने भी अपने सम्राट के स्वप्न को साकार करने की योजना बनाकर भारत पर आक्रमण किया था। चाणक्य की कूटनीति से भले ही उसकी बहिन के साथ चन्द्रगुप्त मौर्य का विवाह सम्पन्न कराया गया ताकि पश्चिम से फिर कोई आक्रमण न हो सके किन्तु सेल्यूकस की बहन ने हिन्दू धर्म आत्मसात कर लिया था **फिर भी विदेशी होने के कारण भारत राष्ट्र की साम्राज्ञी वह नहीं बन सकी थी।**

अंग्रेज अधिकारियों ने येन-केन प्रकारेण भारतीय गणराज्यों के शासन में अपनी भागीदारी निभाई और आगे चलकर पादरियों के संकेत मात्र से वे उन राज्यों के पतन का कारण बनें, जिन पर अंग्रेजों के लिए अपना शासन

स्थापित करना बहुत सरल हो गया। वे अंग्रेज अधिकारी रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा रचे गए षड्यंत्रों के अंग हुआ करते थे। राजनीतिक सत्ता हाथों में आने पर चर्च के अनुसार भारत में नियम कानून बनाने लगे थे जिसमें ईसाइयत के प्रचार प्रसार के लिए राजसत्ता का पूर्ण सहयोग रहता था। अंग्रेज अधिकारी अपने इर्द गिर्द भारत के महत्त्वपूर्ण लोगों की मित्र मण्डली बनाकर रखते थे, उन्हें सब प्रकार की सुविधाएं व पद सम्मान दिलाते रहने का काम करते थे। अंग्रेजी राजसत्ता स्थापित होने पर वे चाटुकार महत्त्वाकांक्षी भारतीय अफसर दूध में से मक्खी की तरह निकालकर बाहर फेंक दिए जाते थे।

२०० वर्षों के इतिहास के पन्नों में लिखे ये सब उदाहरण हमें दर्शा रहे हैं कि जो समाज या राजनैतिक संगठन **अपने अतीत के अनुभवों से सीख नहीं लेता वह अपने राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण नहीं कर सकता, स्वयं भी पतित होता है और पूर्वजों के अथक परिश्रम व लगन से प्राप्त की गई कमाई यश, प्रतिष्ठा को भी नष्ट कर देता है।** पृथ्वीराज चौहान का उदाहरण समक्ष है यदि उन्होंने अपने अतीत का अनुभव अपने पास संजोया होता तब वे मोहम्मद गौरी को १६ बार माफ न करते और १७वीं बार में स्वयं भी न मारे जाते और हिन्दुस्थान मुस्लिम आक्रान्ताओं द्वारा पद दलित भी न होता। हम विदेशी षड्यन्त्रों को क्यों नहीं समझ पा रहे हैं? इतने लम्बे काल चक्र के थपेड़ों से प्राप्त हुए असंख्य अनुभवों से हम क्यों नहीं कुछ सीख पा रहे हैं? बार-बार ऐतिहासिक भयंकर भूलों को दोहराने पर क्यों आमादा हैं?

अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जो सन् १८८५ से विदेशी शासन के खिलाफ संघर्षरत रही, जिसके धुरन्धर राष्ट्रीय नेताओं ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व मातृभूमि के चरणों में अर्पित किया हो उसी कांग्रेस के पास आज कोई नेतृत्व करने वाला नहीं। विदेशी मूल की एक सामान्य सी रोमन कैथोलिक चर्च की सदस्या व पोप की शिष्या को भारत राष्ट्र का महत्त्वपूर्ण 'प्रधानमंत्री' का पद देने को कांग्रेस लालायित है, इसके परिणामस्वरूप भारत का उत्थान होगा या भयंकर पतन यह तो भविष्य के गर्भ में छिपा है किन्तु कुछ संकेत तो पटल पर स्पष्ट दिखाई देते हैं। यदि कांग्रेस किसी महिला को ही प्रधानमंत्री बनाना चाहती है तो भारतीय मूल की महिलाओं में क्या क्षमताएं समाप्त हो गई? सोनिया से भी बहुत अधिक पढ़ी-लिखी, योग्य, क्षमतावान, राजनीतिज्ञ महिलाएं जो भारतराष्ट्र के प्रति संस्कार सम्पन्न समर्पण भाव रखने वाली हैं, भारत देश में हैं, उन्हें क्यों नहीं अवसर दे पा रही। क्या भारतीय मूल की महिला देश को सम्मान दिलाने में असमर्थ हैं?

जिस दिन सोनिया गांधी भारत की प्रधानमंत्री बनेगी उस दिन भारत की महिलाओं का दुर्भाग्य का दिन होगा। विश्व भर में यही सन्देश जाएगा कि भारत के पास उनका अपना नेता नहीं रहा और भारत की महिलाओं में अब वे क्षमताएं नहीं रहीं जो गार्गी, लक्ष्मीबाई और इन्दिरागांधी में थीं। भारत की नारियों की कोखें भी ऐसी क्षमतावान् नहीं रहीं जो भारत को ऐसा नागरिक दे सकें जो भारत का नेतृत्व कर सकें? सारी दुनिया के सामने भारतीय नारियों के प्रति प्रश्नवाचक चिह्न लग जाएगा? सोनिया गांधी के आने से यह निश्चत है कि देश का शासन अप्रत्यक्ष रुप से इटली के पोप के अनुसार चलेगा, ईसाई देशों के साथ ऐसे सम्बन्ध बनेंगे जो धीरे-धीरे भारत को फिर से गुलामी की ओर ले जाएंगे?

जब-जब भारत पर भविष्य के संकट दिखाई दिए और कुछ दूरद्रष्टा विद्वानों ने अपने तथ्य लोगों के सामने रखे तब-तब वे अपने लोगों व अपने मीडिया द्वारा मजाक का पात्र बने और हाशिये पर डाल दिए गए। ऐसे मजाकिया लोग भी नहीं बच पाए। कालान्तर में वे भी विदेशियों के पैरों तले रौंदे गये, इतिहास इस बात का गवाह है, संभलने का समय आया है तो सम्भलिए। जो सम्यक् समय पर भी नहीं संभल पाता निःसन्देह वह पतन के गर्त में गिरता ही है। कांग्रेस नेतृत्व में यदि दमखम है तो नेहरु वंश बेल की बैशाखी का सहारा लिए बिना अपने बूते पर जीते और अपनी सरकार बनाए इससे भारत राष्ट्र का स्वाभिमान जागृत करना होगा। नेहरु वंश बेल का ही सहारा लिया होता तो राष्ट्रीय समाज को बुरा न लगता किन्तु विदेशी के सहारे से आगे बढ़ने को तो केवल दुःसाहस ही कहा जाएगा और भारतीय समाज उसे पचा न पाएगा। जयललिता के कथनों के विषयों में सोचकर भारतीय राजनीतिक पटल पर कांग्रेस को अपनी नीतियों में परिवर्तन लाना चाहिए। इटली के रिमोट कंट्रोल से चलने पर इस पार्टी का अस्तित्व ही भारत से खत्म हो जाएगा अथवा भारत को फिर से गुलामी के कैदखाने में धकेलने का कलंक लेकर कांग्रेस हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगी।

कांग्रेस के नेताओं को छत्रपति शिवाजी द्वारा लिखा पत्र पढ़ना चाहिए जिसे उन्होंने राजा जयसिंह को लिखा था जब वह औरंगजेब का सेनापति बनकर शिवाजी को जीतने निकला था। कांग्रेस को याद करना चाहिए कि

यूरोपियन्स साम्राज्यवादी शक्तिशाली देशों ने अफ्रीका और एशिया में अपनी-अपनी कालोनियां बनाकर किस मे और किन नीतियों के आधार पर उन देशों पर अपने साम्राज्य स्थापित किये थे। क्या वे साम्राज्य १० या १२ वर्षों में स्थापित हो गए थे? कम से कम आधी शताब्दी तक उन्होंने उन देशों में अपने अनुकूल दशाओं के बनने का इन्तजार किया था। **सोनिया गांधी के चक्रव्यूह में फंसकर कांग्रेस क्या उस इतिहास की पुनरावृत्ति तो करने नहीं जा रही है? साम्राज्यवादी नीतियों में मौलिक चिन्तन वहीं रहता है किन्तु उनके क्रियान्वयन के रूप काल व परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं। इसलिए आज की परिस्थितियों में सोनिया गांधी का राजनीतिक धरातल पर उतरना और कांग्रेसियों की अदूरदृष्टिता व तात्कालिक राजसत्ता का लाभ लेने की महत्त्वाकांक्षा, ये दोनों ही इस अति प्राचीन भारत राष्ट्र के लिए घातक सिद्ध हो सकती हैं। क्या हम सभी इतिहास की उस पुनरावृत्ति को झेलने को तैयार हैं?** घोषक-अक्टूबर २००२, त्रिनगर, दिल्ली-३५

(पृष्ठ २७ का शेष)

और फोटो चित्र से यूनिवर्सिटी के विद्वानों ने निष्कर्ष में भारत की अंग्रेजी सरकार को लिखा कि **यदि यह संन्यासी मात्र छः महीने भी और जीवित रहा तो अंग्रेजों को बोरिया विस्तर बांधकर भारत से भागना पड़ेगा।** अतः वृहद षड़यंत्र रचकर अंग्रेजों ने वेश्या मुन्नीजान के द्वारा रसोइया जगन्नाथ की मिली भगत से ऐसा हलाहल विष पिलाया कि उनका देहावसान हो गया। इतिहास साक्षी है कि स्वामी जी के स्तुत्य प्रयास तथा भारत के क्रांतिकारियों के प्रेरणास्पद बलिदान से भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की है। अभी स्वराज्य नही हुआ है।'

महान क्रांतिकारी यशपाल ने जो शहीद चन्द्रशेखर आजाद, शहीद भगतसिंह के साथी थे, अपनी जीवनी "सिंहावलोकन" के प्रथम खण्ड में लिखा है—"मेरी माता जी ने जो आर्यसमाज की शिक्षिका थीं, अध्ययन के लिये स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा संस्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में भरती करा दिया। उस समय गुरुकुल के वातावरण में अंग्रेज तथा विदेशी शासन के विरोध की भावना प्रबलतम थी। अंग्रेजों की प्रभुता को अस्वीकारने वाले क्रांतिकारी आन्दोलनों की चिन्गारियां फूटने लगी थीं।

आर्यसमाज को अंग्रेजी सरकार ने धार्मिक संस्थान कहकर कई बार, राजनैतिक संस्था कह कर गैर कानूनी करार दिया था।

आर्यसमाजी एवं क्रांतिकारी के पकड़े जाने पर गोरा पुलिस आफिसर प्रायः पूछता था -"आप लोगों ने जोखिम की ओर प्रवृत्ति क्यों बना ली? जब गाँधी जी का अहिंसा आन्दोलन भी है।" अंग्रेज शासन को यह ज्ञान था कि आर्यसमाज पूरे समाज को, देशको जागृत करता है। क्रांति तो जनसमूह में ही हो सकती है। निर्जन प्रदेशों में नहीं।'

सामवे का निर्देश है (मंत्र —४१०,४१२) स्वतंत्रता के शत्रुओं का नाश करो। महामना मदनमोहन मालवीय जी ने १९१६ में हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस की स्थापना की। अपने दीक्षान्त भाषण में उन्होंने आर्यसमाज गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए कहा था—"हमारे लिए यह गौरव की बात है कि इस हिन्दू विश्वविद्यालय के अनेकों प्राचार्य आर्यसमाज गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विद्यार्थी स्नातक रह चुके है।

कालान्तर में इन प्राध्यापक महोदय के प्रोत्साहन ने विद्यार्थियों को भारत की स्वतंत्रता की प्राप्ति में प्रेरणास्पद दिशा-निर्देश किया।

आई. सी. एस. की सम्मानित परीक्षा करने वाले महर्षि अरविन्द, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस मुहम्मद इकबाल ने आर्यसमाज के त्याग, बलिदान के प्रेरणास्पद कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रथम स्नातक बंकिम बाबू की पुस्तक "आनंद मठ" का "वंदेमातरम गीत" क्रांतिकारियों के लिए उद्बोधन मंत्र बना। **बंकिम बाबू ने अपने हृदयोद्गार में कहा है कि जो कार्य आर्यसमाज ने अर्ध शताब्दी में किया है, ऐसा कार्य अन्य किसी संगठन ने अनेक शताब्दियों में भी नहीं किया।** आर्यसमाज के आन्दोलन के प्रति मेरी पूर्ण सहानुभूति है।

महात्मा गाँधी ने आर्यमाज के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए लिखा है कि —"ईश उपासना, झूठे देवी देवताओं के प्रपंच, समाज सुधार, स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, जाति प्रथा, छूत-छात, मद्यमांस निषेध, विदेशी वेशभूषा, स्वतंत्रता, स्वावलम्बन, स्वदेश प्रेम, गोरक्षा आदि ज्वलंत समस्याओं के हेतु हम जिधर भी कदम बढ़ाते हैं, हमें आर्यसमाज का चरण-चिह्न दृष्टिगोचर होता है। इन चरण चिह्नों पर चलकर राष्ट्र का कल्याण कार्य करने में हमें प्रेरणा प्राप्त होती है।

द्वारा संजय कुमार लाल, नेशनल केमिकल कम्पनी, पटना

गणतंत्र दिवस पर विशेष

हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय-चिंतन

डॉ. श्यामसिंह शशि (पद्मश्री)

कुछ चिंतन पंक्तियाँ प्रस्तुत करते हैं :—

मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर तुम देना फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जाते वीर अनेक।
(एक भारतीय आत्मा-माखनलाल चतुर्वेदी)

काले कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए। *(बालकृष्ण शर्मा नवीन)*

बुंदेले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मरदानी वह तो झांसी वाली रानी थी।
(सुभद्राकुमारी चौहान)

जो तनिक हवा से लगाम हिली, लेकर सवार उड़ जाता था
राणा की पुतली फिरी नहीं, तब तक चेतक उड़ जाता था
(हल्दीघाटी के रचयिता श्यामनारायण पांडेय)

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती
(जयशंकर प्रसाद)

जन हृदय का तार बोले, श्रृंखला के बंद खोले
हो जहां बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो
वंदना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिलालो
(पं. सोहनलाल द्विवेदी)

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं
(मैथिलीशरण गुप्त)

सिंहासन खाली करो कि जनता आती है
(रामधारीसिंह दिनकर)

ये कुछ उद्धरण हैं हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चिंतन के जिनसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की भैरवी को बल मिला। देश जागा जिससे अन्ततः भारत गणराज्य बना। राष्ट्रीयता समग्र रूप लेकर उपस्थित हुई। सदियों की दासता के विरुद्ध युद्ध का जयघोष हुआ। सुप्त शौर्य ने अंगड़ाई ली। भारत मां को विदेशी कारागार से मुक्त करने कोटि-कोटि कर आए। कितना बलिवेदियां बनीं। फांसी के झूलते फंदों पर कितने सेनानी शहीद हुए और कितने बलिदानी रक्त बहा जलियांवाला बाग में-हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक। पूरब से पश्चिम तक। आजादी के इतिहास की एक लंबी दास्तां है जिसमें रामप्रसाद बिस्मिल स्वर मिलाते हैं—

'सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।'

भावनात्मक स्तर से हटकर हम जब 'राष्ट्र' शब्द पर चिंतन करते हैं तो अथर्ववेद का एक आप्तवचन स्मरण हो आता है। 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या' अर्थात् भूमि मेरी माता है और मैं मातृभूमि का पुत्र हूं। पृथ्वी सूक्त में ऋषि राष्ट्र शब्द का उद्भव करते हैं। जो ऋग्वेद में राष्ट्र शब्द का प्रयोग अनेक स्थलों पर हुआ है—मम द्विधा राष्ट्र क्षत्रियर—यानी मेरा राष्ट्र दोनों ओर से दोनों गोलकों में है। लोकमान्य तिलक और स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वतंत्रता को जन्मसिद्ध अधिकार की मान्यता प्रदान की। स्वामी जी ने यहां तक कहा कि अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से बुरे से बुरा स्वदेशी राज्य अच्छा होता है। वस्तुतः राष्ट्र समाज का वह भाग है जो प्राकृतिक भौगोलिक सीमा द्वारा अन्य राष्ट्रों से पृथक है, जिसकी सभ्यता, तथा संस्कृति एक-सी है, जिसके रीतिरिवाज और साहित्य भी एक जैसे ही हैं। यहां यह स्पष्ट करना उचित होगा कि भारतीयों की संस्कृति के अनेक रूप हो सकते हैं जिन्हें हम ग्रामीण संस्कृति, नगर संस्कृति, प्रदेश संस्कृति, समुदाय संस्कृति आदि रूपों में अध्ययन की दृष्टि से विभाजित कर सकते हैं, किन्तु ये रूप एक ही महासंस्कृति के अंग हैं और वह महासंस्कृति है—भारतीय संस्कृति। भारत का स्वाधीन आंदोलन भी इसी भारतीयता में जन्मा था जिसमें राजनैतिक क्रांति प्रमुख थी। लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि उसमें सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक तथा साहित्यिक क्रांतियों का कोई योगदान न रहा हो।

स्वाधीनता संग्राम की प्रथम चिंगारी १८५७ में भड़की थी जिसे पूर्ण ज्वाला बनने में समय लगा। हिन्दी साहित्य की स्थिति भी इसी प्रकार समानान्तर रूप ग्रहण करती रही। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'भारत दुर्दशा' में राष्ट्रीय स्वरों को मुखरित किया। हिन्दी में लगभग तीन सौ प्रतिबंधित गीत-कविताओं के संकलन प्रकाश में आए जिन्हें बाद में जब्त कर लिया गया। कुछ पुस्तकों के नाम हैं— स्वराज्य की वंशी (१९२२) अहिंसा का झंडा (१९३०) आजाद भारत के गाने (१९३०) देश का राज (१९२२) राष्ट्रीय तरंग (१९३०) आजादी का झंडा (१९३०) चमकता

स्वराज्य (१९३०) इत्यादि।

उक्त पुस्तकों का साहित्यिक महत्व हो या न हो किन्तु राष्ट्रीय महत्व पूर्ण तरह से रहा। स्वाधीनता संग्राम की मंत्रशक्ति की भांति इन गीतों ने जन-मानस को आन्दोलित किया। आल्हा की तर्जपर लोककाव्य द्वारा राष्ट्रीयता के गीत गुंजायमान हुए। विजयी विश्व तिरंगा प्यारा तथा वंदेमातरम् जैसे गीत बच्चे-बच्चे की जवान पर छा गए। उर्दू के हसरत मोहानी, अशफाक उल्ला खां, जोश मलीहावादी तक ने वंदेमातरम् के स्वर में स्वर मिलाए। देखिए ये पंक्तियां—'

ईद होली और दशहरा, शुबरात से सौ-सौ गुना।
है हमारा लाड़ला त्योहार वंदेमातरम्।
जालिमों का जुल्म भी काफूर-सा उड़ जाएगा।
फैसला होगा मरे बाजार वंदेमातरम्।

(वर्ष १९३० का गीत)

हम यह क्यों कहते किकोई अंग्रेजों के विरुद्ध प्रबंध काव्य लिखे या कोरे राष्ट्रवाद को अपने काव्य का विषय बनाकर शब्द-शक्ति का अपव्यय करे किन्तु एक राष्ट्र को स्वराज्य के पश्चात् सुराज बनने में कलम का योगदान अपेक्षित है। आज जो समाज सापेक्ष साहित्य का सृजन कर रहे हैं वे भी राष्ट्रीयता को समर्पित सृजन के हस्ताक्षर हैं। भवानीप्रसाद मिश्र से लेकर अनेक नवगीतकार तथा देवराज दिनेश जैसे कवियों ने राष्ट्रीय कविता मंच को गौरव प्रदान किया है। नीरज तक के गीतों में राष्ट्रीयता साकार हुई है। माखनलाल चतुर्वेदी की इन पंक्तियों में आज भी समाज का सरोकार समाया है—

तोड़ अमीरों के मन सूबे, गिन न दिनों की घड़ियां
बुला रही हैं तुझे देश की, कोटि-कोटि झोपड़ियां *(ईसुरी से)*

और इसी आत्मानुभूति में मेरी स्वयं की एक विचार-कविता का अंश भी इत्यताप के रूप में प्रस्तुत है—

झोपड़ियां आज भी
मेरी आंखें नम कर जाती हैं
चिथड़ा शक्लें
मुझे गम दे जाती हैं
रेंगते कीड़े तलाश रहे हैं
कोई चमत्कार
कंकाल करता है
नए निर्वाचन को नमस्कार।

और नवीन की ये पंक्तियां भी—

फिर आएगी उषा हंसती, फिर होगा विहान चिर सुन्दर
फिर से नव भैरवी छिड़ेगी, फिर होगी पंखों में झरझर
(हम विषपायी जनम के)

राजनीति हो या साहित्य या कोई अन्य क्षेत्र आज राष्ट्र गौण होता जा रहा है। स्वार्थ सर्वोपरि हो गया है। हमारा राष्ट्रीय जनतंत्र एक भयंकर संकट से गुजर रहा है। उपभोक्ता संस्कृति साहित्य पर भी हावी होती जा रही है। एक ओर पुरस्कार की प्राप्ति के लिए साहित्य के नाम पर विशेष प्रकार का लेखन जारी है तो दूसरी ओर मीडिया ने उसे और पीछे धकेल दिया है। अब दृश्य-श्रव्य माध्यमों के द्वारा कविता से अन्त्याक्षरी नहीं होती, चलचित्रों केवाजारु गीतों ने उनका स्थान ले लिया है। ऐसी स्थिति में राष्ट्र को कौन याद करे और राष्ट्रीय कविता जैसी विधा को क्यों महत्व दिया जाए। किसी ने कहा था—ईसा अस्तबल में पैदा हो सकते हैं, कृष्ण कारागार में पैदा हो सकते हैं तो क्या गीता पैदा करने के लिए नन्दन-कानन चाहिए? ये जन संकटों और जनखों केबीच जनम नहीं ले सकते?

राष्ट्र के समग्र चिंतन का प्रस्फुटन जिस काव्य में हो, वही राष्ट्र काव्य है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हम राष्ट्रवाद को फासीवाद की ओर ले जाएं। राष्ट्र, राष्ट्रीय स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना पैदा करे? वस्तुतः जाति, प्रजाति सम्प्रदाय, धर्म, वर्ग, वर्ण, आदि की श्रेष्ठता को तूल देकर संकीर्ण मनःस्थिति के निर्माण में राष्ट्रीयता आड़े नहीं आती, राष्ट्रवाद या व्यक्तिवाद उसे जन्म देते हैं। आज जिस प्रकार सहित्य में न वामपंथ है और नहीं दक्षिणपंथ, बल्कि केवल अवसरपंथ दिखाई पड़ता है उसी प्रकार अब बड़े राष्ट्र दादागिरी पर उतर आये हैं। भारत में जातिवाद साहित्य में भी परिलक्षित होने लगा है। यह एक रुग्ण मानसिकता है जिससे राष्ट्र तो कमजोर हो ही रहा है, साहित्य में भी घुन लगने लगा है। इस प्रकार स्वदेशीकरण की भांति साहित्य और भारतीयता को ताक में रख दिया जाता है। वैश्वीकरण के नाम पर आर्थिक उदारीकरण ने राष्ट्रीयता को चुनौती देना शुरू कर दिया है। हिन्दी साहित्य में उर्दू-फारसी अंग्रेजी शब्दों की भरमार हिन्दी की राष्ट्रीय अस्मिता के लिए घातक सिद्ध होगी। हिन्द पत्रकारिता मां भारती को विद्रूप करने में लगी है। आखिर वे क्या चाहते हैं। अपनी लेखनी का उपयोग उपभोक्तावादी मनोवृत्ति में क्यों कर रहे हैं।

जो भरा नहीं है भावों से जिसमें बहती रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

–अनुसंधान, डी.-४/२४५, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली

मैं ईश्वरवादी और आशावादी हूं

□ अटलविहारी वाजपेयी

श्री वाजपेयी द्वारा कई वर्ष पूर्व लिखा गया यह लेख उनके चिंतन की झांकी प्रस्तुत करता है।

अब राजनीति से मेरा मन ऊब चुका है। ऐसा लगता है कि मैं राजनीति की रपटीली राह में फंस गया हूं। कविता लिखना व मंच पर पढ़ना मेरा एक अच्छा शौक था लेकिन अब राजनीति के दलदल में आ फंसा। वह भी इस तरह कि फंसता चला गया। अब जो जीवन मिला है, उसे और कैसे बेहतर ढंग से जिया जाये और आगे क्या कुछ किया जाये? यही मन में उधेड़बुन लगी रहती है। मुझे अपनी ही एक कविता बहुत पसंद है। अनेक बार लोगों ने इसे पढ़ा-सुना होगा, आज भी मुझे अपनी इस कविता में अपने आप के लिए रास्ता तलाशने का मन होता है। यह कविता है—

राह कौन सी जाऊं मैं?
चौराहे पर लुटता चीर, चलूं आखिरी चाल कि
बाजी छोड़ विरक्ति रचाऊं? राह कौन सी जाऊं मैं?
सपना जन्मा और मर गया, मधु ऋतु में ही बाग झर गया
तिनके टूटे हुए बटोरूं, या नवसृष्टि सजाऊं मैं?
राह कौन सी जाऊं मैं?
दो दिन मिले उधार में, घाटे के व्यापार में,
कौड़ी-कौड़ी का हिसाब लूं, या निधि शेष लुटाऊं मैं?
राह कौन सी जाऊं मैं?

इस कविता को पढ़कर कुछ लोगों ने माना कि वाजपेयी जी अपनी कोई दिशा नहीं बना पा रहे हैं, पर मेरे लिए यह कविता कुछ और ही है। मेरी राह मुझे स्पष्ट रूप से मिली हुई है। इस राह पर चलने का मेरा अपना अन्दाज है जैसा कि प्रत्येक किसी का होता है।

अब वे दिन बहुत याद आते हैं? जब मैं कानपुर के डी. ए. वी. कालेज के छात्रावास में रहकर पढ़ता था। मेरे स्व. पिता श्रीकृष्णविहारी वाजपेयी भी मेरे साथ एक ही कमरे में रहकर कानून की पढ़ाई कर रहे थे। पिताजी मेरे एक अच्छे मित्र भी थे। मैं कानपुर से राजनीति शास्त्र में एम.ए. करने के बाद एल.एल.बी. कर रहा था। आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं कि एक तरफ दोस्ती-मस्ती और दूसरी ओर पिताजी। कानपुर में छात्रावास में रहकर गंगाजी में नौका विहार करना, मित्रों में कविता सुनाना आम बात हो गई थी, पर एक मजा और था वह था खिचड़ी पकाना और खाना। आज भी मन करता है कि खिचड़ी बनाऊं और खाऊं। अब भी कभी-कभी बना लेता हूं। खिचड़ी के बारे में एक कहावत उ. प्र. में बहुत प्रसिद्ध है—'खिचड़ी के तीन यार दही, पापड़ और अचार'। इन तीनों के साथ खिचड़ी खाने का मजा ही गजब का होता है। कविता और साहित्य के मामले में मुझे महाकवि निराला जी ने बहुत प्रभावित किया है। नवीन व दिनकर को भी मैं भूल नहीं सकता। दिनकर की कविताओं ने मुझे दिशा प्रदान की है। गद्य साहित्य में हजारीप्रसाद द्विवेदी, महावीरप्रसाद द्विवेदी, पं. प्रतापनारायण मिश्र और बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को मैंने भली प्रकार पढ़ा है। एक छात्र के रूप में आज भी मैं उन्हें स्मरण कर लेता हूँ। महादेवी वर्मा जी की यह पंक्तियां—'मैं नीर भरी दुःख की बदली' याद आते ही महादेवी जी को नमन करने का मन होता है। जैनेन्द्र जी को मैंने आद्योपान्त पढ़ा है। शरदचन्द्र जी मुझे अत्यन्त प्रिय हैं। उनकी भाषा और शैली को भी मैं बहुत सराहता हूं।

राजनीति की दुनिया में पं. जवाहरलाल नेहरु व चर्चिल को मैं बहुत पसन्द करता हूं। चर्चिल जैसा नेता जल्दी पैदा नहीं होता। उसीप्रकार पंडित नेहरु भारत के लिए नहीं दुनिया के लिए याद रखने लायक महान लोगों में एक थे। नेहरु जी राजनेता नहीं होते तो बहुत बड़े दार्शनिक होते। "भारत की खोज" में पं. जी के व्यक्तित्व और चिन्तन का गजब का प्रगटन हुआ है। अन्तिम वसीयत में उन्होंने गंगा जी का जो वर्णन किया है उसे पढ़कर तो मैं द्रवित हो उठा था। देश की धरती और गंगा का ऐसा वर्णन कोई कवि ही कर सकता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक से मैंने जो कुछ प्राप्त किया उसका वर्णन करना कठिन है। डॉ. हेडगेवार, परमपूजनीय गुरु 'गोलवलकर जी' को मैं आज इसलिए नहीं सराह रहा क्योंकि यह तो मेरे घर परिवार के थे। इनके बारे में तो बहुत बार कहा है। पं. दीनदयाल उपाध्याय मेरे हृदय में सदैव रचे-बसे रहते हैं।

स्वातंत्र्यवीर सावरकर को मैं कभी भी भूल नहीं सकता। मेरा मन है कि ऐसे देशभक्तों का ऋण भारत की पीढ़ियां कभी चुका नहीं सकेंगी। मराठी में उनका साहित्य मैंने बहुत पढ़ा है। उनकी कुछ रचनाओं को हिन्दी में अनूदित भी किया है। सरदार वल्लभभाई पटेल के लिए मेरे मन में असीम श्रद्धा है।

सत्य तो यह है कि मैं जीवन में निराश नहीं होता। मुझे रास्ता सूझता है। मैं अपने को ईश्वरवादी और आशावादी दोनों कहता हूं। पर भाग्य भरोसे बैठना मेरे स्वभाव में नहीं है। एक कर्मशील प्राणी का जीवन, जीने की ललक बचपन से रही है। इसी के सहारे बाकी जिन्दगी भी जी लूंगा। मेरा मानना है कि भारतीय संस्कृति और जीवन दर्शन की दुनिया में और कहीं मिसाल नहीं है। इस परम पावन धरती को मेरा मन हर पल नमन करता है। ❊ ❊ ❊

हिन्दुत्व प्राण है तो हिन्दुसमाज उसका शरीर

□ देवेन्द्र स्वरूप

वामपंथी सोचते हैं कि हिन्दुत्व उनका सहज शत्रु है। हिन्दुत्व के उभार से उनका अपना अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है। इसलिए उन्होंने हिन्दुत्व को अपना शत्रु क्रमांक १ मान लिया है और इसके विरोध में वे अपनी अस्तित्व-रक्षा के लिए चाहे जिसके साथ हाथ मिलाने को तैयार हैं। चाहे वह कांग्रेस हो, चाहे चर्च, कट्टरपंथी मुल्ला, चाहे जातिवादी हों या क्षेत्रवादी। वामपंथियों के पास दिल नहीं होता, संवेदना नहीं होती, केवल स्वार्थ होते हैं और दिमाग होता है जो पूरी तरह नकारात्मक है और हर समय अपने शत्रु के विरुद्ध तर्कजाल बुनने में जुटा रहता है। अपने क्षुद्र व्यक्तित्व और दलीय स्वार्थों के लिए राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की बलि देने को तैयार इन छोटे दिल वाले उदारवादियों से पूछता हूं कि अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बंगलादेश को हिन्दू-बनने से उनकी उदारता क्यों नहीं रोक पायी? वे सेमेटिक पंथ के पेट में क्यों चले गए?

आजकल मीडिया पर तमिलनाडु मतान्तरण प्रतिबंध अध्यादेश का बुखार चढ़ा हुआ है। तमिलनाडु की जयललिता सरकार ने ५ अक्टूबर को एक अध्यादेश जारी करके बलात्, छलपूर्वक या प्रलोभन से मतान्तरण के प्रयासों पर रोक लगायी और उसके लिए कठोर दंड का प्रावधान किया। आश्चर्य है कि इस सर्वथा न्यायोचित अध्यादेश के विरोध में चर्च नेतृत्व मैदान में उतर आया। इससे भी बड़ा आश्चर्य यह है कि अध्यादेश विरोधी अभियान में मुस्लिम नेतृत्व भी उनके साथ खड़ा हो गया। टेलीविजन पर विरोध प्रदर्शन में सफेद चोगाधारी पादरियों और लम्बी दाढ़ी वाले मुल्लाओं को कन्धे से कन्धा भिड़ाकर नारे लगाते देखा, बहुत ही विचित्र लगा। पूरे विश्व में चर्च और मुल्ला आमने-सामने खड़े हैं। इण्डोनेशिया के बाली द्वीप से लकर अमरीका तक सब जगह ईसाई मुस्लिम आतंकवादी हमलों का शिकार बन रहे हैं। सभ्यताओं के संघर्ष का राग अलापा जा रहा है। मुस्लिम मीडिया बड़े गर्व के साथ अमरीका, यूरोप और अफ्रीका में ईसाइयों के मतान्तरण के आंकड़े प्रसारित कर रहा है और ईसाई बुद्धिजीवी जिहाद की इस्लामी विचारधारा के ऐतिहासिक स्रोतों पर शोध साहित्य प्रकाशित कर रहे हैं। ऐसे में क्या यह विचित्र नहीं कि भारत की धरती पर मतान्तरण के प्रश्न पर पादरी-मुल्ला गठबंधन का अप्रत्याशित दृश्य हमारे सामने खड़ा है।

बल, छल और प्रलोभन से मतान्तरण पर रोक के इतने उग्र विरोध का अर्थ है कि दोनों ही मतान्तरणवादी तत्व स्वीकार करते हैं कि मतान्तरण के लिए वे इन तीनों रास्तों को अपनाते रहे हैं और आगे भी अपनाने पर दृढ़ हैं इस अध्यादेश के विरुद्ध चर्च ने अपने विद्यालयों और अस्पतालों को बन्द करने की धमकी देकर यह स्पष्ट कर दिया है कि शिक्षा और सेवा के उनके कार्य निःस्वार्थ न होकर मतान्तरण की अधारभूमि तैयार करने के प्रयास हैं। किन्तु इससे भी बड़ा सत्य यह उभर कर आया है कि ये दोनों ही मतान्तरवादी और विस्तारवादी सम्प्रदाय हिन्दू समाज को ही अपना शिकार समझते हैं। उनकी दृष्टि में यह अध्यादेश हिन्दू समाज का बचाव करता है। इसलिए यह अल्पसंख्यक समाजों पर आक्रमण है। इसलिए अल्पसंख्यक एकता का आह्वान किया गया है। तमिलनाडु अल्पसंख्यक आयोग का प्रतिनिधिमण्डल मुख्यमंत्री जयललिता से मिला। इस प्रतिनिधिमंडल में एक सिख सज्जन की उपस्थिति देखकर और भी विचित्र लगा। क्योंकि कुछ ही महीने पहले चर्च द्वारा कुछ सिखों के मतांतरण के विरोध में सिख समाज में शोर मचा था। तब राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के उपाध्यक्ष सरदार तरलोचन सिंह ने चर्च को चेतावनी दी थी कि वे मतान्तरण से बाज आयें। अल्पसंख्यक आयोग की इस चेतावनी पर रचनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करने के बजाय जानदयाल जैसे लोगों ने चर्च का प्रवक्ता बनकर सरदार तरलोचन सिंह के विरुद्ध प्रचार अभियान छेड़ दिया और उन्हें हिन्दुत्व का एजेंट घोषित कर दिया।

मुल्ला-पादरी गठबंधन का यह आक्रामक रुख अपनाने का साहस क्यों हो रहा है? इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए तमिलनाडु बलात् मतान्तरण निरोधक अध्यादेश पर हिन्दू राजनीतिज्ञों, बुद्धिजीवियों और पत्रकारों की प्रतिक्रिया का अध्ययन आवश्यक है। यह विश्वास करना कठिन है कि इस अध्यादेश के विरोध में कम्युनिस्ट पार्टियां और कांग्रेस मैदान में आ गए। कम्युनिस्ट अपने को ऐसा 'सेकुलर' मानते हैं जिनका पूजा-पाठ और मत-पंथ से कुछ लेना-देना नहीं है जो धर्म के प्रति पूरी तरह उदासीन या नास्तिक हैं। और यह कांग्रेस क्या सचमुच वही कांग्रेस है जिसकी मध्य प्रदेश सरकार ने १९५४ में चर्च के छल-छद्म की जांच के लिए

नियोगी आयोग बैठाया था और उसकी ९३७ पृष्ठों की भारी-भरकम रपट में भोले-भाले, अज्ञानी एवं गरीब वनवासियों के मतान्तरण के लिए चर्च द्वारा अपनाए गए हथकंडों के साक्ष्य प्रस्तुत किए थे? उड़ीसा की कांग्रेस सरकार ने ही १९६७ में मतान्तरण निरोधक कानून बनाने की पहल की थी, जिसका अनुकरण कर मध्य प्रदेश की कांग्रेस सरकार ने भी १९६८ में मतान्तरण विरोधी कानून बनाया था। इन कानूनों के विरोध में जब चर्च ने सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया तो सर्वोच्च न्यायालय ने भी १९७७ में अपने निर्णय में स्पष्ट कर दिया कि संविधान द्वारा प्रदत्त पंथ के प्रचार का अधिकार मतान्तरण का अधिकार नहीं देता। आज के कांग्रेस जनों को यह भी पता नहीं कि मतान्तरण के विरोध में सबसे सशक्त स्वर महात्मा गांधी का रहा है। यदि कांग्रेसियों में गांधी जी के विचारों को पढ़ने और गुनने की रुचि व प्रवृत्ति होती तो वे इस अध्यादेश का हृदय से स्वागत करते। उसका विरोध करने की लज्जास्पद स्थिति कदापि पैदा न करते। किन्तु आज के कांग्रेसियों के आराध्य महात्मा गांधी नहीं, विदेशी मूल की ईसाई महिला सोनिया गांधी हैं।

हम लगातार कहते आ रहे हैं कि सोनिया गांधी का एकमात्र लक्ष्य प्रधानमंत्री बनना है। प्रधानमंत्री पद के मार्ग में वे एकमात्र बाधा के रुप में भारतीय जनता पार्टी और उसकी पीठ पर खड़े संघ विचार परिवार को देखती हैं। संघ विचार परिवार की शक्ति उसकी हिन्दुत्वनिष्ठा में है। इसलिए भारतीय जनता पार्टी को राजनीतिक दृष्टि से कमजोर करने के लिए हिन्दुत्व की विचारधारा पर प्रहार करना व अल्पसंख्यकवाद को बढ़ावा देना आवश्यक है। हिन्दुत्व विरोधी अभियान में भारत के वामपंथी मस्तिष्क का पूरा सहयोग सहज ही प्राप्त हो सकता है, क्योंकि वे जन्मना अध्यात्म एवं हिन्दुत्व विरोधी हैं। योजनापूर्वक उन्होंने भारत के शैक्षिक और मीडिया जगत में घुसपैठ करके अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया है। अतः सोनिया गांधी की राजनीति इस समय पूरी तरह वामपंथी राजनीतिज्ञों, बुद्धिजीवियों और पत्रकारों के कंधे पर टिकी हुई है। वामपंथ सोचता है कि हिदुत्व उसका सहज शत्रु है, हिन्दुत्व के उभार से उनका अपना अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है। इसलिए उन्होंने हिन्दुत्व को अपना शत्रु क्रमांक १ मान लिया है और उसके विरोध में वे अपनी अस्तित्व-रक्षा के लिए चाहे जिसके साथ हाथ मिलाने को तैयार हैं। चाहे वह कांग्रेस हो, चाहे चर्च कट्टरपंथी मुल्ला, चाहे जातिवादी हों, चाहे क्षेत्रवादी। वामपंथियों के पास दिल नहीं होता, संवेदना नहीं होती, केवल स्वार्थ होते हैं और दिमाग होता है जो पूरी तरह नकारात्मक है और हर समय अपने शत्रु के विरुद्ध तर्कजाल बुनने में जुटा रहता है। इस नकारात्मक मस्तिष्क में मीडिया एवं शैक्षिक जगत पर अपने वर्चस्व का दुरुपयोग करके हिन्दुत्व के विरुद्ध ऐसा विषाक्त वायुमंडल पैदा कर दिया है मानो संसार का सबसे खराब विचार प्रवाह 'हिन्दुत्व' ही है। यदि 'हिन्दुत्व' को मिटा दिया जाए तो भारत स्वर्ग बन जाएगा, सब बुराइयां समाप्त हो जाएंगी।

इसलिए उनकी प्रत्येक प्रतिक्रिया हिन्दुत्ववादी शक्तियों के विरुद्ध केन्द्रित रहती है। तमिलनाडु के बलात् मतान्तरण प्रतिबंध अध्यादेश का विरोध आवश्यक है, क्योंकि वहां की मुख्यमंत्री जयललिता सोनिया गांधी का विरोध कर रही हैं। इसलिए वे केन्द्र की भाजपानीति सरकार और संघ विचार परिवार की समर्थक हैं। संघ विचार परिवार को प्रसन्न करने और केन्द्र सरकार की कृपादृष्टि को प्राप्त करने के लिए ही यह अध्यादेश ४ अक्टूबर से होने वाले विधानसभा अधिवेशन की प्रतीक्षा न करके जल्दबाजी में बिना किसी तात्कालिक औचित्य के लागू किया गया है। अर्थात् अध्यादेश को पूरी तरह राजनीतिक रंग दे दिया गया। उसे अल्पसंख्यक को उभाड़ने का हथियार बना लिया गया है। इस नकारात्मक राजनीतिक सोच का ही परिणाम है कि दक्षिण पूर्वी एशिया में एकमात्र हिन्दू जनसंख्या वाले बालीद्वीप में सैकड़ों निर्दोषों की हत्या के जिहादी कृत्य पर ये दल और बुद्धिजीवी मौन हैं। एक अमरीकी पादरी के पैगम्बर मुहम्मद विरोधी उद्गार हजारों मील दूर भारत के शोलापुर नगर में हिन्दुओं के विरुद्ध हिंसा, प्रदर्शन पर भी इन्हें तनिक चिंता नहीं, पड़ोस में बंगलादेश में हिन्दू मंदिरों एवं हिन्दू अल्पसंख्यकों पर अत्याचारों के ताजा समाचारों पर भी इनकी कोई प्रतिक्रिया नहीं। हिन्दू अल्पसंख्यकों पर अत्याचारों के विरुद्ध स्वर उठाने के अपराध में बंगलादेश की बेटी तसलीमा नसरीना को देश निकाला देने और अनुपस्थिति में कारावास की सजा सुनाने के विरोध में भी इन बुद्धिजीवियों ने कोई आवाज नहीं उठायी। किन्तु यदि आतंकवाद का सामना करने के लिए हिन्दू युवकों को आत्मबलिदान के पथ पर बढ़ने का आह्वान शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे ने दे दिया तो ऐसा तूफान खड़ा कर दिया गया कि मानो आसमान फट गया हो। मानो इससे बड़ा अपराध कोई हो ही नहीं सकता। क्या सचमुच दूसरे मतावलम्बी निर्दोष एवं असावधान स्त्री-बच्चों की हत्या करने वाले आतंकवाद के विरुद्ध आत्मबलिदान तक के लिए तैयार रहना आज की आवश्यकता नहीं है? आखिर,

आत्मबलिदानी जिहादी दस्तों ने ही तो अमरीका में ११ सितम्बर को रचाया था, १३ दिसम्बर को भारतीय संसद पर हमला किया था। यदि कोई विचारधारा निर्दोषों की हत्या के लिए आतंकवादियों में आत्मबलिदान का जुनून पैदा करती है तो क्या उसका मुकाबला ये सुविधाजीवी विकाऊ कलमशूर कर पाएंगे?

अपनी कायरता को छिपाने के लिए इनका तर्क होता है कि हिन्दुत्व की विचारधारा बहुत उदार है, बहुत सहिष्णु है, अहिंसक है, शांतिप्रिय है, विविधतावादी है, समावेशी है। ये गुण ही उसकी पहचान हैं, उसकी विशेषता हैं, उसकी शक्ति हैं। अल्पसंख्कों को सब प्रकारकी सुविधाएं और अधिकार देना यही बहुसंख्यक हिन्दू समाज की उदारता की एकमात्र कसौटी है। अल्पसंख्यकों की विस्तारवादी, पृथकतावादी गतिविधियों को रोकने का अर्थ है कि हिन्दू समाज अपने मूल चरित्र को खोकर सेमेटिक पंथों के रास्ते पर जा रहा है। इसलिए हिन्दूसमाज की आत्मरक्षा के प्रयासों को वे सेमेटीकरण की श्रेणी में 'अहं' को तुष्ट करना चाहते हैं कि अहो, हम तो सेमेटिक पंथों से बहुत श्रेष्ठ हैं पर उनका वास्तविक उद्देश्य हिन्दूसमाज की विविधता को परस्पर विरोधी एवं टकरावपूर्ण बनाकर हिन्दूसमाज को विखण्डित करना और उसे निगलने के लिए आतुर विस्तारवादी पंथों को बहुसंख्यक बनने का रास्ता साफ करना है। अपने क्षुद्र व्यक्तिगत और दलीय स्वार्थों के लिए राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की बलि देने को तैयार इन छोटे दिल वाले उदारवादियों से मैं पूछता हूं कि अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बंगलादेश को हिन्दू-शून्य बनने से उनकी उदारता क्यों नहीं रोक पायी? वे सेमेटिक पंथ केपेट में क्यों चले गए? पाकिस्तान टेलीविजन गर्व से कहता है कि पाकिस्तान की नींव उस दिन पड़ी जब इस्लाम की फौजों ने सिंध पर कब्जा किया और पहले हिन्दू को मुसलमान बनाया। क्या इन अक्लमंदों को यह दिखाई नहीं देता कि हिन्दू समाज ने अपनी उदार विचारधारा के कारण मतान्तरण कभी किसी पर नहीं थोपा पर वह स्वयं मतान्तरण का शिकार बना रहा। उसका भौतिक अधिष्ठान लगातार छोटा होता गया और आज खण्डित भारत में भी मतान्तरण का शिकार बना हुआ है। दुर्भाग्य की बात यह है कि इस मतान्तरण को हिन्दू समाज के भीतर से ही सत्तालोलुप राजनीतिज्ञों एवं विकाऊ वामपंथी बुद्धिजीवियों का समर्थन प्राप्त हो रहा है। यह उनकी वोट बैंक राजनीति का हिस्सा बन गया है।

वोट बैंक राजनीति का ही परिणाम है कि पंथनिरपेक्षता, सामाजिक न्याय और लोकतंत्री विकेन्द्रीकरण के नाम पर सत्तालोलुप राजनीतिकहिन्दू समाज को जाति और क्षेत्र के नाम पर बांट रहे हैं। यह ऐतिहासिक सत्य है कि भारतीय समाज में जाति, जनजाति, जनपद और भाषा की चेतना गहरी है। इस समाज ने व्यक्ति-व्यक्ति के बीच बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक, गुण-सम्पदा और क्षमता के जन्मजात अन्तर को स्वीकार करके उनमें से उपजी आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विषमताओं को परम्परावलम्बी, पूरक एवं ऊर्ध्वगामी बनाने की कोशिश की। जीवन, जगत् और ब्रह्म के रहस्यों का साक्षात्कार कर उनकी एकता का दर्शन विकसित किया। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' और 'सर्व भूत हिते रतः' का उद्घोष किया। चाण्डाल, ब्राह्मण, गाय, कुत्ते व हथिनी के प्रति समदर्शी को ही ब्राह्मण माना। चाहे जिस मार्ग से उपासना करने की छूट दी और कहा कि महत्व उपासना-पद्धति या आराध्य का नहीं, महत्व श्रद्धा का है। मन की शुद्धता का है, -'मन चंगा तो कठौती में गंगा'। धर्म किसी कर्मकाण्ड का नहीं, गुणों का समुच्य है। धर्म के दस लक्षण बताए, **शुद्धता, इन्द्रिय-निग्रह, दया, क्षमा, दान, अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह** आदि। जीवन का लक्ष्य माना त्रिगुणात्मक प्रकृति से आगे बढ़कर ब्रह्मैक्य प्राप्त करना। यही मोक्ष है, यही निर्वाण है, यही कैवल्य है। इसलिए जीवन के विकास की कसौटी भौतिक समृद्धि को नहीं सांसारिक सुखों के परित्याग को माना। आध्यात्मिक विकास के मार्ग में बाधक व्यसनों को पहचाना—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर। क्रमशः गुणों की वृद्धि करना और व्यसनों से मुक्ति पाना ही जीवन की प्रगति का मार्ग है।

पर, यह सब तो केवल शब्द-जाल है। अमूर्त जीवन-दर्शन है, उदात्त जीवन मूल्य है। भौतिक आधार के बिना अर्थहीन है और वह भौतिक आधार है समाज। अतः हमारे पूर्वजों ने इन अमूर्त जीवन मूल्यों, अध्यात्म-दर्शन की अभिव्यक्ति समाज-जीवन का ताना-बाना रचा। कुलधर्म, जातिधर्म, ग्रामधर्म, समाजधर्म, देशधर्म, युगधर्म, पञ्चमहायज्ञ, आश्रम व्यवस्था, वर्ण-धर्म आदि व्यावहारिक व्यवस्था खड़ी की। वह उदात्त जीवन दर्शन जिसकी प्रशंसा केवल परम्परावादी ही नहीं प्रगतिवादी सेकुलर भी करते हैं। इस समाज जीवन के अखण्ड प्रवाह के माध्यम से ही हम तक पहुंचा है। सहस्राब्दियों से इन संस्कारों के कारण ही इस हिन्दू समाज ने देश-विभाजन की विभीषिका से घिरे होने पर भी विभाजन का झंडा उठाने वाले मुसलमानों को पूरे अन्तःकरण से अपने खण्डित भारत में शरण दी, अपने संविधान में मतान्तरवादी, विस्तारवादी अल्पसंख्यकों को अपने से अधिक अधिकार एवं सुविधाएं प्रदान कीं,

उन्हें न केवल उपासना करने बल्कि अपने पंथ का प्रचार करने की भी स्वतंत्रता दी। यह सत्य है कि सैकड़ों साल तक विदेशी आक्रमणों का सामना करने एवं राजनीतिज्ञ पराधीनता भोगने के कारण समाज का जीवन-प्रवाह अवरुद्ध हो गया, जड़ता को प्राप्त हुआ, उसमें अनेक प्रकार की विकृतियां आ गयीं।

स्वाधीनता प्राप्त होने पर उन विकृतियों से छुटकारा पाने की हमारी राष्ट्रीय आकांक्षा और संकल्प संविधान की समुद्देशिका में निबद्ध है। किन्तु संविधान का ढांचा भारत की मिट्टी में से उपजा होने के बजाय ब्रिटिश शासकों द्वारा आरोपित ब्रिटिश संसदीय प्रणाली की अंधानुकृति मात्र है। इस राजनीतिक प्रणाली के पीछे ब्रिटिश साम्राज्यवादियों का एकमात्र उद्देश्य भारतीय समाज की बहुआयामी विविधता को परस्पर पूरक बनाने के बजाय परस्पर विरोधी बनाना था। हमारी जाति, भाषा, संघ और क्षेत्रगत संकीर्ण निष्ठाओं को राष्ट्रीयता के धरातल तक ऊंचा उठाने के बजाय उन्हें अपनी संकीर्णता में सुदृढ़ करना और राष्ट्रीयता के साथ उनका टकराव पैदा करना था। स्वाधीन भारत के पिछले ५७ वर्षों का इतिहास साक्षी है कि यह विभाजनकारी, भ्रष्टाचारी राजनीतिज्ञ प्रणाली क्रमशः हमें सामाजिक विखण्डन और राजनीतिक बिखराव के गड्ढे में धकेल रही है। अनेक जातिवादी, क्षेत्रवादी और भाषावादी राजनीतिक दलों का उदय इस राजनीतिक प्रणाली की ही देन है। अब तो स्थिति यह हो गई है कि प्रत्येक सत्ताकांक्षी राजनीति किसी एक क्षेत्र में किसी एक जाति को अपना वोट बैंक बनाकर लोकसभा को पूरी कर सकता है। इसलिए सामाजिक विखण्डन और राजनीतिक बिखराव में इन राजनीतिज्ञों का निहित स्वार्थ पैदा हो गया है। राजनीतिक एकता और स्थायित्व को वे अपने व्यक्तिगत और दलीय हितों के शत्रु के रूप में देखने लगे हैं। सत्तालोलुप वोट बैंक राजनीति, सेकुलरिज्म, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता की ऊंची भाषा के आवरण में एक ओर हिन्दू समाज को छिन्न-भिन्न करने में लगी है तो दूसरी ओर अल्पसंख्यकवाद के नाम पर मतान्तरवादी पंथों को राष्ट्रीय प्रवाह से अलग एकजुट करने का काम कर रही है। ये मतान्तरवादी पंथ हिन्दू समाज के आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से कमजोर वर्गों को हड़पने के लिए उनके मन में हिन्दू समाज के प्रति घृणा, विद्वेष और कटुता का भाव भरे रहे हैं। अनुसूचित जातियों और जनजातियों को समझाया जा रहा है कि वे हिन्दू नहीं हैं। सनातन काल से वे हिन्दू धारा से अलग रहे हैं। हिन्दू समाज से संबंध विच्छेद करके ही उनके सामाजिक-आर्थिक विकास का पथ प्रशस्त हो सकता है। इसलिए दलित-मुस्लिम एकता का नारा लगाया जा रहा है, ईसाई-दलित एकता का नारा उछल रहा है। दलित शब्द को 'मत' से अलग करके एक सामाजिक श्रेणी कहा जा रहा है।

एक ओर चर्च ढाई तीन सौ साल पहले मतान्तरित दलित ईसाइयों को सामाजिक बराबरी आदि की सुरक्षा प्रदान नहीं कर पाया है और उन्हें अपने चंगुल में फंसाये रखने के लिए उनके लिए आरक्षण की सुविधा मांग रहा है। दूसरी ओर समता के अपने आदर्श का बखान करने वाला इस्लाम भी भारत में दलित मुसलमानों के लिए आरक्षण की मांग कर रहा है। इस मांग को पूरा करवाने के लिए अपने वोट बैंक का राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रहा है। इस दबाव में आकर एक दो राज्यों में विशुद्ध राजनीतिक कारणों से दलित मुसलमानों को आरक्षण का अधिकार देकर न केवल संविधान का उल्लंघन किया गया है, बल्कि मतान्तरण के रास्ते से एक और बाधा हटा दी गयी है। मुस्लिम नेतृत्व १९०६ से ही हिन्दू समाज की दलित जातियों को हड़पने की योजनाएं बनाता रहा है। १९२३ के काकीनाड़ा कांग्रेस अधिवेशन में मुहम्मद अली ने कांग्रेस अध्यक्ष पद से दलित जातियों को सवर्णों और मुसलमानों के बीच आधा-आधा बांट लेने का निर्लज्ज प्रस्ताव रखा था। निजाम हैदराबाद ने १९४७ में एक दलित नेता बी. श्यामसुन्दर को एक करोड़ रुपया दिया था कि वे दलितों को इस्लाम मजहब कबूल कराएं। तस्कर हाजी मस्तान ने दलित-मुस्लिम एकता का नारा बुलंद किया था। बंगलौर के चर्च पोषित दलित पत्रकार वी. टी. राजशेखर ने 'थीसिस' निकाली कि आक्रमणकारी आर्यों की सन्तान ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ही वास्तविक उत्पीड़क और शोषक हैं, केवल वही हिन्दू कहलाने के अधिकारी हैं। शेष ८५ प्रतिशत जनसंख्या जिनमें मध्यम जातियां, अनुसूचित जातियां, जनजातियां व सभी अल्पसंख्यक सम्प्रदाय शोषित वर्ग हैं। उन्हें एकजुट होकर १५ प्रतिशत सवर्णों को सत्ता से बाहर कर देना चाहिए। इसी विचारधारा में से कांशीराम व मायावती के नेतृत्व में पहले डी.एस.४ बाद में बहुजन समाजपार्टी का जन्म हुआ। बहुजन समाज पार्टी का टिकट लेकर अनेककट्टरवादी मुस्लिम प्रत्याशी दलित वोटों पर सवार होकर उत्तर प्रदेश विधानसभा व लोकसभा में पहुंच गए। किन्तु कांशीराम और मायावती ने पाया कि उनकी निष्ठा बहुजन समाज पार्टी के लिए नहीं, मुस्लिम पृथकतावाद के प्रति है। उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। इस अनुभव के आलोक में पिछले चुनाव में मायावती ने सवर्णों सहित सभी जातियों के लोगों को विधायक बनाया और अब

एक ओर चर्च ढाई-तीन सौ साल पहले मतान्तरित दलित ईसाइयों को सामाजिक बराबरी आदि की सुरक्षा प्रदान नहीं कर पाया है और उन्हें अपने चंगुल में फंसाये रखने के लिए उनके लिए आरक्षण की सुविधा मांग रहा है। दूसरी ओर समता के अपने आदर्श का बखान करने वाला इस्लाम भी भारत में दलित मुसलमानों के लिए आरक्षण की मांग कर रहा है। इस मांग को पूरा करवाने के लिए अपने वोट बैंक का राजनीतिक हथियार के रुप में इस्तेमाल कर रहा है। इस दबाव में आकर एक-दो राज्यों में विशुद्ध राजनीतिक कारणों से दलित मुसलमानों को आरक्षण का अधिकार देकर न केवल संविधान का उल्लंघन किया गया है, बल्कि मतान्तरण के रास्ते से एक और बाधा हटा दी गयी है। वोट बैंक राजनीति का ही परिणाम है कि पंथनिरपेक्षता, सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक के नाम पर सत्तालोलुप राजनीतिा हिन्दू समाज को जाति और क्षेत्र के नाम पर बांट रहे हैं। यह ऐतिहासिक सत्य है कि भारतीय समाज में जाति, जनजाति, जनपद और भाषा की चेतना गहरी है।

बहुजन समाज पार्टी पुरानी समाजतोड़क भूमिका को छोड़कर पूरे समाज का प्रतिनिधित्व करने की कोशिश कर रही है। उत्तर प्रदेश में बसपा-भाजपा गठबंधन की सरकार सत्ता-राजनीति के स्वार्थ से आगे बढ़कर सामाजिक एकता का महाप्रयोग बन सकती है। किन्तु राजनीतिज्ञों की व्यक्तिगत सत्ताकांक्षा ऐसे किसी भी प्रयोग की सफलता में सबसे बड़ी बाधा है। उत्तर प्रदेश में मंत्री पद पाने के लिए इस समय जो छीना-झपटी चल रही है, उससे स्पष्ट है कि हमारे वर्तमान राजनीतिज्ञों को न धर्म से प्यार है, न समाज से और न देश से। वे अपनी व्यक्तिगत सत्ताकांक्षा को पूरा करने के लिए चाहे जितना नीचे गिर सकते हैं। हिन्दू चरित्र पर इससे बड़ा कलंक क्या हो सकता है।

किन्तु मायावती के राजनीतिक उत्कर्ष ने कई दलित नेताओं के मन में उनके प्रति भारी ईर्ष्या व विद्वेष पैदाकर दिया है। आज की दलित राजनीति इसी सत्ता स्पर्धा में फंसी हुई है। और उनकी व्यक्तिगत सत्ताकांक्षा का लाभ चर्च व मुल्लावाद उठाने की कोशिश कर रहा है। इसका एक उदाहरण है रामराज नामक व्यक्ति जो अब अपने को उदितराज कहता है। जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय में कम्युनिस्ट छात्र कार्यकर्ता रहा यह व्यक्ति स्वयं को अनुसूचित जाति जनजातियों के अ. भा. संघ का अध्यक्ष कहता है। कभी वह जानदयाल और डिसूजा जैसे चर्च नेताओं तो कभी पृथकतावादी मुस्लिम नेताओं के साथ संवाददाता सम्मेलन करते देखा जाता है। उसका एकमात्र कार्यक्रम है दलितों को हिन्दू समाज छोड़कर मतान्तरण के रास्ते पर धकेलना। उसकी एकमात्र ताकत यह है कि हिन्दू समाज के प्रति उसकी गालियों को मीडिया छापता है या बढ़ा-चढ़ाकर छापता है। रामविलास पासवान ने केन्द्रीय सरकार में मंत्रिपद के सहारे काफी पैसा जमा कर लिया और इस पैसे के बल पर वे दलित सेना खड़ी कर रहे हैं। उनका एकमात्र लक्ष्य है मायावती से बड़ा नेता बनना। नेतृत्व के चक्कर में पड़े इस नेतृत्व का इस्तेमाल मुस्लिम कट्टरवाद कर रहा है। रामराज या उदितराज अब दलित-मुस्लिम एकता का प्रवक्ता बन गया है। उसे सामने रखकर मुस्लिम कट्टरवाद हिन्दू विरोधी प्रदर्शन आयोजित करता है।

गोधरा नरसंहार की प्रतिक्रिया में गुजराती समाज ने अपनी एकजुटता प्रदर्शित करके दलित जनजाति और नारी के नाम पर चल रही इस विभाजनकारी राजनीति को धराशायी कर दिया। समाज को तोड़ने की राजनीति करने वाले यह देखकर दंग रह गए कि गुजरात की जनजातियां, दलितवर्ग एवं नारीसमाज मुस्लिम आतंकवाद के विरुद्ध एकजुट होकर खड़ा हो गया। इस दृश्य से घबरा कर मुस्लिम कट्टरवाद ने रामराज/उदितराज नामक शिखण्डी को सामने खड़ा करके दलित-मुस्लिम रैली का स्वांग रचा। उधर, २५ अगस्त को अंजुमन-ए-इमदादुल मुसलमीन, भड़ौंच में गुजरात दलित-मुस्लिम एकता का प्रथम सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें बंगलौर के टी.वी. राजशेखर मुख्यवक्ता थे। उनके अंग्रेजी भाषण का मुस्लिम श्रोताओं के लिए उर्दू अनुवाद करने के लिए वे अपने साथ बंगलौर के एक वकील इकबाल अहमद शरीफ को लाए। यह लम्बा भाषण उनके पाक्षिक 'दलित वायस' (१-१५ अक्टूबर) में छपा है। इस भाषण में वे विलाप कर रहे हैं कि गुजरात ने उनके मुस्लिम-दलित एकता के २० वर्ष लम्बे प्रयासों को एक बारगी धराशायी कर दिया। उन्होंने दलितों से कहा कि वे हिन्दू नहीं हैं, मुसलमानों से कहा कि दलितों की मदद के बिना आप हिन्दू आक्रमण का विरोध नहीं कर पाएंगे। हिंदूसमाज इस समय दोहरे आक्रमण की चपेट में घिरा है। एक ओर वोट बैंक राजनीति उसे भीतर से तोड़ रही है, गृहकलह में फंसा रही है, दूसरी ओर विस्तारवादी मजहब उसे मतान्तरिक करके उसके अस्तित्व को मिटाने में जुटे हैं। इस राष्ट्र विघातक विचारधारा को समझने के लिए राजशेखर के साहित्य को प्रत्येक जागरुक राष्ट्रभक्त को अवश्य पढ़ना चाहिए।

अभी १५ अक्टूबर को हरियाणा के झज्जर जिले के दुलानी नामक गांव में गोहत्या के कारण ५ लोगों की हत्या का जघन्य कृत्य घटा। यह हत्या किसने की? पुलिस ने या दशहरा के मेले से लौटती हुई भीड़ ने? अभी तक इसका निर्णय नहीं हो सका। तरह-तरह की कहानियाँ समाचारपत्रों में आ रही है। किन्तु इतना निश्चित है कि हत्या का कारण यह नहीं था कि वे दलित जातियों के थे, सच तो यह है कि यह पता भी नहीं था कि वे कौन हैं। बाद में पता चला कि वे सब दलित जाति के थे। कुछ भी हो, यह घटना बहुत दुःखद और निंदनीय है। उसके अपराधियों को कड़े से कड़ा दंड मिलना ही चाहिए। किन्तु इसका दुर्भाग्य पक्ष यह है कि यह पता लगते ही कि मारे गए युवक अनुसूचित जातियों के है, तुरंत इस घटना को राजनीतिक रंग दे दिया गया। विश्व हिन्दू परिषद् का नाम उसमें घसीट लिया गया। यद्यपि बसपा के विधायक नरेन्द्रसिंह कश्यप ने घटनास्थल पर जाकर पूरी छानबीन करके कहा कि इस घटना से विश्व हिन्दू परिषद् का कुछ लेना-देना नहीं है। किन्तु उदितराज ने तुरंत घोषणा कर दी कि मृतकों के सभी परिजन हिन्दूसमाज को छोड़कर बौद्धधर्म में चले जाएंगे। बौद्धधर्म अपनाने का अर्थ हिन्दूसमाज से सम्बन्ध विच्छेद मात्र है। बौद्धधर्म का भारत में अपना कोई संगठन न होने के कारण उन्हें आसानी से चर्च या मुल्ला हड़प सकते हैं।

वस्तुतः यहां हमें मुस्लिम और ईसाई मानसिकता में अंतर करना होगा। ईसाई समाज पूरी तरह चर्च के मतान्तरण प्रयासों के साथ नहीं है। चर्च में व्याप्त विलासिता, यौनाचार और भेदभाव के विरुद्ध ईसाई समाज में असंतोष बढ़ रहा है। केरल में ४४ वर्षीय एक पादरी पी. जे. पलात ने दलित ईसाइयों के प्रति भेदभाव, चर्च में व्याप्त वित्तीय अनियमितताओं और यौन भ्रष्टाचार के विरुद्ध ४४ दिन लम्बी भूख हड़ताल की। कई ईसाई संगठनों ने फादर पलात के समर्थन में आंदोलन करने की घोषणा की है। अभी तमिलनाडु में सेवेन्थ डे एडवेंटिस्ट चर्च ने मदुरै जिले में २५० दलितों को ईसाई बनाया और १० लाख हिन्दुओं को मतान्तरित करने का लक्ष्य घोषित किया। उन्होंने मतान्तरण विजय रैली निकाली जिस पर दलित ईसाइयों ने हमला कर दिया। उनका कहना है कि जब चर्च अपने घर में अस्पृश्यता नहीं मिटा सकता तो नए मतान्तरण का क्या अर्थ है? प्रबुद्ध ईसाई चर्च के आन्तरिक पतन के कारण यूरोप और अमरीका में उसके घटते प्रभाव को देखकर यह कहने लगे हैं कि मतान्तरण कालबाह्य है। मतान्तरण को बंद करना चाहिए। वे हिन्दू समाज के श्रेष्ठ संस्कारों और गुणों को भी पहचानने लगे हैं। केरल उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश के. टी. थामस ने निःसंदिग्ध घोषणा की कि चर्च को मतान्तरण बंद कर देना चाहिए। २० अक्टूबर को इंडियन एक्सप्रेस ने तमिलनाडु मतान्तरण निरोधक अध्यादेश पर दो पृष्ठों की सामग्री छापी। उसी दिन "दि हिन्दू" ने भी इस विषय पर दो पृष्ठ दिए। इंडियन एक्सप्रेस ने कोलकाता के आनंद बाजार पत्रिका समूह के एक ईसाई संपादक टोनी जोसेफ ने अपने लम्बे लेख में हिन्दू समाज की उदारता-सहिष्णुता सर्वग्राहकता की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए चर्च से सवाल पूछा है कि ऐसे समाज के बीच २००० साल तक काम करने के बाद भी चर्च केवल २.३२ प्रतिशत जनसंख्या का ही मतान्तरण कर पाया? इसका उत्तर चर्च को अपने भीतर खोजना चाहिए। उन्होंने लिखा है, 'भारत जैसी खुली, स्वागत करने वाली और सबको सुनने के लिए इच्छुक सभ्यताएं संसार में कितनी हैं? शायद ही कोई सभ्यता हो जो भारत जैसे आत्मविश्वास और उदार चेतना से सम्पन्न होने का दावा कर सके। आगे चलकर श्री जोसेफ चर्च को दो सुझाव देते हैं—एक यह कि चर्च यह घोषणा करे कि सभी उपासना पंथ ईश्वर तक पहुंचते हैं, केवल ईसा ही उनका माध्यम नहीं है। दूसरा यह कि चर्च मतान्तरण को पूरी तरह बंद कर दे और पश्चिम में अपने घटते प्रभाव को वापस पाने के लिए भारत की आध्यात्मिकता से कुछ सीखे।

इसके विपरीत उसी दिन के 'दि हिन्दू' में हिन्दू कुल में जन्मी वामपंथी महिला पत्रकार नीना व्यास का आलेख पढ़िए। वह पहली पंक्ति से आखिरी तक हिन्दुत्व-निंदा और इस्लाम के स्तुतिगान से भरा है। सभी वामपंथी लिक्खाड़ केवल राजनीतिक कारणों से हिन्दुत्व निंदा में जुट गए हैं। हिन्दू समाज को वास्तविक खतरा ईसाई या मुस्लिम कट्टरतावाद से नहीं, बल्कि हिन्दू नामधारक बिकाऊ, आत्मविस्मृत और विद्वेष से भरे वामपंथी लिक्खाड़ों एवं सत्ता के चंद टुकड़ों के लिए समाज और राष्ट्र को तोड़ने के लिए तैयार राजनीतिज्ञों से है। अपने हिन्दुत्व विरोध एवं दलित-मुस्लिम एकता आग्रह के कारण ही वी.टी. चन्द्रशेखर को अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में इस वर्ष डॉ. अम्बेडकर स्मृति व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता के लिए हरियाणा के राज्यपाल बाबू परमानंद बुलाए गए हैं, क्योंकि संयोग से उनका जन्म किसी दलित कहलाने वाली जाति में हुआ है। ये मूर्ख भूल जाते हैं कि यदि हिन्दू समाज रूपी शरीर नहीं रहेगा तो हिन्दुत्व नामक उदात्त जीवन दर्शन रूपी प्राण या आत्मा का अधिष्ठान क्या होगा? **(पांचजन्य से साभार)**

कहानी

शल्य चिकित्सा

शरण

रक्तरंजित तन से अधिक आहत मन लेकर सुग्रीव, शिलाओं का आश्रय लेते शनैः-शनैः ऋष्यमूक के शिखर की ओर आते जैसे ही दिखे, चारों वानरमंत्री और दोनों दाशरथेय उस ओर दौड़े।

सुरक्षित हाथों में भावी वानरराज को देख, हनुमान उन औषधियों की खोज में भागे जो व्रण और पीड़ायें शीघ्र मिटाती हैं। उपचार और एक घड़ी की नींद ने वानरराज को स्वस्थ किया। तथापि अपनी ओर से किसी अन्य ने कुछ नहीं कहा, जब तक कि सुग्रीव ने स्वयं ही प्रारम्भ नहीं किया। शिथिल वानरराज ने बताया—'प्रभु! भैया कुछ भी सुनने की मनस्थिति में नहीं हैं। उनके चरों ने उन्हें यथासमय आपके आगमन और मेरे साथ रुकने की सूचना दी थी। इस घटना ने उन्हें और क्रुद्ध किया। प्राण तो मेरे नहीं लिये भैया ने, पर तन तो हिलने लायक भी नहीं छोड़ा था।

किसी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी—कुछ था ही नहीं सान्त्वना हेतु कहने को।

'अयोध्या की घटनाओं और पड़ोसी राज्यों में आपके निवास कार्य व्यवहार से भी वह अवगत हैं।'

अब भी कोई नहीं बोला—क्या था कहने को?

'उन्हें लगभग निश्चय है कि आप उन्हें विस्थापित और मुझे राज्याभिषिक्त करेंगे।'

अब राम बोले—'मित्र! यह आपके मंत्रिवर आपके लिये रुचिकर फल और औषधि मूल लाये हैं। पौष्टिक पेय हैं। थोड़ा स्वीकार कीजिये और एक नींद और पूरी कर लीजिये। अब आप इस कार्य को मुझ पर छोड़िये न! बहुत हो चुका।'

सबने यथासंभव सुविधा प्रदान की और नींद बिताकर पुनः उठे वानरराज, अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ और सक्रिय लगे।

सब उनके सम्मुख अर्द्धमण्डल बनाते उन स्वच्छ शिलाओं पर बैठे।

राम ने प्रारम्भ किया—'वानरराज! मैं अपने मूल विचार दुहराता हूं, यह विवाद अयोध्या केन्द्र और मित्र राज्य किष्किन्धा के बीच है। लोक द्वारा विस्मृत तीन व्यवस्थायें पुनर्प्रचलित करने का दायित्व देकर हम भेजे गये हैं। वर्तमान शासक के असहमत होने का संदेश हम किसी मध्यस्थ से क्यों लें? हम सीधे वर्तमान शासक से पूछेंगे।'

सुग्रीव ने असहायता की भावना से विरोधी तर्क दुहराया, जिसका रीता होना उनका आहत तन पहले से ही प्रमाणित कर रहा था—'अग्रज लगभग स्वायत्त राज्य का सा व्यवहार कर रहे हैं। राजभवन का, उन्हें छोड़कर कोई भी व्यक्ति आप की बातों पर श्रद्धा से अनुपालन कर लेगा, यहां तक कि किशोर युवराज अंगद भी, महारानी तारा भी, पर भैया का अहं उन्हें विरोधी शिविर में ले जा चुका है। युद्ध निश्चित है और परिणाम भी स्पष्ट! मैं अपने प्राण देकर भी उस अप्रिय प्रसंग को बचाना चाहता हूं। आप जानते तो हैं प्रभु।'

राम ने इस बार स्पष्ट कहा-'महाराज सुग्रीव! मैं तनिक स्पष्टता से बोलूंगा। मेरी त्रुटि सुधारियेगा। मेरे समक्ष तीन विकल्प हैं। एक, युद्ध और महाराज बालि का शरीरान्त! दूसरा, आप के माध्यम से वार्ता और आपका जीवन संकट में डालना। तीसरा, केन्द्र के कार्यक्रम का अनुपालन स्थगित रखना। अब मैं विकल्पहीनता पद्धति पर चलकर कर्तव्य निश्चित करता हूं। तीसरा विकल्प तभी रहेगा जब शरीरान्त महाराज बालि के हाथों युद्ध में हो जाय। दूसरा विकल्प मैं इस नाते नहीं अपनाता कि महाराज बालि के स्थान पर राजवंश का, आपको छोड़कर कोई अन्य व्यक्ति अभिषिक्त नहीं हो सकता, अंगद को अभी तरुण होना है, लोकको अभी समितियों के प्रशासक की प्रथा सीखनी और स्वीकार करनी है। एकमेव मार्ग है—महाराज बालि से सीधे वार्ता और उसके परिणाम भुगतना। बताइये महाराज, कहाँ सुधार करूं?'

'कहीं नहीं प्रभु' —सुग्रीव का कण्ठ रुंध गया—'सारा भावी दृश्य मुझे अतिशय स्पष्ट था, उसी दिन जब आपके दर्शन हुये थे और यात्रा कार्यक्रम ज्ञात हुआ था। अल्पकालिक शासक, वह भी मंत्रियों के कहे अनुसार, बनकर आज तक प्रायश्चित कर रहा हूं। अब अग्रज का अहित मिले राज्य को भोगता मैं प्रतिपल मरता ही रहूंगा, काम क्या और कैसे करूंगा?'

राम को सुग्रीव के अन्तर्मन का स्पष्ट भान था। पर, वे ऐसे शब्द ढूंढ़ रहे थे, जो महाराज को बता पाते कि शरीरों के व्यवहारों को पुण्य या पाप बनाने वाली एक कसौटी होती है—प्रभुपंथ अनुकूलता। कर्म उस कसौटी से नियत होते हैं, परिणाम सम्बद्ध देहों की नियति बन जाती है। देहों के मोह बीच में आते नहीं—वह तो मन का भ्रम होता है। 'अब, यह बात, महाराज सुग्रीव तक जाये

कैसे? —राम की समस्या थी।

'तो महाराज, आप, मंत्रिवर, अनुज, जो भी सुझा सकें, मार्ग सुझायें. मैं तो यही निवेदन कर सकता हूं।' —राम ने इतना कह कर थोड़ा समय प्राप्त कर लिया।

हनुमान समेत चारों मंत्रियों ने जो सम्मति दी, वह थी—'निर्विवाद तथ्य दुहरा लेने से निर्णय में स्पष्टता आयेगी। अतः पहले निर्विवाद तथ्य। केवल एक महाराज वालि के कारण, एकमात्र व्यक्तित्व के कारण, आज किष्किन्धा राज्य आर्यभूमि पर राक्षस शिविर जैसा आचरण कर रहा है। गुल्म के गुल्म राक्षस योद्धा हमारी दृष्टि से ओझल होकर उत्तर और पूर्व गये हैं। सहस्रों, दण्डकारण्य में ऐसे टिके कि दश वर्ष में प्रभु राम उन्हें मिटा पाये। राज्य भीतर आर्यजीवनचर्या रुद्ध तो नहीं है, परन्तु प्रोत्साहित या नियोजित भी नहीं है। यांत्रिकी और शस्त्र शोध, सैनिक उपयोगिता के आधार पर हो रहे हैं। स्थिति यह है कि शत्रु राज्य घोषित करना ही शेष है, आचरण में हम अयोध्या केन्द्र के मित्र नहीं हैं। यदि हमें महाराज वालि में सुधार की रंच संभावना दिखती, तो महाराज, स्वतः निर्वासन मांग, अपनी अन्तिम श्वास तक आपके साथ, ऋष्यमूक निवास करने हम न आते, वहीं उद्धार चेष्टायें करते। प्रभु राम जिन तीन कार्यव्रतों को लेकर आये हैं—महाराज वालि अपने जीवन में न होने देंगे, न किसी अन्य को अनुपालन अनुमति देंगे।'

प्राणहानि आशंका से भीत सी दृष्टि से महाराज ने लक्ष्मण की ओर निहारा। बड़े संयम से लक्ष्मण बोले-'महाराज, पहले मैं नकारात्मक तर्क दूंगा, फिर सकारात्मक! आप मेरे निष्कर्षों से न क्रुद्ध हों, न कृपया तिक्त! हम निर्णय लेने बैठे हैं, किसी उत्सव की आयोजना करने नहीं। आप आज्ञा दें, तो स्पष्टता से बोलूं।'

'लक्ष्मण, हम पांचों प्रभुपंथचर रहे हैं। हममें से हनुमान तो समस्त वेद वेदांग भी समझे हुये हैं। कृपया, न हमारे मन पर शंका करें, न साहस को कम आंकें। हम सब, इस पवित्रभूमि को प्रभुपंथचर देखना चाहते हैं, जो इस जगद्धात्री की नियति भी है। आप स्पष्टतम बोलिये, कृपया।' —महाराज ने ऐसे अनुमति दी।

'कल्पना कीजिए, आप सब भी महाराज वालि के सहयोगी समचिन्तक होते। मुझे भी अपने साथ जोड़ लीजिये! ऐसे समय, भैया अकेले आये होते अयोध्या केन्द्र में। तो क्या करते? तो क्या घटनायें घटतीं? —लक्ष्मण ने पूछा!

ध्यान करते महाराज दुहराने लगे—'अग्रज से भेंट! वार्ताभंग। युद्ध। भारी प्राणहानि.....।'

लक्ष्मण ने वहीं टोक दिया—'पर्याप्त है महाराज। अब सकारात्मक सुनिये। प्रभु का राज्याभिषेक घोषित हुआ था कि स्वतः प्रस्तावित यात्रा कार्यक्रम लेकर भैया ठीक अभिषेक मुहूर्त पर, वनवासी बने अयोध्या से निकल लिये। चक्रवर्ती पिताश्री को ज्ञात था कि भैया बिना वे कुछ दिन भी नहीं जियेंगे। पर, आज्ञा ली और दी गई। चित्रकूट प्रवास के समय बड़े दुःखों के समाचार लेकर प्रायः पूरा नगर ही चला आया कि भैया लौट लें। यहां पंचवटी में पूज्या वैदेही को प्रतिकूल परिस्थितियों में पराधीन होना पड़ा। **ग्रधकूट के महाराज, हमारे स्वर्गीय पिताश्री के मित्र, वीरगति प्राप्त जटायु के शब्दों से चलते, तो हमें इस समय तक रावण का संहार कर, पूज्या सीता को मुक्त करा लेना था।** परन्तु, तनिक विचार कर बताइये तो महाराज, हम समस्त अप्रिय घटनाओं, अरुचिकर परिणामों, आशंकाभरी और लांछनायें लादती परिस्थितियों मनःस्थितियों में भी अपनी समीक्षायात्रा अविचलित पूरी करने में किस लालसा से लगे हैं?' उससे अधिक लक्ष्मण नहीं बोले, कदाचित् उनके लिये अब कोमल शान्त स्थिर रह पाना सम्भव नहीं लग रहा था।

महाराजा सुग्रीव क्या नहीं जानते थे? **पर कर्त्तव्यमार्ग पर निर्भ्रम चलना, तपस्या और संस्कारों से सुगम होता** है, और उन्हीं की उपलब्धता सुनिश्चित करने तो यह समीक्षा यात्रा थी, स्वयं महाराज की व्रणपूर्ण देह थी, यह मंत्रणा थी। शान्त मौन प्रत्यत्नपूर्वक वह कठोर निर्णय तक जा पाने को उद्यत हुये। प्रभु राम की ओर करबद्ध वे मुड़े, बोले—'हनुमान के शब्दों में बोलूं, तो, प्रभु! प्रत्येक जीवन की एक नियति होती है जिसे परमप्रभु व्यक्ति के परिवेश में निहित रखते हैं। विवेकशील व्यक्ति सही राह ढूंढ़ लेते हैं। क्या मेरी नियति किष्किन्धा राज्य को प्रभुपंथ चलाने की है? मुझे निर्देशित कीजिये प्रभु!'

'महाराज, आपका दुखी होना मेरे लिये असहनीय है। मैं आपको प्रसन्न करने की चेष्टा करता रहूंगा।'—ऐसा कहकर राम ने हनुमान, की ओर देखा और प्रश्न किया—'आर्य अनुमान! क्या किष्किन्धा आश्रमों में किसी ऐसे अस्त्र का प्रचलन है जो शरीर के अवयवों को निश्चेष्ट कर सके, किन्तु मस्तिष्क और हृदय की शेष समस्त कार्यप्रणालियां सुचारु रहें?'

'रसायन का ज्ञान है, उसे युद्धक अस्त्रों में प्रयुक्त नहीं किया गया।' —हनुमान ने उत्तर दिया।

'महाराज, आप निश्चिन्त रहिये। मैं। अग्रज के प्राण नहीं लूंगा। अति सूक्ष्म तन्तु जैसे शल्य पर वह

रसायन लगा मैं अग्रज को निश्चेष्ट मात्र करूंगा। तब अयोध्या केन्द्र के प्रतिनिधि महाराज सुग्रीव का अपमान अथवा उपकार करने में उनका वलिष्ट तन असमर्थ हो जायेगा। पश्चात् अनन्तकाल तक उन्हें समझायें, वे सप्रणाम रहेंगे। औपधि-उपचार होने से वे पुनः सक्रिय भी हो सकेंगे। मुझे प्रभुनिर्दिष्ट कार्य कराने का कर्तव्य है, मेरी रुचि किसी को दुखी करने में नहीं। अब आप योजना बताइये।' —राम प्रतीक्षा करने लगे।

वानरराज ने विचार किया और बोले—'सभी कृपया सम्मति दें। मेरी योजना है कि मैं अग्रज के समीप कल प्रातः पुनः जाऊं। मेरे साथ आप सब भी चलें। नगर प्रवेश द्वार पर मैं अग्रज को बुलाऊं और प्रार्थना करूं कि प्रभु राम से वे वार्ता तो करें—आप सब उस समय दूरस्थ ही रहेंगे। यदि अग्रज मेरी घात करें, तो प्रभु संभालें। मैं इस शल्यचिकित्सा से सहमत हूं।'

सब ने भी सहमति प्रकट की।

प्रभु राम ने योजना आगे बढ़ाई—'महाराज, अब विकल्प सोचिये। शल्यघात जन्य अशक्ति उपरान्त समझाने से यदि अग्रज केन्द्र योजना पालन करें, तो किसी परिवर्तन की आवश्यकता होगी ही नहीं। यदि समझाने से भी नहीं माने महाराज वालि, तो कार्यवाहक शासक महाराज सुग्रीव आप रहें और लोकसंतोष हेतु तुरन्त घोषित करें कि राज्य अग्रज का ही रहेगा—राजमाता तारा होंगी और युवराज अंगद।'

सभी को, विशेषतः सुग्रीव को, यह व्यवस्था भाई।

प्रभु राम आगे बोले—**'पश्चात्काल, जब प्रजा समिति, धर्मसमिति और अनुपालन समिति स्थापित और सक्रिय हो जायेंगी, तब युवराज के पश्चात् समितियां अपना अध्यक्ष चयन करने का कर्तव्य प्रारम्भ कर देंगी और राजवंश जैसी संज्ञा अस्तित्वहीन बन जायेगी, राज्य वैयक्ति सम्पत्ति बने रहने से बच जायेंगे।'**

सभी ने सहमति प्रकट की। वार्तापूर्ण मानी गई। सभी प्रातः चलने के विचार से विलग हुये, अपने कार्यों में लगे।

सुग्रीव ने प्रभु से पूछा—'शल्यवेध का प्रभाव वाणी पर क्या होगा प्रभु?'

राम ने बताया—'कण्ठ के उच्चारण निकलेंगे, मूर्धा, तालु, दन्त, ओष्ठ से नहीं क्योंकि जिह्वा जड़ हो जायेगी।'

'हे प्रभु।' —सुग्रीव ने परमात्मा को पुकारा।

दूसरे दिन वे गये। यथानियोजित सुग्रीव ने अग्रज को संदेशा भेजा 'प्रभु राम भेंट करने आये हैं।' क्रोधभरे वालि निःशस्त्र आये और सुग्रीव पर मुष्टिप्रहार के लिये दौड़े। तभी, उठे हाथ पर जाने क्या आकर चुभा, वे न बढ़ पाये, न हट पाये, सर्पदंश पीड़ित से तत्क्षण वहीं फैल गये। पश्चात्वर्ती घटनायें विश्व जानता है।

जनगणमन विरुद्ध खलनायक, शाश्वत कलह-विधाता

—शरण

लंका मलय सुमात्रा जावा तिब्बत जैसे अंग,
विस्मृत अपनापन इन सबसे, किया वंग भी भंग।
पंजाब सिन्ध भी काटे,
सत्ता हित जनगण बाँटे,
लिखी विभाजन-गाथा।
मनुज-लहू से रंगे हाथ, तो भी सत्ता सुख चाटा।

० ० ०

किया उपेक्षित गांधी जी को, छोड़ा भारत संग,
जीवन शासन विधि विधान में लिया विदेशी रंग।
इण्डिया कहना भाया,
जनगण में भेद बसाया,
सब विधि समाज को बांटा।
भाषा पंथ जाति टुकड़ों में इस समाज को काटा।

० ० ०

वंशवाह्य सत्ता जाये ना, ऐसी टपकी लार,
चिन्तन चाल चरित्र विदेशी, किन्तु बनी सरकार।
दल तोड़ा, नया बनाया,
घर भरने न्यास बनाया,
मोदक कर-युगल उठाता।
पूर्ण विदेशी जीवन रचना का प्रारुप दिखाता।

० ० ०

छद्म समस्या, कलह बढ़ाते ऐक्य विरोधी बातें,
अपयश के आरोप विश्व में ये सयत्न छपवाते।
संसद का समय गँवाया,
मन में चुनाव है छाया,
यह देख रहा मदमाता।
नाच रही पश्चिमी पुतलियाँ, ज्यों विदेश नचवाता।

—एन. ६३, खण्ड-२५, नोएडा

पुस्तक समीक्षा

मिट्टी से जुड़ी भावनाओं का काव्य संग्रह

डॉ. हरीसिंह पाल

मनुष्य आदिकाल से अपनी मानसिक अनुभूति की अभिव्यक्ति के विविध साधन ढूंढ़ता रहा है। इसी खोज में काव्य चित्रकला, मूर्तिकला, संगीतकला और काव्य का विकास हो पाया है। इन कलाओं का मुख्य उद्देश्य मनुष्य के मानसिक सौंदर्य की अभिव्यक्ति करना है। इस सौंदर्यभावना के दो रुप होते हैं-भौतिक सौन्दर्य और मानसिक सौन्दर्य, मनुष्य अपनी कला के स्पर्श से जंगल की कुरुपता को सुन्दर बना देता है। भौतिक सौन्दर्य का सम्बन्ध हमारी आत्मा या हृदय से न होकर नेत्रों से होता है जिसे उपयोगी कहा जा सकता है जबकि मानसिक सौन्दर्य व्यक्ति की आत्मा या हृदय को अन्तरमन से तृप्त कर देता है। उससे ललित कला का उद्भव होता है। इसमें काव्यकला सभ्य समाज की उत्कृष्ट कला मानी गई है क्योंकि काव्य की साधना वास्तव में भाषा द्वारा भाव की साधना है। लोकोत्तर आनन्द तो प्रत्येक कला प्रदान कर सकती है। परन्तु जन मंगल की भावना जितने उदात्त और व्यापक रूप में काव्य में अभिव्यक्ति होती है उतनी अन्य किसी कला में नहीं। काव्यकला किसी वर्ण, धर्म, जाति, सम्प्रदाय, व्यवसाय, भाषा, प्रान्त और राष्ट्र की सीमाओं में कभी भी कैद नहीं रही है। किन्तु जब "सात समुन्दर पार से" हिन्दी में कविताएं उद्भूत हों तो निश्चिय ही सुखद आश्चर्य की अनुभूति होती है और इसी अनुभूति की सम्पादिका हैं विदुषी कवियत्री डॉ. अंजना संधीर।

विश्व हिन्दी समिति, न्यूयार्क द्वारा विदुषी कवियित्री डॉ. अंजना संधीर के सम्पादन में प्रकाशित गरिमामय काव्य संकलन **"सात समुन्दर पार से" में ४६ कवि-कवियत्रियों की १३६ कविताएं संकलित हैं, जिनमें २१ कवियत्रियां हैं, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति, शिक्षा, प्रबन्धन, आयुर्विज्ञान, जीव विज्ञान आदि की पृष्ठभूमि की। इस काव्य संग्रह में उन्हीं कवियों की रचनाओं को स्थान दिया गया है जो स्थायी रूप से अमेरिका में बस गए हैं।** एक कवि और एक कवियित्री को छोड़कर शेष सभी की तीन-तीन कविताएं प्रकाशित की गई हैं। अधिकांश कविताएं छंद मुक्त हैं और नई कविता की श्रेणी की हैं। तथापि गीत, गजल, नवगीत भी पर्याप्त हैं। खंड काव्य और महाकाव्य के भी अंश हैं। इन कविताओं में हास्य रस है तो करुण रस और वीर रस भी है; श्रृंगार रस और छायावाद की भी झलक है। विरह गीत हैं, प्रेम गीत हैं और सगुण भक्ति तथा निर्गुण भक्ति पक्ष भी हैं। हिन्दी काव्य की सभी विधाएं, शैलियां उपांग इस अकेले संकलन में ही देखने को मिली हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि अनेक अहिन्दी भाषी लोगों ने भी पूरे मन से हिन्दी में गंभीर कविता लिखी है। इनमें डॉ. देववाला, रामनाथन, आनन्द आहूजा, डॉ. कमलेश विश्व हिन्दी समिति के दिवंगत संस्थापक श्री रामेश्वर अशान्त की पत्नी श्रीमती वनिता अशान्त ने "दो शब्द" लिखे हैं, 'सौरभ' पत्रिका के मुख्य सम्पादक श्री वेदप्रकाश सिंह ने प्राक्कथन लिखा है। संकलन का सम्पादन विदुषी कवियत्री डॉ. अंजना संधीर ने किया है। "भारत से यहां बहुत कुछ आता है, कुछ यहां से भी भारत को जाना चाहिए।" इसी विचार से उन्होंने यह संकलन तैयार किया है। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह शशि ने इस काव्य संकलन की गरिमापूर्ण भूमिका लिखी है। विश्व हिन्दी समिति, न्यूयार्क के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. दाऊजी गुप्त और विश्व हिन्दी समिति, न्यूयार्क के वर्तमान अध्यक्ष डॉ. विजयकुमार मेहता की शुभकामनाएं फ्लैप पृष्ट में दी गई हैं। सौरभ पब्लिशिंग प्राइवट लिमिटेड, न्यू कृष्णापार्क, विकासपुरी, नई दिल्ली-१८ द्वारा प्रकाशित २६८ पृष्ठों के इस संकलन का मूल्य मात्र २०० रुपये है। संकलन के अन्त में प्रवासी भारतीय रचनाकारों के प्रकाशित काव्य-संग्रहों, कथा संग्रहों और साहित्य कृतियों की सूची भी प्रकाशित की गई जिससे पाठकों को यह अन्दाज हो सकता है कि प्रवासी भारतीय अपनी मातृभाषा से किस प्रकार जुड़े हुए हैं। समयाभाव तथा अमेरिका को प्रतियां प्रेषित करने की डेडलाइन होने के कारण कुछ प्रूफ त्रुटियां अवश्य रह गई हैं जिसके लिए संकलन प्रकाशन कार्य का संचालन करने वाले महामंत्री श्री वेदप्रकाश सिंह पाठकों से क्षमाकांक्षी हैं। दूसरे संस्करण में ये त्रुटियां नहीं रहेंगी, ऐसा उनका आश्वासन है।

इस कविता संकलन की कविताओं में विषय विविधता है। जहां महाशक्ति अमेरिका के जीवन की विसंगतियों का यथार्थ चित्रण है, वहीं विदेश में बैठ कर अपने गांव और अपने जन्मस्थान की यादों की सुखद अनुभूतियां भी हैं, इनमें मां की ममता याद है, अपनी प्रेयसी के प्रेमपत्र की मधुर स्मृति है। सुकूनदायक कल्पनाएं हैं (डॉ. इन्दुकान्त शुक्ल) अपने प्रेमी के सानिध्य की अभिलाषा (डॉ. कमल कोठारी); कमलाप्रसाद मिश्र की भारतीय नारी की वंदना; पुष्प मल्होत्रा द्वारा विश्व में अहिंसा की कामना है। पूर्णिमा देसाई ने स्वामी दयानन्द सरस्वती का पुण्य स्मरण किया है। तो सीमा अरोड़ा ने विश्व हिन्दी समिति के संस्थापक अध्यक्ष श्री रामेश्वर अशान्त को श्रद्धांजलि प्रस्तुत की है। ललित अहलूवालिया ने चना कुरमुरा से और डॉ. वेदप्रकाश वटुक ने कुर्सीशतक की महिमा से समाज की विसंगतियों पर करारा व्यंग्य किया है, राकेश खंडेलवाल अपनी भाषा हिन्दी

(शेष पृष्ठ ७५ पर)

स्वास्थ्य-चर्चा

गौमूत्र के चमत्कार

□ वैद्य हरिमोहन शर्मा (रा.प.)

वैदिक संस्कृति में गौ को मातृवत पूजनीय स्थान प्राप्त है। पौराणिक आख्यानों में तो आदर्श शासक के लिए गौ-ब्राह्मण प्रतिपालक होना एक अनिवार्य शर्त है। कृषि प्रधान भारतीय अर्थव्यवस्था की प्राण धमनी भी गौधन ही है। गौधन की महत्ता राष्ट्रजन के स्वास्थ्यवर्धन की दृष्टि से कम नहीं है। प्रस्तुत लेख में गौमूत्र से अनेक जटिल रोगों के अचूक उपचार की जानकारी प्रस्तुत है। —सं.

गौमूत्र में प्राप्त महत्वपूर्ण रसायन तथा खनिज नाइट्रोजन, अमोनिया, फास्फेट तांवा, चूना, मैग्नीशियम, लोहा, गंधक, पोटेशियत, यूरिया, यूरिक एसिड, कार्बोनिक एसिड, हिप्यूरिक एसिड, क्रिस्टानिक इन्जाम्स तथा विटामिन ए.बी.सी.डी. व ई प्रमुख हैं। इज्जतनगर स्थित भारतीय पशु अनुसंधान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. ए.के. गर्ग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय के रसायन शास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. एम. शुक्ल ने गौमूत्र में उपलब्ध तत्वों तथा उनकी मानव जीवन पर लाभप्रद होने की पुष्टि अपनी-अपनी परीक्षण रिपोर्टों में की है। अमरीकी कृषि विभाग ने (दि काउ इज वंडरफुल लेबोरेटरी) नामक पुस्तक प्रकाशित की है। जर्मन के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉक्टर जोसिस वेल्ट ने भी गाय की महत्ता प्रमाणित की है। विदेशों एवं देश के शीर्षस्थ उपरोक्त वैज्ञानिक विद्वानों के अनुसार गौमूत्र में विद्यमान तत्व मानव में रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाते हैं।

हृदयरोगी : अगर नियमित रूप से सहायक औषधि के रूप में २५ से ५० मि.ली. तक शुद्ध जाता गौमूत्र दोनों समय पिएं तो यह रक्त में वसा की मात्रा को नियंत्रित कर कोलेस्ट्रोल नहीं बढ़ने देगा। इससे हृदय धमनी तथा हृदय के वाल्वों में वसा एकत्र नहीं हो पाएगी तथा ब्लाकेज (अवरोध) का हृदयाघात से बचाव होगा। 'लेक्टोन' नामक तत्व जो गौमूत्र में रहता है, दूपित हृदय की मरम्मत का कार्य भी करता है। इससे गुर्दा 'फेल' होने का भय नहीं रहता। बदहजमी व कब्ज के रोगी आधा ग्राम छोटी हरण का चूर्ण ५० मि.ली. गोमूत्र के साथ पिएं, तो यह मल शुद्धि तथा उदर वायु का अनुलोमन कर जठराग्नि प्रदीप्त करेगा। इससे छोटी व बड़ी वांतें पुष्ट होकर अपना कार्य नियमित रूप से करने लगती हैं।

उदरकृमि : आधा चम्मच अजवायन का चूर्ण ५-६ चम्मच गौमूत्र के साथ सात से दस दिन सेवन करने से पेट के सूत्रकृमि, गोलकृमि मरकर मल के साथ विना जुलाव लिए निकल जाएंगे। बच्चों को मात्रा (कम) दी जानी चाहिए।

जलोदर : रोगी ५० मि.ली. गौमूत्र में २५० मि. ग्राम यवक्षार (जौरवार) मिलाकर दोनों समय सेवन करे तथा आहार में भी गौ दूध लें, तो इस असाध्य जटिल रोग (पेट में पानी भरना) से मुक्ति होती है।

पीलिया : ५० मि.ली. गौमूत्र में २०० मि. ली. पुनर्नवाष्टक क्वाथ का तरल मिलाकर दोनों समय सेवन करने से पीलिया रोग में शीघ्र बहुत अच्छा लाभ मिलता है।

जोड़ों का दर्द एवं सूजन : इस रोग से पीड़ित व्यक्ति महारास्नादि क्वाथ ५० मि.ली. में ५० मि.ली. गोमूत्र मिलाकर दोनों समय पिएं तो बहुत शीघ्र काफी फायदा होता है। विभिन्न चर्म रोगों में दोनों समय गौमूत्र पीने के साथ-साथ प्रभावित भाग को गौमूत्र से धोने तथा दाद, खुजली हो तो कई बार धोने से चर्म रोग नष्ट हो जाते हैं।

पुराना जुकाम : गौमूत्र पीने एवं नाक से नस्य लेने से पुराने हठी जुकाम में बहुत फायदा होता है। एलर्जी मिट जाती है।

मोटापा : गौमूत्र क्या गौमूत्र के अर्क का नियमित प्रयोग मोटापा कम करता है तथा कोलेस्ट्रोल का लेवल कम करता है। इस प्रकार गौमूत्र एक नितांत प्रभावशाली औषधि है। ०००

इस्लामी आतंकवाद का मूल कहां?

□ वी. पी. भाटिया

प्रस्तुत लेख विश्व के समक्ष उपस्थित एक ज्वलंत समस्या से संबंधित है। यह अंग्रेजी साप्ताहिक 'आर्गनाइजर' के आठ दिसम्बर के अंक में प्रकाशित 'गांधी जी एण्ड द स्वॉर्ड आफ इस्लाम' का भाषान्तरण है। भाषान्तरण न्यूयार्क में दयानन्द संस्थान के प्रतिनिधि श्री वेदप्रकाश सिंह ने किया है।

जब एक अलीगढ़ शोधकर्ता ने गांधी जी के यह कहने पर कि कुरान हिंसा का समर्थन नहीं करती, गांधी जी की आलोचना की तो गांधी जी ने उत्तर दिया था कि किसी भी धर्मग्रन्थ की अपने ढंग पर व्याख्या करने का उन्हें अधिकार है। अब, जब कि समस्त संसार यह स्वीकार कर रहा है कि इस्लामिक शक्तियां आतंकवाद की एक प्रमुख शक्ति-स्रोत हैं, तो धर्म निरपेक्षता का दम भरने वाला अंग्रेजी भक्त प्रबुद्धवर्ग, जिसमें मैकाले के चेले, मार्क्सवादी विचार धारा के अनुयायी और अफसरशाही वर्ग और राजनीतिक विवेक रहित पत्रकार वर्ग शामिल हैं—इतिहास के इस सत्य को स्वीकार करने से क्यों कतरा रहे हैं कि भारत आतंकवाद के जिस खतरे से जूझ रहा है उसका स्रोत 'इस्लामिक हिंसावाद दर्शन' ही है।

इस प्रकार की धारणा का मुख्य कारण यह है कि हिन्दू लोग उस अत्याचार, दमन, हिंसा और जुल्मों को अभी तक भूल नहीं पा रहे हैं जो चंगेजखां जैसे आक्रमणकारियों और हत्यारों ने सदियों तक भारत की जनता पर ढाए हैं। मुसलमान हमलावरों ने लाखों औरतों, बच्चों, जवानों और बूढ़ों को निस्संकोच मौत के घाट उतारा है और लाखों लोगों का बलात धर्म परिवर्तन किया है। उनके इस राक्षसी व्यवहार से भारत की आत्मा बुरी तरह जख्मी हो चुकी है। हम यह देख रहे हैं कि अनेक पत्रकार और समाचारपत्र विश्व हिन्दू परिषद और बजरंगदल जैसे हिन्दू संगठनों के खिलाफ आवाज बुलंद करने में जुटे हैं जो इस्लामिक हिंसा से अपनी रक्षा करने का प्रयास कर रहे हैं। उनका ध्यान इस तथ्य की ओर कतई नहीं है कि कट्टरवादी इस्लामिक हिंसा ने कितने जुल्म ढाए हैं। उन्होंने उन समाचारपत्रों और पत्रकारों को भी नहीं बख्शा है जिन्होंने कट्टरपंथी इस्लामिक आतंकवादियों की मामूली सी भी आलोचना करने की हिम्मत की है।

वास्तविकता तो यह है कि कट्टरवादी इस्लामिक हिंसा की तलवार आज भी भारत के मस्तक पर लटक रही है और धर्म निरपेक्षता का ढोंग करने वाले भारतीय लोग और संगठन यह राग अलाप रहे हैं कि इस्लाम तो एक शांतिप्रेमी धर्म है। यह भ्रामक प्रचार रफीक जकारिया, असगल अली जैसे इस्लामिक प्रचारक कर रहे हैं। वस्तुतः इस्लाम को एक शांतिप्रेमी धर्म सिद्ध करने का आन्दोलन महात्मा गांधी ने ही प्रारम्भ किया था। उन्होंने खिलाफत आन्दोलन के समय यह आवाज बुलन्द की थी कि कुरान हिंसा का समर्थन नहीं करती। उनके इस दावे का खंडन एक मुसलमान शोधकर्ता ने निम्न शब्दों में किया था।

"कुछ समय से आप अपने अहिंसात्मक आन्दोलन के पक्ष में दलील देते हुए पवित्र कुरान और कुरान की आयतों का हवाला देते रहे हैं। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि आप इस प्रकार की दलील केवल मुसलमानों का समर्थन प्राप्त करने के इरादे से देते रहे हैं। आप जिस सिद्धान्त या विचारधारा का प्रचार कर रहे हैं उसके औचित्य की मैं कोई आलोचना नहीं कर रहा हूं। मैं यह भी समझ रहा हूं कि आप खान अब्दुल गफ्फार और अबुल कलाम आजाद जैसे पंचमार्गी मुसलमानों की पीठ क्यों ठोंक रहे हैं। लेकिन कोई भी सच्चा मुसलमान यह सहन नहीं कर सकता कि एक गैर मुसलमान अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए कुरान की आयतों का उपयोग करे। यह अधिक उपयुक्त होगा कि इस बारे में आप कुरान की आयतों की स्वयं कोई व्याख्या करने के बजाय किसी ऐसे मुसलमानों के कथन का उपयोग करें जो पिछली अनेक शताब्दियों से कुरान का पारायण करते रहे हों, आपको मालूम होना चाहिए कि आप और आपके मुसलमान साथी मुसलमानों का विश्वास खो चुके हैं। कुरान की आयतों का हवाला देना सर्वथा अनुचित है क्योंकि आपके ऐसे कथनों से मुसलमानों की भावनाएं भड़क सकती हैं। अतएव अपने विचारों के प्रचार के लिए आप कुरान का उपयोग नहीं कर सकते। मुसलमान यह कभी सहन नहीं कर सकते कि एक गैर मुसलमान उनके पवित्र ग्रंथ का उपयोग अपना हित साधने के लिए करे। मैं आपको यह मित्रतापूर्ण परामर्श दे रहा हूं कि आगे से आप कुरान की आयतों का हवाला देना बन्द कर दें। मैं आपको यह राय दे रहा हूं कि मुस्लिम भारत के साथ गद्दारी करने से पहले अबुल कलाम आजाद ने क्या लिखा था।" "हरिजन, सितम्बर

२९, १९४७ के अंक से उद्धृत"

गांधी जी ने उक्त पत्र बहुत हिचक के साथ हरिजन में प्रकाशित किया था। उक्त पत्र यह सिद्ध करता है कि इस्लाम कभी शांतिप्रिय और अहिंसक धर्म नहीं था और गांधी जी ने अपनी राजनीतिक आवश्यकताओं के अनुरूप कुरान की व्याख्या कर ली थी। क्या इसका अर्थ यह नहीं है कि सलमान रशीदी अनवर शेख और जैरी फालवेल (अमेरिकन बैपटिस्ट) ने मुहम्मद को इस्लाम के पहले टेरोरिस्ट की संज्ञा दी है। जैसे आधुनिक व्याख्याकारों की व्याख्यायें सही नहीं हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती, अरुण शोरी और सीताराम गोयल की तो बात ही अलग है। इन व्याख्याओं को मद्दे नजर रखते हुए उन मुल्लाओं का कथन सर्वथा अर्थहीन है जो तोते की तरह यह रटते रहते हैं कि इस्लाम शांतिप्रिय धर्म है। मौलाना आजाद भी गांधी जी के आन्दोलन में शामिल होने से पहले तक 'जेहादे अकबर' के कट्टर समर्थक थे। उन्होंने कांग्रेस को एक गलत रास्ते पर डालने के कार्य में अहम् भूमिका का निर्वाह किया। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के आदर्श को भ्रष्ट करने और भारत को मुगलकालीन भारत में बदलने में कोई कोर कसर नहीं रखी।

आइए अब हम गांधीजी द्वारा इस्लाम को शांतिप्रिय धर्म घोषित करने और अलीगढ़ विश्वविद्यालय के स्नातक द्वारा गांधी जी पर कुरान की आयतों की गलत व्याख्या करने का आरोप लगाने की बात का उल्लेख करें। गांधीजी ने गीता की भी अपने ढंग पर बिल्कुल अलग व्याख्या की है। उन्होंने अन्याय के विरुद्ध शस्त्र उठाने का आह्वान करने के बजाय अहिंसात्मक विरोध करने की बात कही। उन्होंने कई बार यह स्वीकार भी किया कि वह ऐसी बात कह देते हैं जो हिन्दुओं और मुसलमानों के गले नहीं उतर पाती है।

महात्मा जी ने यह भी स्वीकार किया था कि मुसलमान बहुत ही कट्टर विचार के होते हैं और उनमें घृणा की भावना कूट-कूट कर भरी होती है। १९४४ में अमेरिकन लेखक लुई फिशर को दी गई एक भेंट में उन्होंने (यह भेंट जिन्ना से हुई दो सप्ताह की वार्ता के असफल होने के बाद दी गई थी।) कहा था कि मुसलमान धार्मिक उन्माद से ग्रस्त हैं। वह कहते हैं कि इस्लाम मनुष्य के भाई चारे का पक्षधर होने की बात करता है परन्तु तथ्य यह है कि वह केवल इस्लाम धर्म के अनुयाइयों के भाईचारे में विश्वास करता है। १९१८ में खिलाफत आन्दोलन के दिनों में गांधीजी ने अपने सचिव महादेव देसाई से कहा था कि मुसलमानों का सवाल उनके मन में कांटे की तरह चुभ रहा है और वह यह नहीं समझ पा रहे हैं कि अहिंसा और भाईचारे की भावना उनके मनों में कैसे जगाई जाय।

१९४४ में गांधीजी ने मुम्बई में जिन्ना से भेंट की थी और इस भेंट के पूर्व यह कहा था कि जिन्ना एक विवेकशील व्यक्ति हैं। जिन्ना की चापलूसी करने के लिए वह उन्हें कायदे आजम और भाई जिन्ना कहकर बुलाते थे। भेंट के असफल हो जाने के बाद लुई फिशर से हुई मुलाकात में गांधी जी ने कहा था कि उन्होंने यह अनुभव किया था कि जिन्ना एक पागल व्यक्ति है और उससे हुई बातों में कोई प्रगति नहीं हो सकी। इस वार्ता के असफल होने से जिन्ना की शोहरत में चार चाँद लग गए। हर संभव उपाय अपनाने के बावजूद गांधीजी अपने आन्दोलन के लिए मुसलमानों का समर्थन प्राप्त नहीं कर सके। यह बहुत ही विचित्र प्रतीत होता है कि जमाते इस्लामी और उससे सम्बद्ध मुसलमान संघटन किस प्रकार उदितराय जैसे कुछ दलित नेताओं को हिन्दू विरोधी भाषण देने के लिए उत्तेजित करते रहते हैं और यह प्रयास करते रहते हैं कि सभी दलित बौद्ध धर्म स्वीकार कर लें।

तथ्य यह है कि ऐसे बौद्धों ने हमेशा दलितों को हिन्दू समाज से अलग-थलग करने का प्रयास किया है। जैन टीवी ने तो उनको हर सप्ताह अपना कार्यक्रम प्रसारित करने की सुविधा प्रदान कर रखी है। लेकिन, वह इस तथ्य को भूल जाते हैं कि बौद्ध धर्म सदियों से हिन्दूधर्म की एक शाखा माना जाता रहा है और उसे हिन्दूधर्म ने आत्मसात कर लिया है। उन्हें डॉ. अम्बेडकर का वह कथन स्मरण करना चाहिए जिसमें उन्होंने इस्लाम धर्म की कटु आलोचना की थी, उन्हें यह याद होना चाहिए कि इस्लाम संस्कृति और बौद्ध संस्कृति परस्पर विरोधी हैं और उनमें कोई समानता नहीं। फिर भी उन्हें यह आशा है कि उदयराज जैसे मार्ग भ्रष्ट लोग बौद्ध धर्म के अनुयाइयों को इस्लाम और ईसाइयत के निकट लाने में सफल हो जाएंगे। इस कार्य को पूरा करने के लिए उन्हें काफी धन भी मिल रहा है। गुड़गावं के निकट जिन पांच दलित परिवारों को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया गया है उनमें से हर परिवार को एक प्लाट देने का लालच दिया गया था।

लेकिन जैसा कि वीर सावरकर ने अपने ग्रंथ "भारत का इतिहास" (छह स्वर्णिम अध्याय) में कहा है, बौद्ध धर्म का सामाजिक अवसान वस्तुतः मुसलमान आक्रमणकारियों के आक्रमणों और उनके द्वारा भारतीयों पर किए गए अत्याचारों की प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया थी। बौद्धों के अहिंसा के

(शेष पृष्ठ ५२ पर)

परिवार की आय बढ़ाइए

□ अशोक मूलवानी

आप घर बैठकर भी कई तरह के काम करके अर्थोपार्जन कर सकती हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इन कामों के लिए विशेष शिक्षा की भी आवश्यकता नहीं है। वर्तमान में महिला का कार्य क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। उसने घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर हर क्षेत्र में अपनी अद्‌भुत क्षमता और शक्ति का परिचय दिया है। इधर महिलायें पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के प्रयास में आत्मनिर्भरता के महत्त्व को भी पहचानने लगी हैं। वह पढ़-लिखकर अपने परिवार व समाज को आर्थिक सहयोग दे रही हैं। लेकिन आज भी हमारे समाज में बहुत-सी ऐसी महिलाएं हैं, जो अनपढ़ या कम पढ़ी-लिखी हैं। पर कुछ कामों के लिए विशेष शिक्षा की आवश्यकता नहीं है। आप थोड़े से पूंजी निवेश से मुनाफा कमाकर परिवार को आर्थिक सहयोग दे सकती हैं। आपके लिए यह काम उपयुक्त भी है और फायदेमंद भी।

बच्चों की देखभाल

आपको अपने आस-पास ही कई ऐसी कामकाजी महिलाएं मिल जाएंगी, जिन्हें अपने बच्चों की देखभाल के लिए क्रैच की जरूरत रहती है। आप चाहें तो अपने घर में ही क्रैच खोल सकती हैं। आजकल यह धंधा बहुत लाभकारी हो रहा है, लेकिन इस काम के लिए आपको पर्याप्त स्थान की जरूरत पड़ेगी, साथ ही इस काम में मातृत्व भावना और स्नेहपूर्ण व्यवहार का होना बहुत जरूरी है।

भोजन केन्द्र

यदि आप अच्छा भोजन व नाना प्रकार के व्यंजन बनाने में भी निपुण हैं तो आप अपने इस हुनर का व्यवसायीकरण करके टिफिन सेंटर खोल सकती हैं। आजकल महानगरों में हजारों छात्र या अविवाहित नौकरीपेशा युवक रह रहे हैं, जिन्हें फास्ट फूड' की बजाए घर के शुद्ध भोजन का शौक है। इसलिए घर जैसे शुद्ध भोजन की बढ़ती हुई मांग को देखते हुए आप उसे अपनी सुनिश्चित आय का जरिया भी बना सकती हैं।

एक कक्षा यह भी

आप अगर अच्छा व स्वादिष्ट भोजन बनाने के साथ-साथ तरह-तरह के अचार, मुरब्बे, चाट, जैम, शर्बत, जैली आदि बनाना जानती हैं तो आप घर में ही कुकरी क्लास शुरू करकेहर चीज के खर्च के हिसाब से फीस लेकर आय अर्जित कर सकती हैं।

सिलाई केन्द्र

सिलाई में महिलाओं की आरम्भ से ही रुचि रही है। यदि आपको सिलाई में निपुणता हासिल है तो आप घर में ही सिलाई केन्द्र खोलकर अच्छी आय प्राप्त कर सकती हैं। यदि काम आरम्भ करने के लिए आपके पास सिलाई की मशीनें ना हों और आपके पास पूंजी का अभाव हो तो इन्हें आसान किश्तों में खरीदा जा सकता है।

खिलौने भी

खिलौनों का शौक तो सभी बच्चों को होता है और बाजार में इनकी बहुत मांग भी है। अगर आप बच्चों के लिए खिलौने बनाने को ही रोजगार बना लें तो बाजार में इनकी सप्लाई से अच्छी आमदनी हो सकती है।

लेखन

अगर आप कहानियां, कविताएं, लेख आदि लिखती हैं तो उन्हें अखबार व मैगजीन में भेजकर धन अर्जित कर सकती हैं। आप चाहें तो उपन्यास भी लिख सकती हैं। वैसे —उपयोगी नुस्खों से लेकर समाज की समस्याओं तक लेखन का पर्याप्त स्कोप है, लेकिन इस बात का अवश्य ध्यान रहे कि आप अपने विषय से भटकें नहीं।

बुनाई-कढ़ाई

बुनाई-कढ़ाई को भी आप धनोपार्जन का माध्यम बना सकती हैं। आजकल कुर्तों, साड़ियों, रुमाल आदि पर कढ़ाई की काफी मांग है। आप घर बैठे, छोटे-बड़े नाप के स्वेटर भी बुन सकती हैं। आप चाहें तो क्रोशिए से निर्मित सजावटी वस्तुएं जैसे सोफा, टीवी, फ्रिज, टेबल कवर और वॉल हैंगिंग वगैरह बनाकर बाजार में इनकी सप्लाई कर सकती हैं। बुनाई-कढ़ाई मशीनों पर भी की जा सकती है, लेकिन इसके लिए अधिक पूंजी निवेश व कुशल संचालन की आवश्यकता होगी। यदि आप उपर्युक्त तथ्यों पर अमल करेंगी तो आप भी आर्थिक रुप से अपने परिवार को सहयोग दे पाएंगी और कम शिक्षा व अधिक उम्र भी आपकी सफलता के मार्ग में बाधक नहीं बन पाएंगे, लेकिन जरूरत है सिर्फ साहस, लगन व आत्मविश्वास की, फिर देखिए कैसे सफलता आपके कदम चूमेगी। ○○○

नया मेहमान

❑ अनिता होलानी

अपने शिशु के आगमन की सूचना भावी माता-पिता को ज्यादा प्रफुल्लित कर देती है। दुनिया जहान की खुशियां न्यौछावर करने को आतुर माता-पिता अपने लाडले के लिए हर तरह के खेल-खिलौने, कपड़े-लत्ते व अन्य सुविधाएं सहेज लेना चाहते हैं। बाजार में कई तरह की चीजें आकर्षित करती हैं। ऐसे में यह तय कर पाना मुश्किल हो जाता है कि क्या लें और कैसा लें। इस उलझन को सुलझाने के लिए ही कुछ सुझाव यहां प्रस्तुत हैं।

ध्यान रखें

नन्हें के सभी कपड़े मुलायम होने चाहिएं। सूती या हौजरी के वस्त्र इस लिहाज से उत्तम हो सकते हैं। किसी तरह की कलफ भी बच्चों के कपड़ों में नहीं दी जानी चाहिए।

नन्हें के वस्त्र आगे बटन पट्टी वाले होने चाहिए। नन्हा शिशु अपना शरीर नहीं संभाल सकता है। इसलिए सिर से पहनाने वाले वस्त्र सुविधाजनक नहीं रहते। सिर में से पहनाने वाले वस्त्रों के लिए नन्हें को पूरा उठाना-बिठाना पड़ता है, जबकि सामने से पूरे खुले झबले को शिशु को बिस्तर पर लिटाए-लिटाए ही पहनाया जा सकता है।

नन्हें के कपड़ों में इलास्टिक या खींच कर बांधने वाली डोरी नहीं लगानी चाहिए। इनका कसाव रक्त संचार प्रभावित करता है। बटन या वेलक्रो टेप पहली पसंद होनी चाहिए। फीते भी लगाए जा सकते हैं।

लेस या सजी ड्रेस सुंदर जरूर लगती है पर छोटे शिशु के लिए लेस या जालीदार डिजाइन का चुनाव देखकर करें। यदि नन्हें की छोटी-छोटी अंगुलियां इसमें फंसी तो वे चिड़चिड़ाएंगे। शिशु की त्वचा बड़ी कोमल होती है, इसलिए उनके वस्त्रों को ऐसे डिजाइन करें कि कम से कम सिलाई व बटन हों ताकि वे ज्यादा से ज्यादा स्वतन्त्र रहें।

जब बच्चे घुटने चलने लगें तो उन्हें घेरदार फ्रॉक या झबले न पहनाएं अन्यथा बार-बार पैर उसमें उलझेगा और वे चलने-खिसकने का मजा नहीं ले पाएंगे।

नवजात के लिए चाहिए कम से कम निम्न वस्तुएं

अठारह लंगोटी	चार बनियानें
छह झबले	दो शॉल
दो कार्डिगन	दो टोपी
दो जोड़ी मीटटन्स	दो जोड़ी मोजे या बूटी
दो बिब	दो मुलायम छोटी तौलिया या बड़ी रुमाल

सत्य-घटना

बैचलर गॉड नहीं- ब्रह्मचारी भगवान

जयपुर! 'क्वॉट बेचलर गॉड, वो क्या होता है, अरे बोलिए ब्रह्मचारी। हां बोलिए ब्रह्मचारी भगवान ऐसा ही बोलना चाहिए। बेचलर गॉड नहीं होता। मिसाइल मेन (भारत के राष्ट्रपति) डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के मुख से इन बातों को सुनकर उन्हें राजभवन (जयपुर) में पवनपुत्र हनुमान की मूर्ति भेंट करने आया कलाकार एकाएक निरुत्तर हो गया। इस कलाकार ने राष्ट्रपति डा. अब्दुल कलाम के समीप आने पर उन्हें अपने हाथ में पकड़ी हनुमान जी की मूर्ति का परिचय बेचलर गॉड के सम्बोधन से दिया था। लेकिन जब राष्ट्रपति महोदय ने इस सम्बोधन के लिए सबक सिखाया तो उसके बाद से कलाकार महोदय ब्रह्मचारी भगवान, ब्रह्मचारी भगवान ही रटते रहे।

आ गये फिर सर्दी के दिन

थर-थर लगे कांपने दांत, ठंडे शीतल हो रहे हैं हाथ
माता ओढ़ रजाई सोना, अपनी मां से बोली मोना
अम्मा सिगड़ी जरा जला दो, या कुछ कपड़ा और ओढ़ा दो
ऊनी कपड़े स्वेटर कम्बल, जो सर्दी में देते सम्बल
मां ने स्वेटर एक निकाला, बिटिया को अपनी दे बोली
पहनो मोना अब चुपचाप, भाग जाएगा जाड़ा आप
मत तुम देर करो अब पल छिन, आए फिर सर्दी के दिन

—प्राशु भार्गव, हरध्यान सिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली

पं इन्द्रसेन शर्मा का निधन

आर्य हिन्दू नेता पं. इन्द्रसेन शर्मा का ९० वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। उनका दाह संस्कार लोदी रोड स्थित दयानन्द श्मशान घाट पर किया गया। पंडित जी गत एक वर्ष से अस्वस्थ थे। पंडित जी अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष तथा दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष भी रहे। उन्होंने हिन्दू रक्षा दल बनाकर उसका भी लगभग २ दशक तक संचालन किया। आर्यसमाज के भी वे प्रमुख कार्यकर्ता थे। पं. इन्द्रसेन शर्मा का विशेष कार्यक्षेत्र शुद्धि कार्य था। इस विषय में वे स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपना आदर्श मानते थे। उन्होंने सैकड़ों ऐसे व्यक्तियों को मूल हिन्दू धर्म से जोड़ने में सफलता प्राप्त की थी जो कभी विधर्म के पथ पर चले गये थे। पंडित जी ने दिल्ली न्यायालय में कुरान की २४ ऐसी आयतों के विरुद्ध मुकदमा जीता जिनमें इस्लाम पर ईमान न लाने वालों के विरुद्ध कई प्रकार की टिप्पणी की गई है। दैवयोग है कि पंडित इन्द्रसेन शर्मा का स्वर्गारोहण स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस २३ दिसम्बर को हुआ।

बाल-जगत

मनचाहा उपहार

—दीपिका

सुशीला और सुनीता दोनों एक ही विद्यालय की छात्रा, आयु में दो वर्ष का अंतर है। एक दिन सुशीला बोली सुनीता जानती हो उपकार क्या होता है?

सुनीता ने कहा तुम्हीं बता दो दीदी। और बोली सुशीला वह चीज उपहार कहलाती है, जो किसी को जन्म दिन जैसे अवसर पर दी जाती है। कुछ दिन पहले जब तुम्हारी माता जी आयी थीं तो उन्होंने कहा था कि मंगलवार को तुम्हारा जन्मदिन है। मैंने इस अवसर पर तुम्हें जमदिन का उपहार देने का मन बनाया है। तुम मुझ से आयु में छोटी हो मैं तुम्हें तुम्हारे जन्म दिन पर अपने पिता जी से मंगा कर उपहार दूंगी।

सुनीता बोली दीदी क्या मुझे मेरा मन पसंद उपहार देंगी आप?

क्या है तुम्हारा मन पसंद उपहार?

एक अच्छा सा स्वेटर।

स्वेटर शब्द सुनते ही सुशीला के मुंह से निकला 'स्वेटर' और इसके आगे जब सुशीला के मुँह से कोई और शब्द नहीं निकला तो सुनीता चुपचाप पुनः फर्श साफ करने लगी।

अगले दिन सुशीला ने अपने पिता से कहा 'पिताजी कल सुनीता का जन्म दिन है।'

पिता बोले 'हां बोलो क्या तुम सुनीता को इस अवसर पर कोई उपहार देना चाहती हो।'

हां पिता जी आप उसकेलिए एक अच्छा सा स्वेटर ला दो-ठंड बढ़ती जा रही है। ऐसे अवसर पर यही उचित उपहार होगा। उसकेपिता ने कहा, 'अरे यह बहुत अच्छी बात सोची है तुमने मेरी बच्ची, आज शाम को मैं एक अच्छा सा स्वेटर ला दूंगा।'

अगले दिन था मंगलवार। सुनीता का जन्म दिन। वह उदास सी सुशीला केकमरे में आई और बोली 'दीदी आपने कहा था कि आप मुझे जन्मदिन पर उपहार देंगी। यह कहते-कहते सुनीता की आंखें भर आईं। तभी सुशीला एक बड़ा सा पैकेट अपनी आलमारी से निकाल कर लाई। उस पर लिखा था 'सुनीता को उपहार' पैकेट हाथों में थामते हुए सुनीता केनेत्रों में खुशी के आंसू छलक उठे, वह बोली—'कितनी अच्छी हो आप दीदी। आपने मेरे मन में काफी दिनों से बसी चाहत पूरी कर दी। ❐

(पृष्ठ ४९ का शेष)

उपदेश की मुसलमान आक्रमणकारियों ने अपनी निर्मम हिंसा द्वारा धज्जियां उड़ा दीं। अफगानिस्तान के लोगों ने बौद्धधर्म छोड़कर इस्लामधर्म कुबूल कर लिया क्योंकि उस क्षेत्र में रहने वालों को इस्लाम सामाजिक दृष्टि से अधिक मौजू प्रतीत हुआ। लेकिन भारत में बौद्धधर्म और भगवान बुद्ध का क्या हश्र हुआ? बौद्धधर्म, जिसका उदय वैदिकहिन्दू धर्म से हुआ था, पुनः हिन्दूधर्म द्वारा आत्मसात कर लिया गया और भगवान् बुद्ध को हिन्दूधर्म में १०वें अवतार के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया गया। लेकिन बौद्धों ने अहिंसा के सिद्धान्त से जुड़े रहकर दलितों की सामाजिक स्थिति को बहुत ठेस पहुंचाई है और उन्हें मृत पशुओं के चमड़े साफ कर अपनी जीविका कमाने के लिए मजबूर कर दिया।

बौद्धों द्वारा अहिंसा के प्रचार के लिए जिस प्रकार हिंसा का आश्रय लिया गया और पशुओं का शिकार करने, मछलियां पकड़ने वालों को मौत की सजा देने का प्रावधान किया गया उसका एक परिणाम यह हुआ कि अछूत प्रथा का अभिशाप समाप्त होने के बजाय और अधिक मजबूत हो गया। इसका सबसे ठोस प्रमाण वैदिक या तत्कालीन बौद्ध ग्रंथों में नहीं बल्कि उन चीनी यात्रियों के यात्रा विवरणों में मिलता है। जिन्होंने बौद्ध धर्म का प्रचार किया और जिन्होंने भारत के समस्त भागों का भ्रमण किया था। उन्होंने लिखा है कि जो समुदाय जैसे चण्डाल समुदाय, हिंसा का परित्याग नहीं करते थे और अहिंसा का पालन नहीं करते थे। उन्हें कोढ़ियों की तरह अछूत मानकर नगरों और ग्रामों से निकाल दिया जाता था। ऐसे लोग नगरों और कस्बों के बाहर अपनी अलग बस्तियां बसा लेते थे और एक लाठी लेकर सड़कों पर चलते थे जिसकी मूठ में एक छोटी सी घंटी बंधी रहती थी ताकि सड़कों पर चलते हुए लोग उनको स्पर्श करने से अपने को बचा सकें। इस तथ्य का उल्लेख डाक्टर डी. सी. मजूमदार लिखित "एडवांस्ड हिस्ट्री ऑफ इण्डिया' में किया गया है। एच. सी. राय चौधरी तथा काली कुमार दत्ता ने भी अपनी पुस्तकों में इस प्रथा का उल्लेख किया है। ०००

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय पर डाक टिकट जारी

स्वामी श्रद्धानन्द के ७६वें बलिदान दिवस एवं उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के १०० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल विहारी वाजपेयी ने एक भव्य डाक टिकट का लोकार्पण २४ दिसम्बर को प्रधानमन्त्री निवास पर आयोजित एक समारोह में किया। संचारमंत्री श्री प्रमोद महाजन ने इस अवसर पर टिकट के महत्व पर प्रकाश डाला।

समाचार—दर्शन

अजमेर में दयानंद ऋषि मेला सम्पन्न

अजमेर। आनासागर के सुरम्य एवं आकर्षक रमणीय तट पर स्थित ऋषि दयानन्द के पावन अवशेषों की पुण्यस्थली परोपकारिणी सभा के मुख्य कार्यस्थल ऋषि उद्यान अजमेर में ऋषि निर्वाण समारोह ६ नवम्बर की प्रातःकालीन वेला में 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' के साथ आरंभ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान डॉ. सत्यानंद जी वेदवागीश थे। उन्होंने अपनी विद्वतापूर्ण शैली में वेदमंत्रों की सरल व्याख्या से जनसमूह के मानस में एक गहरी छाप छोड़ी। ऋषि मेले का विधिवत शुभारंभ ८ नवम्बर को सभा के प्रधान श्री गजानंद आर्य द्वारा ध्वजारोहण से हुआ। श्री गजानंद को आर्यवीर दल के सैनिकों द्वारा गणवेश में शस्त्रों सहित पूर्ण सैनिक सम्मान के साथ ध्वजारोहण स्थल तक लाया गया। समारोह में अपने विद्वतापूर्ण उद्‌बोधन में श्री आर्य ने कहा कि ईश्वर के गुण वाचक नाम तो अनेक हैं परन्तु ओम ही ईश्वर का मुख्य एवं निज नाम है एवं हम सब उसके ध्वज हैं। हम सब मिलकर रहें आपस में प्रेम बांट द्वेष एवं घृणा को दूर करें यही हमारे जीवन का उद्देश्य है। ईश्वर एवं वेद की यही आज्ञा है।

बंबई से पधारे डॉ. सोमदेव शास्त्री ने वेदमंत्रों की व्याख्या करते हुए बताया--आज देश की एकता अखंडता तभी संभव है जब हम अपना जीवन वैदिकमार्ग के अनुरुप बनाएं, जब हमारे जीवन में यम नियमों का पालन हो, एक दूसरे के प्रति सद्‌भाव हो, प्रेम हो। दिल्ली से पधारे वरिष्ठ पत्रकार श्री बनारसीसिंह ने सिंह गर्जना करते हुए कहा कि आर्यसमाजी अपने-आपको कभी अकेला नहीं समझता। कहा जाता है कि अकेला चना क्या भाड़ फोड़ेगा? अकेला चना अगर भाड़ नहीं फोड़ सकता तो कम से कम भड़भूजे की आंख तो फोड़ सकता है। एक अकेला आर्यसमाजी हजारों पर भारी पड़ सकता है। महर्षि दयानंद अकेले ही चले थे और उन्होंने देश में प्रथम बार क्रांति का उद्‌घोष कर राष्ट्र में व्याप्त पाखंड और अंधविश्वास की जड़ें हिला दीं।

डॉ. महावीर मीमांसक ने अपनी विशिष्ट शैली में बताया कि आज पाश्चात्य संस्कृति के पोषक कम्युनिस्ट लोग जन सामान्य को भ्रमित कर रहे हैं, हमारे देश की संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं, प्रो. डी. एन. झा द्वारा 'द हिन्दू' में लिखे गए लेख गोमांस भक्षण पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए एवं वेदमंत्रों का प्रमाण देते हुए उन्होंने बताया कि वेदों में कहीं भी गौमांस भक्षण का उल्लेख नहीं है। सांसद रासासिंह रावत, अजमेर ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि वे जो भी हैं आज आर्यसमाज के कारण हैं यदि वे आर्यसमाज से नहीं जुड़ते तो उनमें न तो ईश्वर भक्ति होती, और न जन सेवा की भावना होती।

दिल्ली से पधारी राष्ट्रीय पत्रिका 'जनज्ञान' की संपादक एवं दयानंद संस्थान की अध्यक्षा मान्या राकेश रानी ने देश की शैक्षणिक संस्थाओं पर टिप्पणी करते हुए कहा कि आज के शैक्षणिक संस्थान एक व्यवसायिक उद्योग बनकर रह गए हैं। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने कहा कि देश आज अराजक तत्वों के हाथ का खिलौना बना हुआ है, देश में सर्वत्र भ्रष्टाचार, हिंसा का तांडव हो रहा है इसका मुख्य कारण है कि लोग वैदिक संस्कृति एवं वेदों के मार्ग से दूर हो गए हैं अतः लोगों को वेदों से जुड़ना होगा एवं स्वामी दयानंद द्वारा दिए गए दिशा निर्देश पर चलकर ही देश की उन्नति संभव है। संन्यासी स्वामी ओमानंद सरस्वती ने कहा देश में महिलाओं को शिक्षित होना आवश्यक है एवं समाज में स्त्री-पुरुषों को समान अधिकार प्राप्त हों। आर्यसमाज में चल रही प्रचार प्रक्रिया में तेजी लाने की युवकों से अपील की। प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर ने आर्यसमाज में अच्छे लोगों की होती बेकद्री पर चिंता प्रकट करते हुए कहा कि आर्यसमाज संगठन जिनके हाथों में है वे ही निष्क्रिय हो गए हैं। ऋषि मेले का विशेष आकर्षण आर्यवीर दल द्वारा प्रदर्शित आसन एवं व्यायाम प्रदर्शन रहा। अजमेर की शैक्षणिक संस्थानों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं ने "वाद-विवाद प्रतियोगिता" में भाग लिया। इस प्रतियोगिता का संचालन मान्या सरला शारदा द्वारा किया गया।

श्री सत्यपाल पथिक श्री भूपेन्द्रसिंह श्री अमरसिंह ने अपने मधुर भजनोपदेशों से जनता को मुग्ध कर दिया। वेद गोष्ठी में इस वर्ष का विषय 'वेदों में इतिहास' रहा। इस गोष्ठी में देश के वैदिक विद्वानों ने उत्कृष्ट लेख पढ़े। वेद गोष्ठी में आमंत्रित विद्वानों के विचार सुनने हेतु सुधि पाठकों ने बड़ी संख्या में उपस्थिति दी एवं गोष्ठी की अध्यक्षता दयानंद संस्थान दिल्ली के आचार्य स्वामी जगदीश्वरानंद ने की।

मेले के समापन दिवस पर सभा के मंत्री श्री ओमप्रकाश अंवर द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया। ऋषि मेले में गुजरात, आंध्र, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, बिहार, कर्नाटक, चेन्नई, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हिमाचल आदि के ऋषि भक्तों की भारी भीड़ देखी गई।

पुणे में राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन
वेदों की रक्षा के लिए सन्नद्ध होना होगा

गत १० से १२ नवम्बर तक पुणे में एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन की स्वागत समिति की अध्यक्षता भारत कोकिला एवं भारतरत्न सुश्री लता मंगेशकर ने की। गत ९ नवम्बर

को लता मंगेशकर एवं लोकसभा अध्यक्ष श्री मनोहर जोशी ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। चित्रापुर के मठाधिपति पूज्य सद्योजात शंकराश्रम स्वामी महाराज ने अध्यक्षता की। इसी कार्यक्रम में गत १३२ वर्षों से वेदाध्ययन एवं अध्यापन क्षेत्र में सक्रिय रत्नागिरी वेदपाठशाला को कै. विनायक भट्ट घैसासगुरुजी सरस्वती उपासना पुरस्कार भी प्रदान किया गया। इस पुरस्कार में २५ हजार रुपए नकद, मानपत्र, श्रीफल तथा अंग वस्त्र प्रदान किया जाता है। सम्मेलन का प्रस्ताविक भाषण देते हुए वेदमूर्ति मोरेश्वर घैसासगुरुजी ने कहा, मेरे पिताजी ने आजन्म वेदप्रचार का कार्य किया। अब ऐसा लगने लगा है कि लोगों के मन में वेदविद्या के प्रति आदर निर्माण हो रहा है। फिर भी खेद है कि विद्या को राजमान्यता नहीं है। राजमान्यता की चिंता न करते हुए हमारे वैदिक विद्वानों ने खून-पसीना एक कर अब तक इस विद्या का संरक्षण किया है। फिर भी इसके लिए प्रोत्साहन की आवश्यता है। मराठी केसुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. राम शेवालकर ने कहा, 'शब्दों के उच्चारण की बुद्धि मानव को वेदों के रुप में ही मिली है। वैदिकों की कम होती हुई संख्या चिंता का विषय है।' लोकसभा अध्यक्ष श्री मनोहर जोशी ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि वेद और विज्ञान एक-दूसरे के पूरक हैं। विज्ञान भौतिक सुख देता है, तो वेद मानसिक आध्यात्मिक सुख देते हैं। विज्ञान को अध्यात्म की नींव पर खड़ा होना चाहिए।' राष्ट्रीय सम्मेलन का एक वैशिष्ट्य था शब्दों और सुरों का अद्भुत संगम। इस सम्मेलन में भारतरत्न लता मंगेशकर ने अपने भाषण में कहा कि 'शब्द रचना की पूर्वावस्था स्वर हैं। साहित्य और संगीत का उद्गम वेदों से हुआ है। वेदों के पठन पाठन को हमें प्रोत्साहन देना चाहिए। चित्रापुर मठ के पूज्य सद्योजात शंकराश्रम स्वामी महाराज ने आशीर्वाद स्वरूप भाषण किया।

दूसरे दिन १० नवम्बर से मुख्य सम्मेलन की शुरुआत हुई। सम्मेलन के तीन दिनों में चतुर्वेद मंत्रपठन के साथ-साथ छह विषयों पर चर्चासत्रों का भी आयोजन किया गया था। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए पूरे भारत से लगभग १५० वैदिकों का आगमन हुआ था। गुजरात और महाराष्ट्र प्रांत से १२५ विद्यार्थी परीक्षा के लिए भी आए थे। सम्मेलन में आयोजित चर्चासत्रों में प. मु. ग. शेवडे, डॉ. ग. उ. थिटे, आचार्य निरंजन घाटे, पं. लालचन्द्र मुलेशास्त्री, डॉ. वीणा सानपुते, प्रा. अजित कुलकर्णी, श्री मोरेश्वर जोशी, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय केडॉ. हरिराम मिश्र, वेदमूर्ति दिनकर फड़के आदि विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए।

सम्मेलन के प्रथम दिन का श्रीगणेश चारों वेदों के मंत्रपठन से हुआ। इसमें ऋग्वेद, और यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद के वैदिकों ने मंत्रपठन किया। इसके उपरान्त पं. मु. ग. शेवडे, श्री मुकंदराव चितले और वेदमूर्ति घैसासगुरुजी के हाथों वैदिकों का सम्मान सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के प्रथम सत्र में संगोष्ठी का विषय था वेदों की उत्पत्ति। सारे वक्ता इस बात पर सहमत थे कि वेदों की और विश्व की उत्पत्ति एक साथ हुई थी। वेद संसार के निश्वास हैं।

दूसरे सत्र का आरम्भ मंत्रपठन से हुआ। वेदों के मंत्रपठन के साथ-साथ आंध्रप्रदेश पद्धति से शुक्ल यजुर्वेद का पठन किया गया। उसी प्रकार सामवेद का गुर्जर उत्कल पद्धति से गायन किया गया। अथर्ववेद की लोप होती जा रही पिप्पलाद शाखा के मंत्रों का भी इस अवसर पर पठन किया गया। दूसरे सत्र की संगोष्ठी का विषय था—वेदों में राष्ट्रदर्शन। महर्षि संदीपनी राष्ट्रीय वेद-विद्या प्रतिष्ठान के सचिव डॉ. ओमप्रकाश पांडे, वेदमूर्ति दिनकर भट्ट आदि विद्वानों ने इस विषय पर विचार मंथन किया। डॉ. ओमप्रकाश पांडे ने कहा कि पाश्चात्यों ने जान-बूझकर हमें ऐसे सूक्तों से वंचित रखा जो हमारे राष्ट्र का कायाकल्प कर सकते हैं, अक्षरसूक्त वेदों में कहा गया है कि जैसे दांत अन्न को चबा-चबा कर महीन करते हैं उसी तरह हमें द्वेष करने वाले शत्रु का नाश करना चाहिए।

इस विषय पर श्री मुलेशास्त्री ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि राष्ट्र निर्माण के लिए सब लोगों को ईमानदारी और आदर्श पद्धति से अपना काम करना चाहिए। राज्य और राष्ट्र में अंतर बताते हुए श्री ग. उ. थिटे ने कहा कि राष्ट्र एक भावना है। हम सबको एकता के सूत्र में बांध रखती है। वेदों में यह भावना विकसित और प्राथमिक स्वरूप में हमारे सामने आती है। वेदों में प्रतिपादित पराक्रमनिष्ठा, एकत्वनिष्ठा और आक्रमकता की आज भारत को जरूरत है। सत्य का पालन, क्षात्रतेज व सजगता के गुण मातृभूमि के रक्षणार्थ जरूरी हैं। प्रा. अजित कुलकर्णी ने सुधर्मा सभा का उदाहरण देते हुए बताया कि राजकर्ता यहां जनहित में इतने लीन होते थे कि भूख-प्यास भूल जाते थे। शाम को हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम में श्रीमती उषा मंगेशकर के गीतों का गायन हुआ।

दूसरे दिन का श्रीगणेश चतुर्वेद मंत्रपठन से हुआ। प्रथम सत्र में संगोष्ठी का विषय था वैदिक काल गणना

अन्य राज्यों से आए विद्वतजनों ने वेदों से संबंधित विविध विषयों पर अपने विचार प्रकट किए, जिसमें गुजरात के डॉ. भालचन्द्र नागर, जम्मू के विद्वान श्री गंगाधर शास्त्री और उड़ीसा के डॉ. दिवाकर महापात्र भी थे।

दूसरे सत्र की संगोष्ठी का विषय था संतों की वेदनिष्ठा। इस विषय का विवेचन प्रारम्भ करते हुए प्रा. अजित कुलकर्णी ने कहा कि जिसने सत्य जाना है वह संत है। ज्ञानेश्वरजी ने वेदों के आधार पर अपने विचार प्रकट किए। वेदमूर्ति दिनकर भट्ट ने कहा कि अगर आचार शुद्ध हो तो ही वेदों के अध्ययन से लाभ मिल सकता है। संतों ने अपना आचरण वेदों के अनुसार शुद्ध रखा इसलिए उनके दर्शन को वैदिक दर्शन का आधार मिल सका। आचार्य घाटे ने कहा कि संत का हृदय बड़ा होता है। ज्ञानेश्वर जी के हर विचार में हमें वेदों का अंश साफ दिखाई देता है। इस संगोष्ठी का समापन करते हुए पं. सु. ग. शेवड़े ने कहा कि वेद अप्रामाण्य संत मिलना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन भी है। शाम को श्री अरुण दाते के गायन का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

१२ नवम्बर को सम्मेलन के अंतिम दिन सांदिपनी राष्ट्रीय वेद-विद्या प्रतिष्ठान के सचिव श्री ओमप्रकाश पांडे ने कहा कि वेदों के रक्षणार्थ हमें अब लड़ना होगा। शायद आने वाले दिनों में ऐसी स्थिति निर्माण हो कि वेद अध्ययन करने वाला ही कोई न रहे। क्योंकि सरकार द्वारा गठित एकउच्च आयोग ने वेद शिक्षण के लिए दिए जाने वाले अनुदान को बंद करने की मांग की है। ज्यादा से ज्यादा लोग इस विद्या की ओर आकृष्ट हों, इसलिए प्रतिष्ठान एक विशिष्ट पाठ्यक्रम बनाने की सोच रहा है। इसमें वेद अध्ययन करने वालों को उपाधियां दी जाएंगी जैसे वेदरत्न, वेदविद्याशिरोमणि आदि जो बी. ए. और एम. ए. के समकक्ष होंगी। उन्होंने कहा कि पुणे स्थित इस वेदपाठशाला का विश्वविद्यालय में रुपान्तरण होना चाहिए।

अंतिम दिवस के प्रथम सत्र में आयोजित संगोष्ठी का विषय था 'क्या वेदमंत्रों में सामर्थ्य है?' इस विषय पर प्रा. अजित कुलकर्णी ने कहा कि वेदों में सामर्थ्य की अनुभूति होती है। हेतुशुद्धि, धनशुद्धि और क्रियाशुद्धि मंत्र के निहित सामर्थ्य को बढ़ा देता है। अंतिम सत्र की संगोष्ठी का विषय था वेदोऽखिलोधर्ममूलम्। जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के डॉ. हरिराम मिश्र ने कहा कि वेद सिर्फ धर्म का ही उद्‌गम नहीं अपितु सारी ही विद्या का उद्‌गम स्थान है। ०००

औषधालय संचालन में सहयोग करें

दयानन्द संस्थान वेदमंदिर, इब्राहीमपुर में जून २००२ से विधिवत् महात्मा वेदभिक्षु: धर्मार्थ औषधालय चल रहा है, जिसमें दूर-दूर से रोगी आकर नीरोग होकर जाते हैं। औषधियाँ वितरित करने हेतु आपका सहयोग चाहिये। औषधालय के लिए दो दुकानों की तुरन्त आवश्यकता है। इनके निर्माण पर लगभग २००,०००/- (दो लाख) खर्च आएगा। दानी महानुभाव कमरों का निर्माण कराकर पुण्य के भागी बनें। आपके सहयोग से हज़ारों रोगियों का कल्याण होगा।

जगदीश्वरानन्द, आचार्य, दयानन्द संस्थान
महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम वेदमन्दिर, दिल्ली-३६

(पृष्ठ ४६ का शेष)

का गुणगान अमेरिका में कर रहे हैं तो श्री गुलाब खंडेलवाल "जागो भारतवासी" कविता के माध्यम से हमें सचेत करते दिखाई पड़ते हैं, डॉ. अंजना संधीर 'हड्डियों में बस जाता है अमेरिका" से अमेरिका में रहने वाले भारतीयों को अपनी संस्कृति की रक्षा करने की चेतावनी देती हैं; सुषमा मल्होत्रा "मेरी पहचान मेरा देश" कविता के माध्यम से अमेरिका में भारतवंशियों की भाषाई प्रश्नावली से जूझती हैं, डॉ. सुदर्शन प्रियदर्शनी "पुत्र के नाम पत्र" में अपनी ममता प्रकट करती हैं तो डॉ. विजयकुमार मेहता "डाक्टर कवि" कविता को रुपायित करते हैं रेणु राजवंशी गुप्त "आज का हिन्दू" कविता में कहती हैं "पूजा के थाल का रूप बदला" सरोज बाला तिवारी पूर्ण विश्वास के साथ कहती हैं कि "मैं तुम पर मिटी हूं सदियों से पर जीवन का एहसास भी है"। डॉ. विन्देश्वरी अग्रवाल "यह कैसा अमरीका है" कविता में कहती हैं "सब कुछ है विपरीत यहां न संस्कृति है न गीता है; हृदय में कितना सूनापन है यह कैसा अमरीका है?" डॉ. फणिभूषण दास "मैं हूं साधारण हिन्दुस्तानी" कविता में कहते हैं "मैं साधारण हूं, सब सुखी रहें, भयमुक्त रहें; जन-जन अभाव से मुक्त रहें"। संक्षेप में प्रवासी भारतीय हिन्दी कवियों की रचनाओं का कवर बहुत आकर्षक है और यह संग्रह निश्चय ही सराहनीय और पठनीय है।

—आकाशवाणी भवन, संसदमार्ग, नई दिल्ली

जनज्ञान के सहयोगी पाठकों से आह्वान!

कम से कम एक और परिवार में पहुँचाएं जनज्ञान

'जनज्ञान' वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद तथा सबल समर्थ राष्ट्र के सृजन का प्रेरक माध्यम है। पत्रिकाएं तो सैकड़ों हैं। उनमें से अधिसंख्य विशुद्ध व्यावसायिक हैं, जबकि जनज्ञान एक 'अभियान' का सशक्त स्वर है। विद्यमान सामाजिक, राजनीतिक तथा राष्ट्र से संबद्ध विषयों पर निर्भीक टिप्पणियां जनज्ञान की विशेषता है।

- यह अभियान है आर्य मर्यादा के प्रति जागरण का।
- यह अभियान है हिन्दुत्व के तर्कसंगत पृष्ठपोषण का।
- यह अभियान है सामाजिक समता भाव के स्फुरण का।
- यह अभियान है देशद्रोही तत्वों से समाज को बचाने का।
- यह अभियान है अपने बिछुड़े बंधुओं को पुनः साथ लाने का।
- यह अभियान है तुष्टीकरण के चक्रव्यूह से राजनीति को छुड़ाने का।
- यह अभियान है कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के उद्घोष को गुंजाने का।
- यह अभियान है हिन्दुत्व के विश्ववंधुत्वमय स्वरूप को दर्शाने का।
- यदि यह अभियान आपको प्रिय है तो सहयोग का हाथ बढ़ाइये।
- अपने मित्रों, परिजनों में कम से कम एक और जनज्ञान का सदस्य बनाइए।
- यही है परिस्थिति का आह्वान्। घर-घर पहुंचे जनज्ञान।
- सामग्री प्रकाशन में आपके सुझाव का होगा स्वागत।
- क्योंकि आप हमारे परिजन हैं, नहीं हैं अभ्यागत।

वार्षिक शुल्क १०० रु. और आजीवन शुल्क ८०१रुपये है। अभी आजीवन सदस्य बनने पर ३०० रु का साहित्य उपहार दिया जा रहा है।

—सम्पादक

जनज्ञान मासिक मंगाने के नियम

१. जनज्ञान के पाठक पत्र व्यवहार करते समय अपनी सदस्य संख्या अवश्य लिखें (सदस्य संख्या : जनज्ञान के रैपर पर लिखे पते के साथ अंकित रहती है।)
२. 'जनज्ञान' प्रतिमाह पांच और छः तारीख को पाठकों को भेज दिया जाता है।
३. मास के अन्त तक 'जनज्ञान' न मिले तो शिकायत आने पर दोबारा भी भेज दिया जाता है।
४. 'जनज्ञान' की एक प्रति का मूल्य दस रुपये है। वार्षिक शुल्क १०० रुपये, आजीवन शुल्क ८०१ रुपये है।
५. शुल्क समाप्ति की सूचना प्रत्येक सदस्य को एक मास पहले भेज दी जाती है। पत्र के साथ मनीआर्डर फार्म और पोस्टकार्ड संलग्न होता है। कृपया पोस्टकार्ड पर उत्तर अवश्य दें।
६. आगामी वर्ष के लिए शुल्क मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अथवा दिल्ली के किसी भी बैंक के चैक द्वारा भेज सकते हैं। शुल्क प्राप्त न होने पर अगला अंक वार्षिक शुल्क के साथ वी. पी. द्वारा भेजा जाता है।
७. वी. पी. में पैंतीस रुपये डाकव्यय अतिरिक्त लगता है जिसका लाभ न तो सदस्यों को और न ही संस्था को होता है। अतः कृपया सूचना मिलते ही धन तुरन्त मनीआर्डर द्वारा भेज देवें अथवा संलग्न कार्ड पर उत्तर अवश्य दें।

-सम्पादक

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य 1800 रु.
2. सामदेव : आध्यात्मिक भाष्य 201 रु.
3. वेद ज्योति चारों वेदों के चुने गये (100-100 मन्त्रों की व्याख्या) 50 रु.
4. वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या) 80 रु.
5. सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या) 60 रु.
6. भारत के वीर बच्चों की कहानियां 10 रु.
7. धरती का स्वर्ग 10 रु.
8. सरस्वतीन्द्र जीवन (दयानन्द का जीवन चरित्र) 50 रु.
9. महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय) 15 रु.
10. धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं) 10 रु.
11. स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय) 5 रु.
12. वैदिक सम्पत्ति 151 रु.
13. धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या) 10 रु.
14. योग और ब्रह्मचर्य 10 रु.
15. Inside the Congress 60 रु.
16. Life and Teachings of Swami Dayanand 200 रु.
17. History of the assassins 60 रु.
18. Concept of God 60 रु.
19. श्रीमद्दयानन्द प्रकाश 60 रु.
20. Light of Truth 150 रु.
21. प्रकृति और मर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री) 15 रु.
22. वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य 60 रु.
23. संक्षिप्त महाभारत 60 रु.
24. संक्षिप्त रामायण 15 रु.
25. ऋग्वेद शतकम 10 रु.
26. चतुर्मास की चार पूर्णिमाएं 25 रु.
27. सत्संग पद्धति 5 रु.
28. वैदिक सान्ध्य गीत 10 रु.
29. A Short Life Story of Swami Dayanand 30 रु.
30. गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्ती लगा, कम से कम दस प्रतिं मंगायें 4 रु.

100 रु. से अधिक साहित्य पर 15 प्रतिशत 300 रु. से अधिक लेने पर 20 प्रतिशत तथा 500 रु. से अधिक लेने पर 25 प्रतिशत होगा। आदेश के साथ चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य बांटिये

1. क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे? 1.00 रु.
2. हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु 1.00 रु.
3. भारत के मुसलमानों का क्या करें? — वेदभिक्षु 1.00 रु.
4. हम सब हिन्दू हैं—सावरकर 2.00 रु.
5. इस्लाम में क्या है? —राकेश रानी 1.00 रु.
6. इस्लामिस्तान बनाने की तय्यारियाँ — जहीर नियाजी 1.00 रु.
7. हिन्दू जागो ! देश बचाओ 1.00 रु.
8. इस्लाम—एक परिचय 1.00 रु.
9. पोप की सेना का भारत पर हमला — वेदभिक्षु 1.00 रु.
10. पादरियों को चुनौती 2.00 रु.
11. बाईबिल को चुनौती 2.00 रु.
12. क्या ईसा खुदा का बेटा था? 1.00 रु.
13. और पादरी भाग गया 1.00 रु.
14. हमने इस्लाम क्यों छोड़ा? 1.00 रु.
15. क्या भारत का एक और विभाजन होगा? 1.00 रु.
16. हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश 1.00 रु.
17. हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा 1.00 रु.
18. A challange to the Christian Faith 50 पैसे
19. वीर सावरकर—संक्षिप्त जीवन परिचय 5.00 रु.
20. मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर 10.00 रु.
21. भाई परमानन्द (जीवन परिचय) 30.00 रु.
22. बाल सत्यार्थ प्रकाश 60.00 रु.
23. मां गायत्री 2.00 रु.
24. स्वास्थ्य का महान शत्रु अंडा 2.00 रु.
25. विश्व को वेद का संदेश 2.00 रु.
26. विश्व को आर्यसमाज का संदेश 2.00 रु.
27. Great Gayatri 2.00 रु.

एक रुपये वाली "हिन्दू धर्म रक्षक" साहित्य की 1000 पुस्तकें मंगाने पर 50 प्रतिशत और 500 पुस्तकें मंगाने पर 25 प्रतिशत कमीशन है। प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

व्यवस्थापक—दयानन्द संस्थान
2286-आर्यसमाज मार्ग, नई दिल्ली-5

जन-ज्ञान (मासिक) वेद मन्दिर--
महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम लेखराम नगर--
(इब्राहीमपुर) पो. आ. मुखमेलपुर-दिल्ली-36

पौष संवत्-२०५९
जनवरी सन्-२००३

Posted at N. D. PSO on
Dates 5 & 6 & Delhi Postal
Registration No. DL-11185/2003
R. N. 10719/65

ओ३म्

।। जिसके घर में वेद नहीं ◈ वह हिन्दु का गेह नही ।।

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

प र मा त्म देव
की शाश्वत अमर वाणी

चारों वेद
का
सरल, रोचक
हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य १६००/=
अभी लेने पर १२००/=

मंत्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर, ऋषि-देवता आदि विवरण सहित २३ X ३६ सें.मी. साइज में, कुल पृष्ठ २२००, वढ़िया सुनहरी जिल्दें। वजन प्राय: ८ किलो। सुन्दर मुद्रण।

श्रेष्ठ बढ़िया कागज़ पर लागत ३२००/- अभी लेने पर २२५०/-

कृपया आदेश के साथ सम्पूर्ण राशि अग्रिम भेजें।

जो भी है हिन्दु का घर ◈ गूंजे वहीं वेद का स्वर

अधिक विवरण व राशि भेजने के लिए:
दयानंद संस्थान, २२८६ आर्यसमाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५ (भारत) दूरभाष - ५८१५४५७, ५७२४७४१
प्रधान कार्यालय: महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, इब्राहीमपुर, पो मुखमेलपुर, दिल्ली-११००३६ (भारत) दूरभाष - ७२०२२४८

साइबर सेपियन्स ३५१२२२९,३५५१८१८